१९६८
सर्वाधिकार: विश्व विजय प्रा. लिमिटेड

●

एकमात्र वितरक·
दिल्ली बुक कपनी
एम/१२, कनाट सरकस
नई दिल्ली-१

●

मुद्रक व प्रकाशक
राकेशनाथ
विश्व विजय प्रा लि
एम/१२, कनाट सरकस
नई दिल्ली-१

भूमिका

दीवान-ए-ग़ालिब का यह हिंदी रूपांतर काव्य-प्रेमी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है. यह मिर्ज़ा ग़ालिब के उस उर्दू काव्य का संग्रह है, जो अपने अद्वितीय साहित्यिक स्तर, भाषा सौंदर्य और रसपूर्णता के कारण पिछली एक सदी से सुप्रसिद्ध चला आ रहा है. अब तो विदेशों में भी यह खूब सुपरिचित है, और एशिया तथा यूरोप की कई भाषाओं में इस के कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं.

मिर्ज़ा असदुल्लह खां 'ग़ालिब' दिल्ली-निवासी पिछली सदी के पूर्वार्ध के महान उर्दू शायरों में से थे. यदि यह कहा जाए कि वह अपने समय के सब से महान उर्दू काव्य-रचयिता थे तो अतिशयोक्ति न होगी. वह जाति से मुग़ल तथा व्यवसाय से सामंत थे, और 'नवाब दबीरुउलमुल्क' की उपाधि रखते थे दिल्ली के अंतिम मुग़ल बादशाह, बहादुरशाह ज़फ़र के साथ उन के निकट संबंध थे, और वह बादशाह के उस्ताद भी रह चुके थे.

उन की भाषा कुछ अधिक फ़ारसीमय और कठिन अवश्य है, लेकिन उस में कल्पना की जैसी उड़ान व विचारों की जैसी गहराई देखने को मिलती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है. उन की शायरी की तीन मुख्य विशेषताएं हैं: भाषा की परिपूर्णता, विचारों की सूक्ष्मता (जिसे उर्दू में 'नाज़ुकख़याली' कहते हैं.) और अर्थ का विस्मयकारी प्रभाव.

ग़ालिब की शायरी कहींकहीं इतनी गूढ़ है कि टीकाकारों ने उस के प्रायः ही कईकई तरह से अर्थ किए हैं. इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत हिंदी रूपांतर में भी, पहली बार, भावार्थ देने की कुछ ऐसी सर्वग्राही पद्धति अपनाई गई है, जिस से पाठकों को शायर की मनःस्थिति व उस के विचारों की बारीकियों को समझने में यथासाध्य सुविधा हो जाए.

उर्दू में शायरों के दीवान (संग्रह) आम तौर से उन की ग़ज़लों

(शृंगार रस की मुक्तक कविता) के सग्रहो को कहते हैं. इन का सगठन उर्दू फारसी वर्णमाला के अक्षरो के क्रम से होता है, और इस के लिए प्रत्येक गजल की तुक के अतिम अक्षर को ले लिया जाता है, अर्थात, 'अलिफ' पर समाप्त होने वाली तुक से ले कर 'ये' पर समाप्त होने वाली तुक तक, यह आम रिवाज है. अतः इस हिंदी रूपातर में भी इसी क्रम का अनुकरण किया गया है, पर इस सुविधाजनक अतर के साथ कि प्रत्येक गजल के तमाम शेर देकर फिर अत में उन का क्रमानुसार अर्थ करने की बोझिल पद्धति के बजाए एकएक शेर के तुरत बाद साथ ही साथ उसका अर्थ दे दिया गया है. इस से पाठको को इस काव्य-पठन में निश्चय ही भारी सुविधा होगी.

रूपातर में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि उर्दू फारसी शब्दो व वाक्यांशों के शुद्ध उच्चारणो को हिंदी अक्षरो द्वारा यथासभव पूरी तरह व्यक्त किया जाए, इस से यदि पाठक उन अक्षरो का प्रवाह के साथ पूरापूरा उच्चारण करेंगे तो मूल शब्दो की ध्वनि सहज ही प्रस्फुटित होगी. इस आश्वासान के साथ पाठकगण इन शेरों व गजलो को किसी भी समुदाय के बीच निस्सकोच पढ़ कर सुना सकेंगे तथा उन की व्याख्या कर सकेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है

इस सक्षिप्त निवेदन के साथ हम दीवान-ए-गालिब के इस नवीन हिंदी संस्करण को पारखी पाठको के हाथों में रखने का साहस करते हैं. हमारा विनम्र विश्वास है कि यह उन के द्वारा समुचित आदर व सम्मान पाएगा.

—प्रकाशक

नक्श फरियादी ह, किस की शोखी-ए-तहरीर का,
कागज़ी हैं पैरहन,[1] हर पैकर-ए-तस्वीर का

किसी जमाने में ईरान में यह रिवाज था कि अगर किसी फरियादी को वादशाह के दरवार मे फरियाद करनी होती थी, तो वह कागजी वस्त्र पहन कर आता था, और यह इस वात की निशानी होती थी कि वह फरियाद करने आया है. वाज लोगो का खयाल है कि इस शेर का कोई अर्थ नहीं. गालिव ने इस शेर मे इसी रिवाज की तरफ इशारा कर के इस सारी दुनिया को कागजी लिवास पहने हुए फरियादी वताया है और कहा है कि जिस ने इन सव को वनाया है उसी के सामने वे फरियाद कर रहे है, और हर एक शख्स चूकि फरियादी है इसलिए गालिव कहते है कि यह उस ने क्या तमाशा किया है कि एक भी इनसान तो ऐसा नही जो खुश नजर आता हो.

दिल्ली वालो की जवान में कागजी शब्द का अर्थ वोदा तथा कमजोर भी होता है. गालिव फरमाते है कि इस तस्वीर का वस्त्र कागजी है, यानी इनसान का शरीर नश्वर है! जव मनुष्य का शरीर नश्वर है तो इस की हस्ती किस वनाने वाले की फरियाद कर रही है? यानी इनसान खुदा से फरियाद कर रहा है कई टीकाकारो ने इस शेर के वारे में ईरानी रस्म और रिवाज की बात की है जो वहुत दूर

१ लिवास

जा पडती है! 'कागजी' का अर्थ साफ होने से सारा शेर साफ हो जाता है.

जज्ब-ए-बेइख्तियार-ए- शौक देखा चाहिए,
सीन-ए-शमशीर से बाहर है दम शमशीर का

मुझे शहीद होने का इस कदर शौक है कि वह जज्बा मेरे काबू से बाहर हो चला है और मेरे शौक को इस कदर बेताब देख कर मुझे कत्ल करने वाली तलवार भी उसी तरह बेकरार है जैसे उस का दम उस के सीने से बाहर आ निकला हो.

जुज[1] कैस[2] और कोई न आया बरु-ए-कार[3],
सहरा[4], मगर[5] बतनगि-ए-चश्मे हुसूद[6] था.

दुनिया में मजनू के बाद और किसी आशिक को इश्क में जान गवाने पर इतना रुतबा नहीं मिला. जितना मजनू को इस की वजह यह है कि उस का मरण स्थल भी वही था. वह इस तरह का आशिक था कि अपनी मौत के बाद यह नहीं चाहता था कि कोई दूसरा मजनू पैदा हो, क्योंकि सहरा को मजनू से प्रेम है.

आशुफ्तगी[7] ने नक्शे सुवैदा[8] किया दुरुस्त,
जाहिर हुआ कि दाग का सरमाया दूद[9] था

आशिक परेशान रहने लगा और इसी परेशानी तथा बेचैनी में वह सर्द आहे भरने लगा. नतीजा यह हुआ कि आशिक के दिल पर

---

१ सिवा २ मजनू ३ काम आना मुकाबले में आना ४ जंगल, वह जगह जहा मजनू की जान गई थी ५ शायद ६ हसद की तगनजरी ७ परेशानी ८ काला तिल, दिल का काला दाग ९ धुआ

काला दाग पड़ गया. साबित यह हुआ कि आशिक के दिल का दाग धुआ था, परेशानी नहीं! क्योकि धुएं की वजह से ही काला निशान पडा था.

था ख्वाब मे खयाल को तुझ से मुआमला,
जब आख खुल गई न ज़िया[1] था न सूद[2] था

जब हम सपनो की दुनिया में थे तो तुझ से प्यार और मुहब्बत की बाते कर रहे थे और आनदित हो रहे थे. अब जब आंख खुली और मै होश में आया तो न कोई फायदा था न नुकसान यानी न वह प्यार की बाते रहीं और न तुझे ही अपने सामने पाया.

ढापा कफन ने दागे अयूबे बरहनगी,
मै वरनः हर लिबास में नगे वजूद था

मेरी मौत ने मेरे मरने के बाद मेरे गुनाहो पर परदा डाल दिया और इस तरह मुझे बदनाम होने से बचा लिया. वरना मै एक बहुत बुरा इनसान था. बदनाम और पापी था.

कहते हो न देगे हम, दिल अगर पडा पाया,
दिल कहा कि गुम कीजे हम ने मुद्दआ पाया

तुम मुझ से बारबार यह कहते हो कि अगर तुम्हे कहीं मेरा दिल पडा हुआ मिल गया तो तुम उसे मुझे वापस न दोगे. लेकिन मेरा दिल मेरे पास है ही कहां, जो अब गुम होगा? तुम्हारी इस बात से पता चल गया है कि मेरा दिल तुम्हारे ही पास है और तुम उसे रखना चाहते हो. तुम किसी से माग कर लेने का एहसान नहीं उठाना चाहते.

---

१ नुकसान २ फायदा

इश्क से तबीयत ने ज़ीस्त का मज़ा पाया,
दर्द की दवा पाई, दर्द लादवा पाया

हम ने इश्क से ही जिंदगी का असली मजा प्राप्त किया है वरना जब हमें किसी से मुहब्बत नहीं थी तो यह जिंदगी एकदम बेरौनक और बेमजा थी. हमारे जीवन में जो कष्ट और दुख थे इश्क ने उन छुटकारा तो दिला दिया यानी दवा का काम तो किया लेकिन इश्क खुद एक ऐसा रोग है जिस की दुनिया में कोई दवा नहीं है.

दोस्तदार-ए- दुश्मन[1] है, एतमाद-ए- दिल मालूम,
आह बेअसर देखी, नाल नारसा पाया

हमें अब अपने दिल पर कोई भरोसा नहीं रहा, क्योंकि वह हमारे महबूब का दोस्त बन गया है एक हम हैं कि विरह में तडपते रहते हैं और यह जालिम दिल जब से हमारे महबूब का दोस्त बना है, न मेरे नालों में पहला सा असर रह गया है और न मेरी फरियाद में वह तडप रह गई है यानी हमारे रोनेपीटने का हमारे महबूब पर कोई असर नहीं होता

सादगी ओ पुरकारी, बेखुदी ओ हुशियारी,
हुस्न को तगाफुल में, जुर्रत-अज़मा पाया

हुस्न (महबूब) हम से बेरुखी दिखा कर और गफलत बरत कर हमारे हौसले की परीक्षा ले रहा है वह देखने में तो सादा और भोला नजर आता है लेकिन अस्ल में बहुत चालाक और होशियार है और जितना हम से बेखबर नजर आता है उतना ही वह हमारे करीब है.

गुंच फिर लगा खिलने, आज हम ने अपना दिल,
ख़ूं[2] किया हुआ देखा, गुम किया हुआ पाया

---

१ महबूब २ खून

यहा गुचे से मुराद लाले की कली से है. लाले का फूल लाल रंग का होता है. जब बहार के मौसम में लाले की कली फूटती है तो देखने में बिलकुल आदमी के दिल की तरह मालूम होती है. इसी लिए आशिक कहता है कि लाले का फूल जो कल तक गुचा था आज फूल बन कर खिलने लगा क्योंकि बहार का मौसम आ गया है. हम जब बाग में गए तो हम ने दूर से लाले का फूल खिला हुआ देखा. हमें ऐसा लगा जैसे हमारा दिल खून में लथड़ा हुआ है हम ने सोचा कि हमारा दिल जो खो गया था आज हमें मिल गया.

हाले दिल नही मालूम, लेकिन इस कदर यानी,
हम ने बारहा ढूढा, तुम ने बारहा पाया

इश्क पर कोई जोर नहीं चलता. इसलिए हमें अपने दिल का हाल बिलकुल नहीं मालूम कि वह कब गुम हुआ और कैसे हुआ. लेकिन इतना जरूर जानते है कि हम ने बारबार ढूढा और तुम ने उसे बारबार पाया

शोरे पन्दे नासेह[1] ने जख्म पर नमक छिडका,
आप से कोई पूछे, तुम ने क्या मजा पाया

मुहब्बत में हमारा दिल तो पहले ही जख्मी था, तिस पर जनाब नासेह ने आ कर नसीहतो की बौछार कर कर के हमारा जख्म और भी ताजा कर दिया पर कोई हमारे महबूब से पूछे कि हमारे तड़पने से उन्हें क्या मिला.

दिल में, जौके वस्ल यादे-यार तक बाकी नही,
आग इस घर में लगी ऐसी कि जो था जल गया

---

१ उपदेशक

मेरा दिल कुछ इस तरह बरबाद हुआ कि उस में अपने दोस्त से मिलने की तमन्ना और जोश तो क्या उस की याद तक बाकी न रही. यानी मैं उस की जुदाई में दीवाना हो गया और अपने होश व हवास खो बैठा.

दिल नही, तुझ को दिखाता वरनः दागो की बहार,
इस चराग[1] का करू क्या, कारफरमा जल गया.

तू मेरे सीने के दागो को देख कर क्या हैरान हो रहा है? मेरा तो दिल जल चुका है काश मेरा दिल होता तो मैं तुझे अपने दागो की बहार दिखाता क्योकि मेरे दिल के दागो की बहार दिल से थी और वह अब जल कर बुझ चुका है.

बू-ए-गुल नाल-ए दिल, दूदे चरागे महफिल,
जो तेरी बज्म से निकला सो परीशा निकला

सिर्फ मैं ही नहीं बल्कि फूल की खुशबू, दिल की आह और महफिल के चराग का धुआं, जो भी तेरी महफिल से निकला सो परेशान ही निकला. इस शेर के दो अर्थ है. एक यह कि तरी बेरुखी के हाथो तेरी महफिल से सब परेशान हो कर ही निकलते है. दूसरा, जिस ने भी तुझे एक बार देख लिया फिर वह तुझ से जुदा नहीं होना चाहता और जब उसे तेरी महफिल से निकलना ही पड़ता है तो बुरे हालो निकलता है.

थी नौआमोज फना, हिम्मते दुशवार-पसद,
सख्त मुश्किल है कि यह काम भी आसा निकला

अजल से ही मेरी हिम्मत मुश्किल पसद थी. मैं ने मुहब्बत की राह में बडी से बडी दुशवारियो का सामना किया था. मौत की मजिल

---

१ रोशनी, दीपमाला

सब से सख्त मंजिल होती है लेकिन मेरा हौसला उसे भी पार कर गया जैसे मौत कोई बच्चों का खेल हो. मेरे लिए अब सब से बड़ी मुश्किल यह है कि जिस काम को मैंने मुश्किल समझ कर शुरू किया था वह भी आसान निकल गया और मेरी मुश्किल-पसंद हिम्मत की तसल्ली न हो सकी.

दिल में फ़िर गिरियः ने इक शोर उठाया 'गालिब',
आह जो कतर न निकला था, सो तूफ़ा निकला

मैं पहले भी कई बार रो चुका था, लेकिन उस वक्त मेरी आखों में इतने आसू न आए थे लेकिन ऐ गालिब, अब दिल में कुछ इस जोर का दर्द उठा कि मेरी आख का एकएक कतरा मिस्ले तूफान निकला.

था दिंजगी मे मौत का खटका लगा हुआ,
उडने से पहले भी तो मेरा रग जर्द था

लोग कहते है कि मौत के डर की वजह से 'गालिब' के चेहरे का रग पीला पड गया था शायद वह भूल गए कि मेरे चेहरे का रग उड़ने से पहले भी पीला ही था

तालीफ-ए-नुस्खाहा-ए-वफा कर रहा था मै,
मजमूअ-ए-खयाल अभी फर्दफर्द था

जब मैने मुहब्बत के मैदान में नयानया ही कदम रक्खा था उस वक्त भी वफा में मेरा दर्जा इतना बडा था कि मै सब को सबक सिखा सकता था.

जाती है कोई कशमकश अदोहे इश्क की,
दिल भी अगर गया, तो वही दिल का दर्द था

भला मुहब्बत की खलिश कभी दिल से जा सकती है? दिल के चले जाने पर भी दिल का दर्द ज्‌ का त्‌ बना रहता है, हालाकि दिल के साथ

उसे भी चला जाना चाहिए. पर दिल का जाना ही एक दर्द है.

अह्वाव चारः साज़ि-ए- वह्शत न कर सके,
ज़िंदा मे भी ख़याले-वयावा-नवर्द था

प्रेम के उन्माद का इलाज भला किस से हो सका. दोस्तो ने तो मुझे इसलिए कैद में बंद कर दिया कि मेरे पागलपन का कुछ इलाज हो सकेगा लेकिन मेरे खयालात तो कैदखाने में भी जगलो की सैर कर रहे थे.

यह लाशे वे कफन, असद-ए- ख़स्तः जा की है,
ह्क मगफरत करे, अजव आज़ाद मर्द था

गालिव का नाम असदउल्ला खां था. इसलिए कभीकभी वह उपनाम में 'गालिव' की जगह 'असद' भी लिखते थे इस शेर में वह कहते है कि भई, यह लाश जो वे-गोरो कफन पडी है नीमजा असद की है. खुदा उसे वख्श दे वहुत ही आजाद मनुष्य था. उस ने इतनी पावदी गवारा न की कि लाश पर कफन डाल दिया जाता

दह्र में नक्शे-वफा वज्हे तसल्ली न हुआ,
यह वह लफ्ज़ कि शर्मिद'-ए-म'अनी न हुआ

दुनिया में किसी भी प्रेमी के साथ असली भलाई में वफा नहीं हुई और न ही उस को इस शब्द से तसल्ली ही हुई. अगर कभी कोई वफा का मतलव निकालता तो शायद इस लफ्ज को भी शर्म आ जाती कि इस का जो असली मतलव है उस में वह वात ही नहीं है. लेकिन इस का मतलव किसी ने समझा ही नहीं, यानी वफा एक वेमानी लफ्ज है

मैं ने चाहा था कि अन्दोहे वफा से छूट,
वह सितमगर मेरे मरने पे भी राजी न हुआ

मैं ने तो चाहा था कि मैं मर जाऊं और वफा की इस परेशानी से छुटकारा पा जाऊं लेकिन वह जालिम इस पर भी राजी नहीं हुआ. इस शेर में एक खास पहलू यह है कि 'गालिब' अपने आप को इस क़दर वफादार कहते हैं कि दोस्त की मरजी के बगैर मरना भी मंजूर नहीं करते

किस से महरूमि-ए-किस्मत की शिकायत कीजे,
हम ने चाहा था कि मर जाएं सो वह भी न हुआ

हम अपनी किस्मत की महरूमी की शिकायत किस से करें. हम ने चाहा था कि हम मर जाएं और इस तरह तमाम मुसीबतों से छुटकारा पा जाएं, पर हमारी यह भी ख्वाहिश पूरी न हुई.

मिरी तामीर में मुज्मिर है इक सूरत खराबी की,
हयूला बर्क़े खिरमन का है खूने-गर्म दहका का

यह शेर गालिब के उन शेरों में से एक है जिस से गालिब सही मआनों में गालिब बने कहते हैं : मेरी हरहर तामीर में खराबी की एक सूरत छिपी हुई है. जिस तरह कि एक किसान दिन भर कड़ी मेहनत से खेत में काम करता है खेत और पैदावार को बढ़ाने के लिए जान लगा देता है, लेकिन वही उस के लिए नुकसान का बाइस होता है आसमान में जा कर बादल बनता है और फिर बादल से बिजली बन कर उस के खलियान को जला डालता है. इस तरह सारा बना बनाया खेल बिगड़ जाता है.

खमोशी में निहां, खूंगश्ता. लाखों आरजूएं हैं,
चरागे मुर्दा हूं मैं, बेज़बां, गोरे-गरीबां का

किसी को क्या मालूम कि मेरी खामोशी में कितनी आरजूएं छिपी हुई हैं और उन का खून हो रहा है. बस यूं समझिए कि मैं उस चिराग की तरह हूं जो एक गरीब की कब्र पर बड़ी खामोशी के साथ जलता

रहता है और हजारो आरजूए उस में छिपी रहती है पर जबान से कह कुछ नहीं सकता.

वगल मे गैर की, आज आप सोते है कही, वरना,
सवव क्या ख्वाब मे आ कर तबस्सुमहाए पिन्हा का

यह शेर अदव की दृष्टि से बहुत ऊचा नहीं है. गालिब अपने महबूब से कहते है कि आज आप जरूर किसी गैर की बगल मे सोए है वर्ना मेरे ख्वाब में आ कर यो छिपछिप कर मुसकराने का क्या मतलब है?

नही मालूम, किसकिस का लहू पानी हुआ होगा,
कयामत है सरश्क आलूद होना तेरी मिज़गा का

ऐ महबूब तुझे क्या मालूम कि तेरी पुरनम आखो ने कयामत वरपा कर रखी है. वह लोग जिन के दिल पत्थर की तरह सख्त है वह भी तेरी आखो में आसू देख कर ताव न ला सके और जारजार रो पडे.

नज़र में है हमारी जाद-ए-राहे फना 'गालिव',
कि यह शीराज़. है आलम के अज्ज़ा-ए-परीशा का

वरवादी का रास्ता हर वक्त हमारी नजरों के सामने है क्योकि हम उन तत्वो से बने है जो ससार में चारो ओर पडे है और एक दिन नष्ट हो जाएगे

महरम नही है तू ही नवाहाए-राज़ का,
या वरन जो हिजाव है, पर्दा है साज़ का

यह शेर हकीकी शेर है—ऐ गालिव, ये तेरा कुसूर है कि तू अल्लाह की हकीकत को नहीं पहचानता वरना उस ईश्वर के होने का सुबूत संसार की एकएक चीज से जाहिर होता है काश तुझ में इतनी समझ होती कि तू भी सच्चाई को पहचान सकता! तेरी मिसाल उस अजान आदमी की तरह है जो यह नहीं जानता कि सितार के तार से आवाज कैसे निकाली

जाती है, पर एक जानकार उस के एकएक तार से सैकडो आवाजें निकाल लेता है जो उस में छिपी हुई है.

रगे शिकस्त. सुवहे वहारे नजारः है,
यह वक्त है शिगुफ्तने गुलहाए नाज का

इस शेर के वारे में कई राए दी गई है और जितने लोगो ने इस शेर का मतलव वयान किया है, उस में से एक का मतलव दूसरे से नही मिलता. इस शेर में लोगो ने दर्शन भी ढूढ़ा और अशलीलता भी. शब्दो से जो कुछ मतलव निकलता है वह यह है: ऐ महबूब तू मेरे चेहरे के उड़े हुए रंग को देख इसे देखने में तुझे मजा आएगा, और तेरा चेहरा नाजुक सुदर फूलो की तरह नाज से और भी खिल जाएगा. इस शेर में शब्दजाल ज्यादा है और मतलब कम

न होगा यक वयावा मादगी से ज़ौक कम मेरा,
हुवावे मौज-ए-रफतार है नकशे कदम मेरा

मेरा शौक इतने कमजोर किस्म का नहीं है कि तेरी तलाश में निकल कर केवल एक ही जगल को तै कर के थक जाए. जिस तरह नदी में मौज आती है तो सैकड़ो बुलबुले पैदा हो जाते है, उसी तरह मुझ में मुहब्वत के जुनून की बाढ आई है और मै भी तेरी तलाश में आगे ही वढता जाऊगा.

मुहव्वत थी चमन से, लेकिन अब यह बेदमागी है,
कि मौजे वू-ए-गुल से नाक में आता है दम मेरा

एक जमाना वह भी था जब मुझे चमन से मुहब्बत थी, और मै फूलो और गुलदस्तो पर जान देता था लेकिन अब उस से जी कुछ ऐसा बेजार हो गया है कि फूल तो क्या उस की सुगध से भी मेरा दम घुटने लगता है.

सरापा रेहने इश्क-ओ-नागुजीरे उल्फते हस्ती,
इबादत बर्क की करता हू और अफसोस हासिल का

इस शेर में गालिब दो ऐसी चीजो की उपमा देते हैं जो एक दूसरे की जिद हैं. लेकिन ऐसी खूबी से अपना मतलब बयान कर गए हैं कि दिल से बेसाख्ता दाद निकल जाती है. फरमाते है, मै सर से पैर तक मुहब्बत में डूबा हू लेकिन, जिन्दगी से प्यार करने पर मजबूर हू दूसरे मिसरे में इसी बात की दलील पेश करते है मैं बिजली की तो पूजा करता हूं और फिर सब कुछ जल जाने का अफसोस भी करता हू यानी मिर्जा गालिब ने मुहब्बत को बिजली कहा है और यही बिजली उन की जिंदगी को जला देती है

बकदरे जर्फ है साकी खुमारे तिशन कामी भी,
जो तू दरिया ए-मै है, तो हू मैं खमियाज़ साहिल का

ऐ साकी, पीने की ख्वाहिश भी इनसान के हौसले और बिसात के अनुसार होती है. अगर तू शराब का दरिया है तो मैं भी वह साहिल हूं जो दरिया को अपने अदर समो लेता है, चूंकि दरिया हर वक्त साहिल से टकराता रहता है इसलिए मैं वह पीने वाला हू जिस की प्यास कभी नहीं बुझ सकती उर्दू जबान में जियादा शराब पीने वाले को दरियानोश कहते हैं. इस शेर में 'गालिब' अपने आप को दरियानोश साबित कर रहे हैं.

तू और सू-ए गैर नजरहा ए-तेज़ तेज,
मैं और दुख तिरी मिज़ हा-ए दराज़ का

ऐ मेरे महबूब, यह क्या कयामत है कि तू गैर को तरफ मुहब्बत भरी नजरो से देख रहा है और उस का दिल मुहब्बत से गरमा रहा है मुझे यह दुख है कि तेरी दिल में उतर जाने वाली पलकें किसे देख रही हैं ! यह सोच कर मेरा मन ईर्ष्या से भर

जाता है.

> ताराजे काविशे गमे हिजरा हुआ, 'असद,'
> सीन· कि था दफीनः, गुहरहा-ए-राज का.

मेरा सीना सच्चाई रूपी हीरो का खजाना था. इस में राज के सैकडो हीरे और जवाहरात दफन थे. लेकिन अफसोस कि महबूब की जुदाई के सदमें न यह खजाना हम से छीन लिया, अगर यह मुहब्बत का ग़म मुझे तबाह न कर देता तो में अपने सीने में सच्चाई के सैंकड़ो राज छुपाए रहता.

> वज्मे शाहनशाह मे अशआर का दफ्तर खुला,
> रखियो यारब यह दरे-गजीन.-ए-गौहर खुला

यह शेर 'ग़ालिब' ने हिंदुस्तान के आख़िरी बादशाह बहादुरशाह जफ़र के दरबार के बारे में कहा है, फरमाते हैं : शहनशाह की महफ़िल में शेरो का दफ्तर खुल गया है. यानी शायरो की इज्जत होनें लगी है. यारब, यह सदाबहार दरवाजा हमेशा हमेशा खुला रहे ! चूकि जिस की पहुच दरबार में होती थी उसे हीरे जवाहरात और इनाम मिलते थे इसलिए बादशाह के दरबार को हीरो के खजाने का दरवाजा कहा गया है.

> शब हुई, फिर अजुमे रख्शिंद· का मजर खुला,
> इस तकल्लुफ से, कि गोया बुतकदे का दर खुला

रात के बारे में उर्दू में ऐसे बहुत ही कम शेर है जिन में गम और जुदाई का चर्चा न किया गया हो लेकिन 'गालिब' ने इस शेर में रात का नया ही पहलू निकाला है. फरमाते हैं· रात हो गई है और चमकदार सितारों का नजारा यो आंखो के सामने खुला है जैसे किसी बुतखाने का दरवाजा खुल गया हो और सैकडो शोख़ हसीन अपना अपना हुस्न और जलवा दिखा रहे है

गरचे हू दीवानः, पर क्यो दोस्त का खाऊ फरेब,
आस्ती में दश्न. पिन्हा, हाथ में नश्तर खुला

मैं चाहे दीवाना हूं लेकिन इतना बेसुध नहीं हू कि दोस्त का फरेब खा जाऊ. मतलब यह है कि दोस्त और दुशमन में पहचान कर सकता हू यह झूठे दोस्त हाथ में तो नश्तर (वह उस्तरा जिस से जर्राह वगैरा चीरफाड़ कर के आराम पहुचाते हैं) रखते है और कहते हैं कि ऐ 'गालिब' आ हम तेरे जख्मो को ठीक कर दें लेकिन अपनी आस्तीनो में उन लोगो ने छुरिया छिपा रखी है और मुझे जान से मारने का इरादा रखते है.

गो न समझू उस की बाते, गो न पाऊ उस का भेद,
पर यह क्या कम है, कि मुझ से वह परी पैकर खुला

दूसरे मिसरे में खुला का मतलब है वेतकल्लुफ होना. जैसे हम बातो बातो में कह देते है कि वह शख्स हम से बहुत खुल गया है. यह शेर बहुत ही आसान है, फरमाते है, मैं चाहे उस की बातें नहीं भी समझता और उस के दिल का भेद नहीं पा सकता, लेकिन मेरे लिए यही क्या कम खुशी की बात है कि इतना खूबसूरत महबूब मुझ से हिलमिल गया है?

है खयाले हुस्न में, हुस्ने अमल का सा खयाल,
खुल्द में इक दर है, मेरी गोर के अदर खुला

मिर्जा गालिव फरमाते हैं कि मैं मर गया हू और कब्र में दफना दिया गया हूं. लेकिन मुझे तो कब्र में भी उसी का खयाल और जलवा नजर आ रहा है. उस के खयाल ने कब्र में भी स्वर्ग का समा बाध दिया है यानी मेरे लिए कब्र के अदर ही स्वर्ग का दरवाजा खुल गया है हुस्ने अमल से मतलब है अच्छे और नेक काम और खयाले हुस्न–महबूब का खयाल. इसलिए 'गालिब' कहते है कि चूकि अच्छे और नेक काम करने से जन्नत नसीब होती है और मैं ने अपने महबूब ही के

खयाल से जन्नत का नजारा कर लिया है, इसलिए खयाले हुस्न में हुस्ने अमल का सा खयाल है.

मुह न खुलने पर वह आलम है कि देखा ही नही,
जुल्फ से वढ कर नकाव उस शोख के मुह पर खिला

शेर वेहद सरल और लाजवाव है. 'गालिव' कहते है कि जव उस शोख के मुह पर जुल्फें विखर जाती थीं तो उस का हुस्न देखते वनता था लेकिन आज काली नकाव ने जो उस हसीन और गोरे चेहरे पर गजव ढाया है उस का वयान नही किया जा सकता देखा ही नहीं में जो जवान की लताफत है उसे शब्दो में नही वताया जा सकता. दूसरे शब्दो मे यह मतलव हुआ कि उस शोख के चेहरे का आकर्षण और हुस्न वेपनाह है जो नकाव के अन्दर से भी चमकता है.

दर पे रहने को कहा और कह के कैसा फिर गया,
जितने अरसे मे मेरा लिपटा हुआ विस्तर खुला

यह शेर भी 'गालिव' की शोखमिजाजी का एक उत्तम नमूना है. कहते है कि मेरे महवूव ने मुझ से फरमाया कि हम तुम्हारे दरवाजे पर खडे है. इतना सुनते ही मैं ने उस को विठाने की खातिर अभी अपना लिपटा हुआ बिस्तर खोला ही था कि उस ने वैठने से इनकार कर दिया और चला गया.

दूसरा मतलव इस शेर का यह भी है. 'गालिव' कहते है कि मैं अपने प्यारे महवूव के घर उस से मिलने गया. लौटते समय मुझे वहां देर हो गई. मै ने उस से कहा कि अगर तुम कहो तो आज रात यहीं रह जाऊ उस ने खुशीखुशी इजाजत दे दी. अभी मैं ने अपना विस्तर खोला ही था कि लेहू कि वह अपने वादे से मुकर गया.

क्यो अधेरी है शवे गम, है वलाओ का नुजूल,
आज उधर ही को रहेगा दीद:-ए-अखतर खला

'गालिब' का यह शेर बहुत अच्छा है. फरमाते है कि रात इतनी अंधेरी इसलिए है कि आसमान से मेरे लिए बेहिसाब बलाए और मुसीबतें उतर रही है जिस से सितारे मुझे दिखाई ही नहीं पड रहे है. इस पर क़यामत यह है कि यह बलाए सारी रात उतरती रहेंगी और हम सारी रात सितारो की ओर आख फाड़फाड कर देखते रहेंगे पर हम उन्हें देख न पाएंगे.

क्या रहू गुरबत में खुश, जब हो हवादिस का यह हाल,
नामः लाता है वतन से नामवर, अक्सर खुला.

मैं अपनी ग़रीबी के कारण देस छोड़ कर परदेस आ बसा लेकिन यहा भी क्या खाक खुश रहू ? मुसीबतें तो मेरा साया छोडती ही नहीं. देस से जो भी ख़त आता है वह खुला ही आता है. खुला आने का अर्थ है मौत की खबर आना.

वा, खुदआराई को था मोती पिरोने का ख़याल,
या, हुजूमे अश्क में तारे-नगह नायाब था

वहा तो मेरी प्रेमिका को अपने बनने सवरने और अपने जूडे में अपनी नुमाइश का खयाल था. और यहां बेक़रारी का यह हाल था कि आसुओ की झडी लगी हुई थी और आख से कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था.

जल्व-ए-गुल ने किया था वा चरागा आबजू,
या, रवा मिजगाने चश्मे तर से ख़ूने नाब था

उन्हो ने तो अपने आप को रगबिरंगे फूलो से सजा रखा था और नदी में वह अपने हुस्न का प्रतिबिंब देखते तो पानी की यह दशा हो जाती मानो नदी में हजारो दीप जल उठे हो और यहां हमारी आंखो से खून के आसू रवा थे. फूल चराग़ और खून इन तीनो शब्दो को शेर में बडी खूबी से बाधा गया है

या नफस करता था रौशन शम-अ-बज़्मे बेखुदी,
जलव.-ए-गुल वा बिसाते-सोहबते अहबाब था.

यहां तो हमारी हर सास हमारी बेखुदी की महफिल को रोशन किए हुए थी और वहा मेरा महबूब फूलो की सेज पर लेटा हुआ दोस्तो का दिल बहला रहा था.

फर्श से ता अर्श, वा तूफा था मौजे रग का,
या जमी से आसमा तक सोख्तन का बाब था

तूफा था मौजे रंग का, यानी रग ही रग था. खुशिया मनाई जा रही थीं सोख्तन का मतलब होता है जल जाना. कहते है कि जहा मेरा महबूब था वहा तो जमीन से ले कर आकाश तक खुशियो का तूफान था और यहां मेरे पास जमीन से आकाश तक सब कुछ जला हुआ था. मतलब यह है कि महबूब तो रगरलिया मना रहा था और हम इसे देखदेख कर हसद की आग में जल रहे थे. इस सादा ग़ज़ल में मिर्जा ग़ालिब इसी तरह के विषय निभा रहे है लेकिन इस गजल में इस शेर के बाद का जो शेर है वह बाकी ग़ज़ल के रग से हट कर है.

नागहा, इस रग से खूनाब टपका ने लगा,
दिल कि ज़ौके काविशे नाखुन मे लज़्ज़तयाब था

कहते है कि जब मैं ने अचानक यह देखा कि मेरा दिल जो कि अदब्बत के नाखूनो से कुरेदा जा रहा है मजा ले रहा है. और मेरा महबूब खुश और मस्त है तो मेरा दिल शर्म से खून के आसू रोने लगा. गालिब ने जो हालत स्वय अपनी आंखो से देखी उसी को शेरो में बयान कर दिया. यह शेर कहने के बाद मिर्जा गालिब फिर उसी भूमिका में कहते है

नाल.[1]-ए-दिल मे शब, अदाज़े असर नायाब था,
था सिपदे बज़्मे वस्ले गैर, गो बेताब था

---

१ आह और फरियाद

दिगा—२

सिपंद उस काले से दाने को कहते हैं जिस को जला कर नज़र बचाने का काम लिया जाता था. इस शेर का यह मतलब है कि कल रात हमारे दिल ने जो आह और फरियाद की उस में बिलकुल कोई असर नहीं था. हमारी आहें अपने महबूब तक पहुचने के लिए बहुत बेताब थीं और वह जल कर अपने महबूब को किसी और शख्स की बुरी नजर से बचा रही थीं

कुछ न की, अपने जुनूने नारसा ने, वर्न या,
ज़र्रः ज़र्रं रूकशे ख़ुरशीदे आलम ताब था

कहते हैं कि दुनिया का कणकण उस के जलवो से रोशन था लेकिन चूकि हमारे जुनून की कहीं पहुच न थी इसलिए हम उस के जलवो से अपने आप को रोशन न कर सके.

आज क्यो परवा नही अपने असीरो की तुझे,
कल तलक तेरा भी दिल मेहरा-ओ-वफा का बाब था

कहते हैं जो लोग तेरी मुहब्बत में फसे हुए हैं, आज तुझे क्यो उन की परवा नही, जब कि कल तक तेरे दिल में उन के लिए प्रेम ही प्रेम था

याद कर वह दिन, कि हर इक हल्क तेरे दाम का,
इतज़ारे सैद मे, इक दीद-ए-बेख्वाब था

ऊपर वाले शेर में जो कुछ बयान किया गया है, यह शेर उस की एक कडी है 'ग़ालिब' कहते हैं कि ऐ दोस्त, वह दिन याद कर कि जब तू हमें अपनी मुहब्बत में गिरफतार करने के लिए इतना बेचैन था कि तेरे जाल का हर हलका अपने शिकार के इतजार में एक खुली हुई आख की तरह था

मैं ने रोका रात गालिब को, वगर्न.[1] देखते,
उस के सैले गिरियः मे, गर्दू कफे सैलाब था.

कहते है कल रात मै ने 'गालिब' को रोने से रोक लिया वरना देखते कि उस के आसुओ में आकाश भी वह जाता. यानी कल रात हमें तेरी जुदाई का सख्त दुख था लेकिन हम ने वहुत सहन किया.

एक एक कतरे का मुझे देना पडा हिसाब,
खूने जिगर वदीअते[2] मिजगाने यार[3] था.

यह शेर वहुत ही आसान और साफ है. कहते है कि मेरे जिगर के लहू का एकएक कतरा मेरे महवूव की लंबी लबी पलको की अमानत था, जिन्होंने मेरे जिगर को छलनी कर रखा था. इसलिए मुझे अपने लहू के एकएक कतरे का अपने महवूव की पलको को हिसाव देना पडा. इस में एक वहुत ही लतीफ मतलव यह है कि मैं ने अपने महबूब के सामने खून के आसू रोए.

अव मैं हू और मातमे यक शहरे आरजू,
तोडा जो तू ने आईन, तिमसालदार[4] था

ऐ महबूब जिस दर्पन में तुझे अपना प्रतिबिंब देख कर गुस्सा आ गया था कि तुझ जैसा सुन्दर और कौन पैदा हो गया है और तू ने गुस्से में आ कर उसे चूरचूर कर दिया लेकिन तुझे क्या मालूम कि उस शीशे के एकएक टुकड़े में तेरा अक्स पैदा हो गया और उस दर्पण के टटने से मेरे दिल पर जो आरजुओ का शहर आबाद था वह भी चूरचूर हो गया अव मैं उसी का मातम कर रहा हूं.

---

१ पुरानी जबान मे वर्ना को कहते थे आज कल इस तरह इस शब्द का प्रयोग नही किया जाता २ अमानत ३ दोस्त की पलके ४ जिस में प्रतिबिंब आए

गलियो मे मेरी न'अश को खीचे फिरो, कि मैं,
जा दादः-ए-हवा-ए-सरे रहगुज़ार था.

कहते हैं कि मैं उम्र भर अपने महबूब की तलाश में दरदर भटकता रहा और गलियो की खाक छानता फिरा. लेकिन उस के कूचे का कहीं पता न चल सका. अब मैं मर गया हू पर ऐ मित्रो मुझे दफनाने के बजाय मेरी लाश को गलीगली खींचते फिरो ताकि मैं जीते जी नहीं तो शायद मर कर ही उस के कूचे में पहुच जाऊ.

मौजे सराबे[1] दश्ते बफा का न पूछ हाल,
हर जर्रः मिस्ले जौहरे तेग आबदार था.

आम जंगल के इस धोखे का हाल न पूछो. यहा का हर जर्र. एक चमकीली तलवार की धार की तरह चमकता है और जान से मार देता है.

कम जानते थे हम भी गमे इश्क को, पर अब,
देखा तो कम हुए पै, गमे रोजगार था

'ग़ालिब' कहते हैं कि हम मुहब्बत के ग़म को उस की असलियत से हमेशा कम ही समझते थे. लेकिन अब जो प्रेम का कुटन वास्तव में कम हुआ है तो पता चला है कि इतना ग़म तो जिन्दा रहने की मुश्किलो ही का था ? यानी मुहब्बत का ग़म चाहे घट गया लेकिन अब भी जिन्दगी के ग़म के बराबर है.

बस कि दुश्वार है, हर काम का आसा होना,
आदमी को भी मुयस्सर नही, इनसा होना

---

१ दूर रेगिस्तान में चमकती हुई रेत जिसे देख कर पानी का धोका होता है.

मिर्जा 'गालिब' ने इस शेर में बहुत ही आसान शब्दो में एक बहुत ही बडी बात कह दी है. कहते है कि हर काम का आसान होना बहुत मुश्किल है. इस का सबूत यह है कि आदमी देखने में तो आदमी ही नजर आता है, पर सच्चे अर्थों में आदमी बनना बहुत मुश्किल है.

गिरियः चाहे है खरावी मेरे काशाने की,
दरोदीवार से टपके है, वयावा होना

फरमाते है कि मेरा रोना अब मेरे घर की बरबादी चाहता है इस लिए कि मेरे घर की दीवारो और दरवाजो को देखने से जगल का गुमान होता है यानी वह सब बेरौनक और वीरान हो गए है और मेरे दिल में खानाखरावी की तमन्ना ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया है.

वाय दीवानगि-ए-शौक, कि हरदम मुझ को,
आप जाना उधर, और आप ही हैरा होना

बहुत आसान शेर है. कहते है कोई मेरा शौके बेपनाह तो देख कि मैं स्वय अपने महबूब के कूचे में जाता हू और आप ही अपने जाने पर पशेमान हो कर लौट आता हूं क्योकि उस के दिल में मेरी कोई कदर और मुहब्बत नहीं है

जलव अज़ बस कि तकाज़ा-ए-निगह करता है,
जौहरे आईन. भी, चाहे है मिज़गा होना

कहते है कि हुस्न के जलवे की यह माग होती है कि मुझे कोई देखे इसलिए आइना भी आंख बन कर रह गया है और उन्हें देख रहा है.

अिश्रते कत्लगहे अहले तमन्ना मत पूछ,
औीद नज्ज़ार , है शमशीर का अुरिया होना.

तेरी मुहब्बत के मारे हुए आज बेहद खुश है क्योकि तू ने उन्हे कत्ल

करने के लिए जो तलवार खींची है वह ईद का चाद समझ रहे है ईद के चांद को देख कर तलवार को भी देखा जाता है. बाज मुस्लिम देशो के झंडो में ईद के चांद के साथ तलवार भी बनी होती है.

ले गए खाक मे हम, दागे तमन्ना-ए-निशात,
तू हो, और आप बसद रगे गुलिस्ता होना

फरमाते है कि ऐ दोस्त, ले अब तू जिस अंदाज से चाहे जिस रग में चाहे खुशियां मना हम तो अपनी खुशियो की तमन्ना के दाग को अपने साथ लेकर मिट्टी में मिल गए है.

अिश्रते पार-ए-दिल, जख्मे तमन्ना खाना,
लज्जते रीशे जिगर, गर्के नमकदा होना

शब्दो का रख रखाओ और उन शब्दो से जो मतलब पैदा हो गया है, उस दृष्टि से यह शेर बहुत ही सुन्दर है. फरमाते है कि दिल के हर टुकडे की यही इच्छा है और यही खुशी है कि उस पर हर वक्त तमन्नाओ के जख्म लगते रहे और उन जख्मो को इस बात में मजा मिलता है कि उन पर हर वक्त नमक छिडका जाए.

की मेरे कत्ल के बाद, उस ने जफा से तौब.,
हाय, उस जूद पशेमा का पशेमा होना

फरमाते है पहले तो मेरे महबूब ने मुझे कत्ल कर डाला और फिर उस के बाद उस ने तौबा की कि अब कभी जुल्म न ढाएगा हाय अफसोस उस शोख को भी कितनी जल्दी शर्म आई यानी मुझे कत्ल करने से पहले नहीं बल्कि कत्ल करने के बाद. यह शेर चुटीला और व्यग्यपूर्ण है.

हैफ, उस चार गिरह कपडे की किस्मत, 'गालिब'
जिस की किस्मत मे हो, आशिक का गरेबा होना.

मिर्जा गालिब की यह गजल उन की अमर गजलो में से एक है इस

का हर शेर अद्वितीय है. और खास कर यह शर और उस से ऊपर वाला शेर तो इतने मशहूर हुए है कि लोग इन्हे मुहावरे के तौर पर प्रयोग करते है 'गालिब' इस शेर में फरमाते है कि उस चार गिरह कपडे की किस्मत पर अफसोस होता है जिस को किसी आशिक का गरेबा बनना पड़ा. जुदाई की अवस्था में प्रेमी ग़म के मारे उस के टुकडे टुकड़े कर देगा और अगर कहीं भूलेभटके प्रेमी को उस का महबूब मिल जाए तो भी वह ख़ुशी के मारे उसे फाड देगा.

मानि'अ-ए-वहशत ख़रामीह:-ए-लैला कौन है,
खान:-ए-मजनूने सहरा गर्द बे दरवाज़: था

मिर्जा 'गालिब' फरमाते है कि लैला को बिना रोकटोक घूमनेफिरने और मजनूं से मिलने से कौन रोक सकता है, क्योकि मजनूं का घर तो रेगिस्तान है और रेगिस्तान का कोई दरवाजा नहीं होता.

दोस्त गमख़्वारी मे मेरी, सअि फरमाएगे क्या,
ज़ख़्म के भरने तलक, नाख़ुन न बढ आएगे क्या?

मिर्जा 'ग़ालिब' की यह गजल जितनी अच्छी है उतनी ही आसान भी है. इसीलिए मशहूर भी बहुत है. फरमाते है कि मेरे दोस्त मेरे जख्मो को अच्छा करने में मेरी क्या मदद कर सकते है, क्योकि जब तक मेरे जख्म भरेंगे, तब तक उन्हे कुरेदने के लिए नाखून भी तो बढ़ जाएगे! मतलब यह कि मेरे दिल पर मुहब्बत के जो जख्म लगे है वह कभी नहीं भर सकते और मेरे बाकी दोस्त मुफ्त में आ कर मुझे जियादा परेशान न करे. क्योकि उसे मै अगर जरा सा भूलता हू तो वह और याद आता है.

बेनियाज़ी हद से गुज़री, बद परवर कब तलक,
हम कहेंगे हाले दिल और आप फरमाएगे क्या?

फरमाते है कि ऐ महबूब तेरी यह उपेक्षा तो सीमा पार कर

गई. हम कहा तक तुझ से अपने दिल का हाल कहते रहें. तू तो मेरी हर बात पर यही कहता है कि हा क्या कहा फिर से कहना. जैसे मैं ने जो कुछ कहा है, वह तू ने सुना ही न हो.

हज़रते नासेह गर आए दीदः ओ दिल फर्शेराह,
कोई मुझ को यह तो वतला दो कि समझाएगे क्या?

मिर्जा 'गालिब' कहते हैं कि ठीक है शेख साहब तशरीफ ला रहे हैं तो हमारे सिर आखो पर. लेकिन, कोई हमें यह तो बता दो कि वह आखिर हमें समझाएगे क्या ? इस आखिर के 'क्या' में जो व्यग्य है, उस का जवाब नहीं गालिब कहते हैं कि आखिर वह यही तो कहेंगे न कि हम उसे भुला दें उस के लिए अपने आप को बरबाद न करें. मुहब्बत पागलपन है. लेकिन उन का यह समझाना बेकार है ! हम उस की मुहब्बत में इस कदर खोए हुए हैं कि हम पर यह बातें असर ही नहीं कर सकतीं.

आज वा तेग ओ कफन बाधे हुए जाता हूं मैं,
अुज्र मेरे कत्ल करने में वह अव लाएंगे क्या?

आज तक तो मेरे महबूब ने मुझे किसी न किसी वहाने कत्ल करने से यह कह कर इनकार कर दिया था कि आज मेरे पास तलवार नहीं है यह नहीं है, वह नहीं है. लेकिन आज एक तो मैं सिर पर कफन बाध कर जा रहा हूं और दूसरे अपने साथ तलवार भी लिए जा रहा हू. ताकि वह मेरे कत्ल करने में कोई वहाना ही पेश न कर सके. मतलब यह कि हम उस की मुहब्बत में अव ज्यादा देर तक यो बेताब रह कर नहीं जी सकते आज उसे हमारी किस्मत का फैसला करना ही होगा.

गर किया नासेह ने हम को कैद, अच्छा, यू सही,
ये जुनूने इश्क के अदाज़ छुट जाएगे क्या?

अच्छा शेख साहब ने हमें इसलिए कैद किया है ताकि हम अपने

प्यारे महबूब के कूचे तक न पहुच सकें और यू धीरे धीरे उसे भूल जाए. लेकिन मिया नासेह को शायद यह नहीं मालूम कि मेरे कैद होने से मेरा इश्क का जुनून नही दूर होगा. और मैं वहां भी महबूब की याद में अपना गरेबान चाक कर डालूंगा इस शेर में भाषा की मधुरता भी खूब है पहले मिसरे में 'कैद' और दूसरे में 'छुट जाना' बडी खूबी से प्रयोग किए गए है.

खानः ज़ादे ज़ुल्फ है जजीर से भागेंगे क्यो,
है गिरिफ्तारे वफा, जिंदा से घबराएगे क्या?

फरमाते है कि हम ने तो उसकी ज़ुल्फो से पहले ही अपने हाथो को बाध रखा है, भला हम जजीर देख कर क्या डरेंगे ? हम तो वफ़ा के हाथो गिरिफ़्तार है, कैद खानें से क्या घबराएगे ?

है अब इस मामूर[1] मे कहते गमे उलफत, 'असद'
हम ने यह माना कि दिल्ली में रहे, खाएगे क्या?

'गालिब' फ़रमाते है कि अब इस शहर में मुहब्बत के ग़म का ही कहेत पड़ गया है और मुहब्बत का गम ही हमारी ख़ूराक है. इसलिए अब हमारा दिल्ली में रहना बेकार है क्योकि हमें मुहब्बत का ग़म खाने को नहीं मिलेगा. मतलब यह है कि अब जमाने से वफ़ा और मुहब्बत उठ चुकी है. और वफा के बदे किस तरह इस माहौल में जिएंगे ?

यह न थी हमारी किस्मत, जो विसाले यार होता,
अगर और जीते रहते, यही इंतजार होता

'ग़ालिब' की यह ग़ज़ल तो इतनी मशहूर है कि कई गाने वालो ने इसे अपने अपने अंदाज में गाया है सच तो यह है कि 'गालिब' की यह ग़ज़ल उर्दू साहित्य की सर्वोत्तम ग़ज़ल है. फरमाते हैः हमारी किस्मत

---

१ शहर

में यह लिखा ही कब था जो हम अपने महबूब से मिल पाते अब चलो मर गए तो अच्छा हुआ अपनी बदकिस्मती का गिला भी जाता रहा. अगर कुछ दिनो और जीते रहते तो भी इसी तरह उस की मुलाकात के इंतजार में जिंदगी गुजरती और मिलना न हो पाता क्योंकि किस्मत में ही न था. केवल परेशानी ही हाथ आती.

तिरे वादे पर जिए हम, तो यह जान झूट जाना,
कि खुशी से मर जाते, अगर एतबार होता

ऐ दोस्त, तू मुझे जिन्दा देखकर यह न समझ कि मैं ने तेरे वादे पर एतबार किया था. अगर कहीं मैं ने तेरा ऐतबार किया होता तो खुशी के मारे मर गया होता. जिंदा रहना ही इस बात का सुबूत है कि मुझे तेरे वादे पर विश्वास नहीं था.

हुए मर के हम जो रुसवा, हुए क्यो न ग़र्क़े दरिया,
न कभी जनाजः उठता, न कहीं मजार होता

फरमाते हैं कि हम मर के मुफ्त में बदनाम हो गए. इस से तो यही अच्छा था कि दरिया में डूब जाते फिर न कहीं हमारी कब्र होती और न कभी हमारा जनाजा उठता. अब चूंकि हमारी कब्र है, इसलिए लोग उस की ओर संकेत करके कहते हैं कि यह आशिक गालिब की कब्र है जो जिंदगी भर अपने महबूब के लिए तड़पता रहा और आखिर मर गया, लेकिन उस ने कभी उस की ओर ध्यान नहीं दिया

उसे कौन देख सकता कि यगान है वह यकता,
जो दुई की बू भी होती, तो कही दोचार होता

यह शेर सूफियाना रग में है फ़रमाते है कि उसे कोई नहीं देख सकता. चूंकि वह बेमिस्ल है और उस जैसा कोई दूसरा है ही नहीं. अगर वह इस तरह आप अपनी मिसाल न होता और उस में जरा भी

बेगानगी का पहलू होता तो कहीं तो दोचार होता यानी टकरा जाता.

यह मसाइले तसव्वुफ यह तिरा बयान, 'गालिब',
तुझे हम वली समझते, जो न बादःख्वार होता

इस शेर का एक घटना से सबंध है. मिर्जा 'ग़ालिब' ने यह ग़जल हिंदुस्तान के आखिरी मुगलिया बादशाह बहादुरशाह 'जफ़र' के सामने पढी थी. जब 'ग़ालिब' ने यह शेर पढा तो शहनशाह जफ़र ने कहा, "भई, हम तो तुम्हें जब भी वली न समझते" गालिब ने झुक के अदब से कहा, 'हुजूर, तो अब भी ऐसा ही खयाल फरमाते है ?' 'गालिब' इस शेर में कहते है कि ऐ ग़ालिब, यह तेरा सूफियाना दर्शन और यह वर्णन करने का अछूतापन काश तू बला का शराबी न होता तो हम तुझे वली मानते

हवस को है निशाते कार क्या क्या,
न हो मरना तो जीने का मज़ा क्या.

'ग़ालिब' कहते है कि आदमी की इच्छा कभी मिटती नहीं बढ़ती ही रहती है. आदमी चाहता है कि मै मरने से पहले सब कुछ करलूं और यह भी सच है कि बिना इच्छा के जीवन नीरस हो जाता है जिस तरह से कि यदि मौत का डर न हो तो और अधिक जीने की इच्छा कोई क्यो करे.

तजाहुल[1] पेशगी से मुद्आ क्या,
कहा तक, ऐ सरापा नाज़, क्या, क्या

शेर बहुत आसान है. कहते है, ऐ जानबूझ कर अंजान बनने वाले, आखिर तेरी इस अदा से मकसद क्या है और तू कब तक इस तरह हमारी हर बात पर 'क्या कहा' 'क्या कहा' करता रहेगा ?

---

१ गफलत को पेशा बना लेना

नवाज़िश हा-ए-वेजा, देखता हू,
शिकायतहा-ए-रगी का गिला क्या

'ग़ालिब' ने अपनी ज़िदगी में कभी मिर्ज़ा 'वेदिल' के अदाज में भी शेर कहे, लेकिन आखिर उस रग को मुश्किल जान कर छोड दिया. 'गालिब' की यह ग़ज़ल उन के हम उम्र और ग़ज़ल के महान शायर हकीम मोमिन खा 'मोमिन' के रग में है इस शेर में 'ग़ालिब' कहते है कि ऐ महवूब, मै तेरी वह सब कृपा देख रहा हू जो तू औरो पे करता है और जब मै प्यार भरे अदाज से तेरी शिकायत करता हूं तो तू उलटा मुझ से कहता है कि ऐसी शिकायतो का चर्चा क्यो

निगाहे वेमहावा चाहता हू,
तगाफुल हाए तमकी आज़मा क्या

मै चाहता हूं कि तुम मुझे प्यार भरी नजरो से देखो और मुझ से अलग रह कर मेरी सहनशीलता की परीक्षा लेना छोड दो

फरोगे शोल.-ए-खस यक नफस है,
हवस को पासे नामूसे वफा क्या

इस शेर में उन लोगो की सच्ची दोस्ती के वारे में बताया गया है जो झूठे और ग़लत लोगो को अपना सच्चा दोस्त समझ लेते है. 'गालिव' कहते है कि मतलव के दोस्तो की दोस्ती उसी तरह पल भर की है जैसे खस को आग लग जाए तो वह दम भर में जल कर राख हो जाता है चूकि हवस और लालच को सच्ची वफा का कोई लिहाज नहीं, इसलिए ऐसे लोग दूसरो को भी तवाह कर देते है

नफस मौजे मुहीते वेखुदी है,
तगाफुलहाए-साक़ी का गिला क्या.

फरमाते है कि हमारा हर सास वेख़ुदी और मस्ती की लहर है.

इसलिए अगर साकी हमारी ओर ध्यान नहीं देता तो उस की क्या शिकायत करें. हम तो अपने ही अनुभूति में खोए हें.

दिमागे इत्र पैराहन नही है,
गमे आवारगी हाए-सबा क्या

'ग़ालिब' के इस शेर का पहला मिसरा इतना मशहूर हो चुका है कि एक तरह से महावरा वन गया है. फरमाते है कि हवा हमारे महबूब के लिबास की सुगंध लिए इधर उधर आवारा फिर रही है इस का हमें अब कोई ग़म नहीं, क्योंकि हमारा दिमाग़ इस काबिल रहा ही नहीं कि हम यह नाज़ उठाते फिरें

दिले हर कतर है साजे अनल बह,
हम उस के है, हमारा पूछना क्या

फरमाते हें हमारे दिल की हर बूद उस ईश्वरीय समुद्र का हिस्सा है. और हम उस ईश्वर से जुड़े हुए है. यानी हम में और ईश्वर में कोई अतर नही. यह शेर सूफियाना और दर्शन के रग का है.

महावा क्या है, मैं जामिन, इधर देख,
शहीदाने निगह का खू बहा क्या

जो लोग तेरी निगाह से कत्ल हो गए हैं अब तू बधड़क उन की तरफ देख. तू उन के खून के बदले से मत डर क्योकि मैं तेरा गवाह बनूंगा कि तू ने उन्हे कत्ल नहीं किया

सुन, ऐ गारतगरे जिनसे वफा सुन,
शिकस्ते शीश -ए-दिल की सदा क्या.

फ़रमाते है कि ऐ वे वफा ज़रा ग़ौर से सुन कि तू ने वफ़ा को तबाह कर दिया है और उस अनमोल चीज़ दिल को भी टुकड़े टुकड़े कर दिया है. अब, जब कि दिल ही टूट गया हें इस में से आवाज़ कहां से पैदा होगी. ऐ

वफ़ा के दुशमन तू ने किस चीज का खातमा कर दिया !

किया किस ने जिगरदारी का दावा,
शकेबे खातिरे आशिक, भला किया

फ़रमाते हैं कि ऐ दोस्त, क्या कभी हम ने अपने सब्र और बरदाश्त का दावा किया है ? भला आशिक कभी सब्र का पुतला हो सकता है ? इसलिए तू हमें और ज्यादा यह कह कर बेचैन न करे कि अच्छा हम देखते हैं तुझ में कितना सब्र है. यह शेर बहुत ही लतीफ अर्थ लिए हुए है. यानी महबूब प्यार नहीं करता और आशिक सब्र किए बैठा है. आखिर उसे प्यार करने की दावत इस तरह दे रहा है कि शायद तू हमारे सब्र की परीक्षा ले कर हम से प्यार करना चाहता है. लेकिन यहां सब्र है ही किस में ? इसलिए तू अपनी रविश छोड और हमारी तरफ ध्यान दे.

यह कातिल वाद-ए-सब्र आज़मा क्यो,
यह काफ़िर फितन-ए-ताक़त रुबा क्या

'गालिब' फ़रमाते हैं कि क़ातिल का कत्ल करने का वादा क्या सब्र आजमाने की बात है? मतलब यह कि वह काफिर महबूब क्या बहुत ताकतवर हैं ? जिस से वह क़त्ल करने का दिन टालता जा रहा है ?

बलाए जा है, गालिब, उस की हर बात,
इबारत क्या, इशारत क्या, अदा क्या

यह शेर बेहद आसान है. कहते हैं ऐ 'ग़ालिब' उस के इशारे ही क्या, उस की अदा क्या और उस की लिखावट क्या उस की तो हर हर चीज़ जानलेवा है

दर खुरे कहरे गजब, जब कोई हम सा न हुआ,
फिर गलत क्या है, कि हम सा कोई पैदा न हुआ.

इस शेर में गजब की शेखी है कहते है जब हमारे सिवा कोई दूसरा तेरा जुल्म सहने के काबिल है ही नहीं तो फिर हमारा यह दावा कैसे गलत है कि हम जैसा कोई दूसरा पैदा ही नहीं हुआ.

बदगी मे भी, वह आज़ादा-ओ-खुदबी है, कि हम,
उलटे फिर आए, दरेकाब अगर वा न हुआ.

यह शेर 'ग़ालिब' की जिंदगी के उस जमाने की यादगार है जब वह भूखो मर रहे थे आखिर किसी ने अजमेरी गेट के बाहर दिल्ली कालिज में उर्दू फारसी पढाने के लिए सिफ़ारिश की हजरत पालकी में बैठ कर कालिज के दरवाजे पर जा पहुचे और नौकर के हाथ प्रिंसिपल को कहला भेजा कि मिर्जा ग़ालिब आ गए है. प्रिंसिपल ने अंदर से कहला भेजा कि उन से कहिए कि हम तो उन का इन्तजार कर रहे है, चले आवें. 'ग़ालिब' यह जवाब सुन कर आपे से बाहर हो गए और उलटे पाव घर वापस चले गए. उन्हे रज इस बात का था कि प्रिंसिपल उन के स्वागत के लिए कालिज के दरवाजे पर क्यो नहीं आया. वापिस जाते हुए कह गए, "नौकरी, इज्जत और आबरू बढ़ाने के लिए की जाती है न कि कम करने के लिए"

यह घटना बताने का मतलब था कि शेर अपने आप समझ में आ जाए. फरमाते है कि हम तो बदगी करने और आदाब बजा लाने में भी ऐसे स्वाभिमानी और गैरतमद है कि अगर देखा कि काबे का दरवाजा खुला हुआ नहीं है तो उलटे पैर लौट आए और सिजदा अदा नहीं किया

सब को मकबूल है दावा तेरी यकताई का,
रूबरू कोई बुते आइना[1] सीमा न हुआ

चूकि तेरा मुक़ाबला कोई हसीन नहीं कर सका जिस का बदन शीशे

---

१ आइना जैसी सूरत वाला, अत्यन्त सुदर

की तरह चमकदार और सुन्दर हो, इसलिए सब को तेरा यह दावा स्वीकार है तुझ जैसा और कोई नहीं.

कम नही, नाजिशे हमनामि-ए-चश्मे खूबा,
तेरा बीमार, बुरा क्या है, गर अच्छा न हुआ

ऐ महबूब, तेरी आंखे नरगिसी है नरगिसी आख को 'रोगी आख' भी कहते है. चूकि नरगिस का फूल आधा खुला रहता है और प्रेमिका की आखें भी हुस्न के नशे में यो आधी खुली रहती है मानो किसी का सत्कार करने को तैयार न हो इसलिए अगर मै, जो तेरी आंखो का बीमार हू यदि अच्छा नही हुआ तो क्या, आखिर मुझे यह गर्व तो कम नहीं कि लोग मुझे भी तेरी आखो का बीमार कहते है. और तेरी नरगिसी आंखो को रोगी आख कहते है. इस नाते मै तेरे बराबर का दरजा रखता हू.

सीने का दाग है वह नाल कि लब तक न गया,
खाक का रिज्क है, वह कतर कि दरिया न हुआ

फ़रियाद जो दिल से उठ कर होठो तक न आ सकी और मेरे सीने मे रह कर दाग बन गई है उसी तरह वह कतरा जो दरिया में नहीं मिल सका मिट्टी में मिल कर नाज बन गया है.

काम का मेरे है, वह दुख कि किसी को न मिला'
काम में मेरे है, वह फितन कि बरपा न हुआ.

शेर बहुत आसान है. मेरे नाम वह फंद लिख दिया गया है जो किसी को नहीं मिला और मुझ पे वह मुसीबत टूटी जो किसी को नहीं उठानी पडी.

कतरे में दजल. दिखाई न दे, और जुज्व मे कुल,
खेल लडको का हुआ, दीद-ए-बीना न हुआ

कहते है वह लोग जिन्हें अपनी सूझबूझ का बड़ा दावा है यानी पाखडी साधुओ को उन्हें पानी के एक कतरे में न तो दरिया महसूस हुआ और न एक जर्रे में उस ईश्वर का चमत्कार ही दिखाई दिया. यानी उनकी आखें आख न हुई बच्चो का खेल हो गया

थी खबर गर्म, कि 'गालिब' के उडेंगे पुर्ज़े,
देखने हम भी गए थे, प तमाशा न हुआ

बहुत ही आसान और चोट से भरपूर शेर है कहते है यह खबर सुबह से ही चारो ओर फैली थी कि आज 'गालिब' का खूब मजाक उडाया जायगा और उसे जलील किया जायगा. यह सुन कर हम भी वहा तमाशा देखने गए थे, लेकिन वहा इस का उल्टा हुआ यानी किसी में इतनी हिम्मत न हुई जो 'गालिब' की तरफ आख उठा कर देख सकता अफसोस हम उस तमाशे से महरूम रह गए!

न दे नामे[१] को इतना तूल, 'गालिब' मुख्तसर कर दे,
कि हसरत सज[२] हू, अर्जे सितमहाए जुदाई का

ऐ ग़ालिब तू अपने महबूब को इतना लंबा खत जो लिख रहा है, इसे थोड़े में बयान कर. केवल इतना लिख कि ऐ महबूब मेरे दिल में एक ही हसरत है कि तेरी जुदाई में मुझ पर जो कुछ गुजरी है उसे तुझे बताऊ.

गर[३] न अदोहे[४] शबे फुर्कतबया हो जाएगा,
बेतकल्लुफ दागे मह, मोहरे दहा[५] हो जाएगा

जुदाई की रात का रज व ग़म अगर बयान नही होगा तो चाद का दाग

---

१ खत २ हसरत रखने वाला ३ अगर ४ गम ५ मुंह पर मोहर लग जाना

वड़ी बेतकल्लुफी से मेरे मुह पर मोहर लगा देगा और फिर मेरी खामोशी मेरे ग़मो को सब के सामने बयान क्या करेगी. इसलिए अच्छा यही है कि इसे तुम ही आ कर सुन लो वरना मेरे गम का हाल सब पे खुल जाएगा.

ज़हर. गर ऐसा ही, ग़ामे हिज्र में होता है आव,
परतवे महताव, सैले खानमा हो जाएगा

अगर जुदाई की शाम में कलेजा इसी तरह पानी होता है तो चादनी भी मेरे घर को बहा कर रख देगी.

ले तो लू, सोते मे उसके पाव का वोसा, मगर,
ऐसी वातो से, वह काफिर वदगुमा हो जाएगा

मेरा महवूब सो रहा है इस अवस्था में मै उस का पांव यदि चाहू, चूम सकता हू लेकिन मेरे ऐसा करने से वह फिर कभी मुझ पर विश्वास नहीं करेगा

दिल को हम सर्फ वफा समझे थे, क्या मालूम था,
यानी, यह पहले ही नज्र-ए-इम्तहा हो जाएगा

हमारा तो यह ख़याल था कि हमारा दिल वफ़ा की कडी मंजिल में हमारा साथ देगा लेकिन यह किसे मालूम था कि यह स्वय ही उस की निगाह का शिकार हो जएगा.

सब के दिल में है जगह तेरी,तो त राजी हुआ,
मुझ पे गोया इक जमाना, मेहरवा हो जाएगा

सब के दिल में तेरी जगह है. और अगर मुझ पे तेरी कृपा हो गई तो सारा जमाना मुझ पर मेहरवान हो जाएगा. इस शेर में खास बात यह है कि यह शेर हाडमास के इनसानी महवूब के लिए भी हो सकता है और खुदा के लिए भी.

गर निगाह गर्म फरमाती रही, तालीम-ए-ज़ब्त,
शोल. ख़स मे, जैसे ख़ू रग मे, निहा हो जाएगा

अगर तेरी क़हर भरी नज़रें इसी तरह मुझे सब्र और सयम का आदेश देती रही तो तेरी नजरो के डर के मारे चिंगारी भी तिनको में यो छिप जाएगी और भड़क न सकेगी जैसे रगो में खून छिपा रहता है.

बाग मे मुझ को न ले जा, वरन मेरे हाल पर,
हर गुले तर एक चशमे खूफिशा हो जाएगा

मुझे बाग में न ले चलो वरना मेरा हाल देख कर हर खिला हुआ फूल खून के आंसू रो देगा एक शायराना तखैयुल यह भी है कि फूल बुलबुल का आशिक है और उस की जुदाइ में अपनी पखुडियो को चाक करता है 'गालिब' का कहना है कि मेरी हालत फूल से भी जियादा खराब और खस्ता है अगर वह मुझे इस हाल में देखेगा तो रो पड़ेगा कि इस ने भी अपना गरेबान चाक कर रखा है इस शेर का मतलब कुछ लोगो ने यह भी निकाला है कि यहां बाग से मतलब महबूब का घर है और महबूब को फूल कहा गया है, यानी मुझे उस के घर न ले कर जाओ, वरना कहीं ऐसा न हो कि अपनी जुदाई में मेरा यह हाल देख कर उस का दिल रो उठे

वाए, गर मेरा तेरा इसाफ, महशर में न हो,
अब तलक तो यह तवक्को है, कि वा हो जाएगा

अब तक तो हमें यह आशा रही कि चलो यहा न सही तो क़यामत के दिन वहां मेरा और तेरा इन्साफ़ हो जाएगा, यानी खुदा मेरे साथ इन्साफ करेगा कि मैं ने तेरे जुल्म सहे हैं. लेकिन अगर कहीं वहा में भी इन्साफ़ न हुआ तो यह बात भी स्वय एक प्रलय से कम न होगी.

उलझा क्या, सोच. आख़िर तू भी दाना[1] है 'असद',
दोस्ती नादाँ की है, जी का ज़ियाँ[2] हो जाएगा.

ऐ 'असद', तू एक नादान से दोस्ती कर बैठा है. अब भी बाज़ आ जा. आख़िर कुछ तो सोच. तू भी बुद्धिमान आदमी है. मुफ़्त में जान चली जायगी. लेकिन वह तुझ से प्यार नहीं करेगा.

दर्द मिन्नत कशे दवा न हुआ,
मैं न अच्छा हुआ, बुरा न हुआ.

मिन्नतकश से मतलब है एहसान उठाने वाला. मेरे दर्द ने दवा का एहसान नहीं उठाया. इसलिए अगर मैं अच्छा नहीं हुआ तो मुझे कोई गम नहीं.

जम'अ करते हो क्यों रक़ीबों को,
इक तमाशा हुआ, गिला न हुआ

आप को मुझ से कोई गिला था तो अकेले में मुझ से केवल कह देते यह जो आप ने हमारे रकीबों को जमा करना शुरू कर दिया यह तो तमाशा हो गया, शिकायत तो न हुई ? और फिर जमा भी उन लोगों को किया जो मेरे दुश्मन हैं और आप के समर्थक.

हम कहां किस्मत आजमाने जाए,
तू ही जब खंजर आज़मा न हुआ

जब तू ही हमारा इनसाफ करने के लिए तलवार उठाने को तैयार नहीं है तो फिर हम अपनी किस्मत आजमाने और कहा जाए?

कितने शीरीं हैं तेरे लब, कि रक़ीब,
गालियां खा के बेमज़ा न हुआ

---

१ बुद्धिमान २ नुकसान

ऐ महबूब, तेरे होंठ कितने मीठे हैं कि तू ने बारहा गालियां दीं, लेकिन तेरा होठ बदमजा न हुआ और सदा गालियो में भी आनन्द आया.

है खबर गर्म उन के आने की,
आज ही, घर में बोरिया न हुआ

आज सुना है कि वह हमारे यहा आने वाले है और हमारी बद-किस्मती यह कि आज ही घर में एक बोरिया तक नहीं जिस पर उन्हे बैठा सके.

क्या वह नमरूद[1] की खुदाई थी,
बदगी में मेरा भला न हुआ

ऐ महबूब मै ने तेरी इतनी खुशामद की कि मुझ पर तरस खा लेकिन तू ने मेरी एक न सुनी और बराबर जुल्म ढाता रहा यानी तेरी खुदाई नमरूद की खुदाई हुई क्योकि अगर कोई रह्मदिल होता तो मेरी बदगी कबूल करता और मेरे साथ सच्चा इनसाफ़ करता.

जान दी, दी हुई उसी की थी,
हक तो यह है, कि हक अदा न हुआ

मै ने उस ईश्वर के लिए अपनी जान भी दे दी. क्या हुआ? आखिर यह जान भी तो उसी की दी हुई थी. सच बात तो यह है कि जान दे कर भी मै उस की अनुकपा का भार न उतार सका.

जख्म गर दब गया, लहू न थमा,
काम गर रुक गया, रवा[2] न हुआ

अगर जख्म किसी प्रकार दब भी गया तो खून वहना न थमा, लेकिन जब काम ही बनते बनते रुक गया तो फिर दुबारा न बन सका.

---

१ एक बादशाह का नाम है जिसने खुदा होने का दावा किया था.

२ ठीक हो जाना

रहजनी है, कि दिल-सतानी है,
ले के दिल, दिलसिता रवान हुआ

आप दिल लेते हैं या डाका डालते हैं इधर दिल लिया, पल भर भी न रुके और चलते बने.

कुछ तो पढिए, कि लोग कहते हैं,
आज 'गालिब' गजलसरा न हुआ

कहा जाता है कि मिर्जा 'गालिब' ने यह गजल लाल किले के मुशायरे मे पढी थी. वह मुशायरा तरही मुशायरा था यानी सब शायर एक ही 'तरह' पर शेर कह के लाए थे, लेकिन 'गालिब' ने किसी तरह में गजल नही कही थी जब लोगो ने अनुरोध किया कि मिर्जा साहब आप भी कुछ पढिए तो मिर्जा साहब ने यह शेर उसी वक्त कहा और यह गजल सुना दी कहते है ऐ 'गालिब' कुछ तो सुना क्योकि लोग फरमाइश कर रहे है कि 'गालिब' ने कुछ भी आज नही सुनाया.

गिला है शौक को, दिल मे भी तगी-ए-जा का,
गोहर मे महव हुआ इजतराव दरिया का

मेरे दिल में महबूब से मिलने का जो शौक है उसे यह शिकायत है कि दिल में इतनी जगह नहीं है जहा वह रह सके. और इसी परेशानी में वह दिल में घुट कर रह जाता है यह मुआमला ऐसा ही है जैसे दरिया की मौजो की सारी तडप मोतियो में बद हो कर रह जाती है

यह जानता हू, कि तू और पासुखु-ए-मकतूब[1],
मगर, सितमजद हू, जौके खाम फर्सा का

मै जानता हू कि तू, और मेरे खत का जवाब दे लेकिन मै क्या करू

---

१ खत का जवाब

कि कुछ न कुछ लिखने के शौक का मारा हुआ हू.

गमे फिराक मे तकलीफे सैरे वाग न दे,
मुझे दमाग नही खद. हाए वेजा का

मै जुदाई के गम में परेशान हू मुझे बाग में जा कर सैर करने को न कहो, क्योकि फूलो का, मेरी ओर देखकर हसना मुझे वर्दाश्त न होगा.

दिल उस को, पहले ही नाज़-ओ-अदा से, दे बैठे,
मुझे दमाग कहा, हुस्न के तकाजे का

हम ने पहली ही नजर में उसे अपना दिल बडी अदा के साथ दे दिया क्योकि हमें यह कब गवारा था कि वह हम से दिल मागता और हम उसे देते.

एतबारे इश्क की खाना खरावी देखना,
गैर ने की आह, लेकिन वह खफा मुझ पर हुआ

इश्क के इस एतबार का बुरा हो. यानी उसे इस बात का पूरा यकीन है कि मुझे उस से मुहब्बत है और मै उस की मुहब्बत में आहे भरता रहता हूं. क्योकि आज तो गैर ने आह की थी पर खफा वह मुझ पर हुआ मेरी मुहब्बत के इस एतबार ने मुझे कहीं का भी तो नहीं रखा.

मै, और बज्मे मय से, यूं तशन काम आऊ,
गर मै ने की थी तौबा, साकी को क्या हुआ था?

मै और शराव की महफिल से यू बिना पिए वापस लौट जाऊ अगर मै ने शराब से तोबा की थी तो साकी जबरदस्ती क्यो नहीं पिला दी. मुझे प्यासा ही क्यो लौटा दिया.

है एक तीर, जिस मे दोनो छिदे पडे है,
वह दिन गए, कि अपना दिल से जिगर जुदा था

अव तो हमारा दिल और जिगर दोनो ही तेरे एक तीर से छिद कर रह गए है. अव किसी करवट चैन नहीं मिलता

घर हमारा, जो न रोते, तो भी वीरा होता,
वह्र अगर वह्र न होता, तो वयावा होता

लोग कहते है कि हम ने रोरो कर अपने घर को तवाह व वीरान कर डाला है. उन्हे शायद यह नहीं मालूम कि उस की किस्मत में वीरानी ही लिखी हुई थी. जिस तरह से कि एक समुद्र अगर समुद्र न होता तो जगल होता

तगि-ए-दिल का गिला क्या, यह वह काफिर दिल है,
कि अगर तग न होता, तो परीशा होता

हमारे दिल की तंगी की क्या शिकायत यह तो वह काफिर दिल है कि अगर तग न होता तो परेशान होता.

वादे यक उम्रे वर'अ, वार तो देता, वारे,
काश, रिज्वा[1] ही दरे यार का दरवा होता

अगर हम इतनी मिन्नतें खुदा की करते तो वह भी मान जाता पर न जाने कैसा जालिम दरवान तू ने अपने घर के आगे वैठा रखा है जिस पर हमारी मिन्नतों और सलामो का कोई असर नहीं होता इस से तो अच्छा यही था कि उस के घर का दरवान रिजवान ही होता.

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता, तो खुदा होता,
डुवोया मुझ को होने ने, न होता मै तो क्या होता.

जव कुछ भी नहीं था तो केवल खुदा था और अगर कुछ न होता तो भी केवल खुदा ही होता लेकिन मुझे तो मेरे इस होने ने डुवोया वरना

---

१ स्वर्ग का दरवार

अगर मैं इस हालत में न होता तो खुदा ही होता. इस के दो मतलब हैं एक तो यह कि अगर मैं न होता तो क्या बुराई होती दूसरा मतलब यह है कि अगर मैं जो अब हू यह न होता तो क्या होता यानी खुदा होता.

हुआ जब गम से यूं बेहिस, तो गम क्या सर के कटने का,
न होता गर जुदा तन से, तो ज़ानू पर धरा होता

हम ने इतने गम सहे हैं कि हमारा सर बेजान हो चुका है. इसलिए अब हमें उस के कट जाने का कोई गम नही है. चूंकि यह बेजान हो चुका है इसलिए अगर तन से जुदा न होता तो घुटनो पर पड़ा रहता.

हुई मुद्दत, कि 'गालिब' मर गया, पर याद आता है,
वह हर इक बात पर कहना, कि यूं होता तो क्या होता

दूसरे मिसरे में 'यूं होता तो क्या होता' के दो मतलब हैं. एक तो यह कि हर वक्त कोई नई बात सुझाते रहना. दूसरे यह कि 'क्या होता ?' यानी कौन सा तीर मार लेते. अगर यो हो गया तो क्या और अगर किसी और तरह होता तो क्या ?

यक ज़र्र-ए-ज़मी नही बेकार, बाग का,
या[1] जाद[2] भी फ़तील.[3] है लाले के दाग का

दुनिया में कोई चीज बेमतलब नहीं बनाई गई. यहां जो रास्ता है वह भी लाले के दाग का चराग है. यानी यहा हर चीज दुनिया की रौनक बढ़ा रही है.

बे मय किसे है ताकते आशोबे[4] आगही[5],
खीचा है इज्ज़[6]-ए-हौसल. ने खत अयाग[7] का

---

१ यहा. २ रास्ता ३ चराग ४ शोर ५ अपने आप का ज्ञान. ६ गरता ७ प्याला

शराब पिए बगैर यहा अपने आप को जानने का शोर मचाने की किसी में ताकत नहीं है. इसी अक्ल के शोर ने हमारे हौसले को आजिज कर दिया है हमारी इस आजिजी ने हमें शराब पीने पर मजबूर किया मतलब यह कि बेखुदी के बगैर इस दुनिया में अक्ल और होश का शोर सा मच जाए

वुलवुल के कारोबार पे है, खद हाए गुल,
कहते है जिस को इश्क, खलल है दमाग का

बुलबुल तो खिले हुए फूलो को देख कर दर्द भरी आवाज म पुकार रही है. लेकिन फूल उस की इस पुकार पर मुस्करा रहे हैं इस से प्रकट होता है कि मुहब्बत सिर्फ अक्ल का फेर है. दमाग में खलल आ जाए तो उसे मुहब्बत कह देते हैं.

ताज नही ह नश्श-ए-फिक्रे सुखन[1], मुझे,
तिरियाकि[2]-ए- कदीम हू दूद[3]-ए-चराग का

मुझे शेर कहने और फिक्र करने का नशा कोई नया नहीं है. मैं तो इस नशे का पुराना आदी हू शेर में खास बात यह है कि सोचने के लिए धुएं का शब्द लाए. और शायरी के लिए चराग का इसी धुए की रियायत से अफयूनी होने का दावा किया गया है

सौ बारबन्दे-इश्क[4] से आजाद हम हुए,
पर क्या करें, कि दिल ही अदू[5] है फराग[6] का

हम तो मुहब्बत की इस कैद से सौ बार आजाद हुए लेकिन असल मुसीबत तो यह दिल है कि हमारे हर आराम का दुश्मन है. मुहब्बत की

---

१ सोचना. २ अफयून ३ धुआ ४ इश्क की कैद ५ दुश्मन. ६ फुरसत

कैद से आजाद होने पर आराम मिला तो दिल ने फिर उस की मुहब्बत में गिरफ्तार कर दिया.

वह मेरी चीने जबीं[1] से, गमे पिन्हा[2] समझा,
राज-ए-मकतूब[3] व बेरब्ति-ए-[4]अुनवा समझा

मेरे माथे की त्यौरिया देख कर वह यह समझा कि मेरा दिल शिकायतो और गम से भरा हुआ है यह कुछ ऐसी ही बात है जैसे कोई व्यक्ति शीर्षक के अटपटेपन से यह समझ ले कि लिफाफे में जो खत है वह भी बेहद गुस्से में लिखा गया है

शर्हे असबाबे गिरफ्तारि-ए-खातिर, मत पूछ,
इस कदर तंग हुआ दिल, कि मैं जिंदा समझा

तेरी मुहब्बत में गमो ने मुझे इस कदर घेर लिया है कि मेरा दिल एक कैदखाना बन गया है

बदगुमानी ने न चाहा उसे सरगर्मे खिराम,
रुख पे हर कतर' अरक, दीद.-ए-हैरा समझा

मैं ने अपनी बदगुमानी के हाथो उसे इस तरह नाज से घूमते फिरते न देखना चाहा और चलने फिरने से जो उस के चेहरे पर पसीने के कुछ कतरे उभर आए थे उन्हे मैं हैरतभरी नजरें समझने लगा यानी उसे इस तरह घूमते हुए कोई और शख्स भी देख रहा था (तभी तो मैं न चाहता था कि वह घूमे) और वह व्यक्ति मेरे महबूब को देख कर इतना हैरान हुआ कि उस की हैरान नजरें मेरे महबूब के चेहरे पर पसीने की शक्ल में आ कर जम गई है

---

१ माथे की त्यौरिया २ दिल का गम ३ मकतूब ४ बेतरतीब सरनामा

इज्ज़ से अपने यह जाना, कि वह वदखू होगा,
नब्ज़े खस से तपिशे शोल-ए-सोज़ा समझा

मैं ने अपनी नम्रता से ही यहा समझ लिया था कि वह बद मिजाज होगा. यानी मैं ने तिनके की नब्ज से जला देने वाले शोले की तपिश को जान लिया था.

सफरे इश्क मे की ज़ोफ[1] ने राहत तलवी[2],
हर कदम साए को मैं अपने शबिस्ता[3] समझा

मैं उस की मुहब्बत में इतना दरदर भटका कि आखिर हार कर आराम करने की ख्वाहिश पैदा हुई. लेकिन आराम करता कहा ? मुहब्वत के कड़े कोस में कोई जगह ऐसी न थी जहा साया होता और मैं दो घडी आराम कर सकता. इसलिए मैं ने अपने ही साए को आराम करने की जगह समझ लिया.

दिल दिया जान के क्यो उसको वफादार, 'असद',
गलती की, की, कि जो काफिर को मुसलमा समझा.

काफिर से मतलव वह शख्स जो ईश्वर वाद के विरुद्ध हो और मुसलमान से मतलब इसलाम धर्म का मानने वाला. पर यहा काफिर से मतलव महवूब से है और मुसलमान से मतलव वफादार से है. ऐ 'असद', तू ने सख्त गलती की कि एक वेवफ़ा को वफादार समझ कर अपना दिल दे दिया.

फिर मुझे दीद-ए-तर याद आया,
दिल जिगर, तशन-ए-फरियाद आया

---

१ कमजोरी २ आराम करने की ख्वाहिश ३ आराम करने की जगह

मुझे अपनी वह रोती हुई आखें फिर याद आ गई है जिसे देख कर मेरा दिल और जिगर फरियाद कर रहे है कि मेरी आग बुझाओ.

दम लिया था न कयामत ने हनोज[1],
फिर तेरा वक्ते सफर याद आया.

तेरी जुदाई से मुझ पर जो कयामत टूट पडी थी उस ने अभी दम भी न लिया कि फिर मुझे तेरी बिदाई का समय याद आ गया और मेरी आखें आसुओ से डबडबा उठीं.

सादगी हाए-तमन्ना यानी,
फिर वह नैरगे नज़र याद आया

मेरी तमन्नाओ की सादगी देखो कि जिस सादगी के आधार पर मै उस शोख आखो वाले के इशारो में फस कर अपना चैन लुटा बैठा था, फिर तमन्ना ने मेरे दिल में करवट ली और मुझे उसी निगाह के धोखे में फसा दिया

उज्रे वामादगी, ऐ हसरते दिल,
नाल करता था, जिगर याद आया

ऐ मेरे दिल की हसरतो, अब मै और जियादा आंसू नहीं बहा सकता अब तुम मुझे और अधिक रोने के लिए न कहो. रो रो कर मेरा जिगर फट गया है. वही यह सब आह और फरियाद किया करता था. अब वह नहीं रहा तो आह और फरियाद कौन करे. इस शेर में एक खास पहलू यह है कि जिगर तो इस गम के हाथो तबाह हो गया, अब अगर मै उसी तरह आंसू बहाता रहा तो डर है कि कहीं दिल भी बरबाद न हो जाए.

---

१ अभी

जिंदगी यूं भी गुज़र ही जाती,
क्यो तेरा राहगुज़र याद आया।

अगर मुझे तेरी गली का पता न चलता तो भी यह जिंदगी गुजर ही जाती न जाने मुझे तेरे कूचे का क्यों ध्यान आया कि अब तक खाक छानता फिरता हू.

आह वह जुर्अत-ए-फरियाद कहा,
दिल से तग आ के जिगर याद आया

यानी जब जिगर था तो हम उस के सामने जा कर फ़रियाद करने की जुर्रत भी कर लिया करते थे अब वह तो रहा नही लेकिन दिल है कि हमें उसी तरह फरियाद करने पर मजबूर कर रहा है. हम अपने दिल से इतने तग आ चुके है कि हमें अपने उस बरबाद जिगर की याद आती है

फिर तेरे कूचे को जाता है खयाल,
दिल-ए-गुमगशता[1], मगर[2] याद आया

मरा ध्यान जो फिर रहरह कर तेरे कूचे की तरफ जाता है तो उस का शायद यह कारण है कि मुझे अपने उस दिल की याद आगई है जो कहीं तेरे कूचे में ही गुम हो गया था और अब उसे वही जा कर तलाश किया जा सकता है

कोई वीरानी सी वीरानी है,
दश्त को देख के घर याद आया

इस शेर के कई मतलब निकलते है एक तो यह कि 'गालिब' महबूब की तलाश में भटकते हुए बयाबान को देख कर कह रहे है कोई वीरानी सी वीरानी है. उस को देख कर तो मुझे अपना घर याद आ

---

१ खोया हुआ दिल २ शायद

गया जो मेरे महबूब के बगैर इतना ही वीरान हो चुका है. दूसरा पहलू इस शेर में खौफ का भी है एक मतलब यह है कि मुझे अपने घर की वीरानी में बहुत मजा मिलता था. इतना कि इस जगल की वीरानी को देख कर घर की याद आ गई है.

मै ने मजनू पे लडकपन में, 'असद,'
सग उठाया था, कि सर याद आया

मैं ने भी अपने लडकपन में मजनूं को मारने के लिए पत्थर उठाया था. लेकिन पत्थर उठाते ही अपने सर की याद आ गई जिस में मजनूं से कम जनून नही था और खयाल आया कि मेरी मुहब्बत भी इसी तरह एक दिन रग लाएगी और लोग मुझे भी पत्थर मारेंगे लडकपन से मतलब बचपन नहीं, बल्कि कम अक्ली है. जैसे हम बोलचाल की भाषा में कहते है, क्या लडकपन दिखा रहे हो ?

हुई ताखीर[1], तो कुछ बाइसे ताखीर भी था,
आप आते थे, मगर कोई हमागीर[2] भी था

प्रेमी अपने महबूब के इतजार में बैठा हुआ है. महबूब को आने में देर होते देख उस पे कहता है कि तुम को आने में इतनी देर हुई है इस का कोई कारण तो अवश्य ही होगा. यानी तुम जब भी मुझ से मिलने के लिए आना चाहते होगे कोई तुम को बातों में लगा कर या किसी न किसी बहाने रोक लेता होगा. दूसरा अर्थ यह भी है कि ऐ दोस्त, तू मुझ से मिलने से पहले जरूर किसी और से मिल कर आया है. तभी तो इतनी देर हो गई.

तुझ से बेजा है मुझे अपनी तबाही का गिला,
इस में कुछ शाइबः-ए-खूबि-ए-तकदीर भी था

---

१ देर २ रोकने वाला

ऐ खुदा, तेरे फरिश्तो ने हमारे बारे में जो कुछ लिख दिया, तू सिर्फ उसी को ठीक मान कर हमें सजा देता है, यह हमारे साथ इंसाफ नहीं है आखिर जिस वक्त तेरे फरिश्तों ने लिखा था वहां हमारा भी कोई आदमी मौजूद था जो यह कह सके और गवाही दे सके कि फरिश्तो ने जो लिखा है वह ठीक है. 'पकडे जाते हैं' के बयान करने के अदाज और तीखेपन का जवाब नहीं है.

रेख्ती[1] के तुम्ही उस्ताद नही हो, 'गालिब',
कहते है, अगले ज़माने मे कोई 'मीर' भी था

यहां मतलब रेखता से है चूकि उर्दू का यही पुराना नाम था. मीर तकी 'मीर' के सामने सब उर्दू शायरो ने सर झुकाया है. 'गालिब' भी इस शेर में जहां अपनी उस्तादी का दावा करते है वहा बड़ी होशियारी से मीर को भी उर्दू भाषा का उस्ताद कह रहे है.

तू दोस्त किसी का भी, सितमगर, न हुआ था,
औरो पे है वह ज़ुल्म, कि मुझ पर न हुआ था

ऐ जालिम तू ने किसी के साथ भी तो दोस्ती नहीं निभाई. दूसरो पर तो तूने वह ज़ुल्म ढाए है कि मुझ पर भी न ढाए थे.

तौफीक व अंदाज़-ए-हिम्मत है अज़ल[2] से,
आखो में है वह कतरः, कि गौहर न हुआ था

जब से दुनिया बनी है तभी से यही दस्तूर रहा है कि हर चीज अपनी अपनी हिम्मत के मुताबिक अपना नाम पैदा करती है. वह कतरा जो समुंद्र में रह कर मोती बन जाता है अब वही कतरा मेरी आखों में आ कर आसू बन गया है और मुझ से कहीं ज्यादा रुतबा हासिल कर चुका है.

---

१ वह उर्दू जो औरते बोलें २ जिस दिन दुनिया बनी थी

जब तक कि न देखा था, कदे यार का आलम,
मैं मोकितदे फितनः-ए-महशर न हुआ था,

मैं ने अभी तक तो सिर्फ कयामत का नाम ही सुन रखा था. लेकिन मुझे आज तक इस बात का यकीन न आया था कि कयामत के दिन क्या-क्या मुसीबतें लौट सकती हैं. आज अपने महबूब के कद का जो आलम देखा तो यकीन आ गया कि कयामत भी कोई चीज है.

दरिया-ए-म'आसी[1], तुनुक आबी[2] से, हुआ खुश्क,
मेरा सरे दामन भी, अभी तर न हुआ था.

गुनाहो का दरिया गुनाहो की कमी हो जाने के कारण सूख गया और यहा मेरे दामन का सिरा भी नहीं भीगा. यानी मैं ने सारी दुनिया के गुनाह कर डाले पर मुझे ऐसा लगा कि अभी तो कुछ भी गुनाह नहीं किया है .

हासिल-ए- उल्फत न देखा, जुज[3] शिकस्ते आरजू,
दिल बदिल पैवस्त, गोया यक लबे अफसोस था

हम ने मुहब्बत का अजाम तमन्नाओ की हार के सिवा और कुछ न देखा. अगर कहीं आशिक और माशूक एक दूसरे के सीने से चिपट भी गए तो उन के दिल एक दूसरे से यों मिल गए जैसे अफसोस करने वाले दो होंठ. अफसोस करने वाले होठ बंद रहते हैं.

आईनः देख, अपना सा मुह ले के रह गए,
साहब को, दिल न देने पे कितना गुरूर था.

उन्हें इतना गुरूर था कि अभी तक किसी को दिल नहीं दिया था. आज जो उन्होने शीशे में अपना चेहरा देखा तो दिल थाम कर रह गए, यानी खुद अपने ही ऊपर आशिक हो गए और इस तरह किसी को दिल

---

१ गुनाह   २ थोडा सा पानी   ३ सिवा

न देने का सारा घमंड जाता रहा.

क़ासिद[1] को अपने हाथ से गरदन[2] न मारिए,
उस की ख़ता नही है, यह मेरा कुसूर था

अगर खत लाने वाला आप के पास आया है तो आप गुस्से में आकर उसे जान से न मारिए, क्योंकि वह बेचारा आप के पास अपनी मरजी से नहीं गया था उसे मैं ने भेजा था. इसलिए यह मेरा कुसूर है, इसकी सजा मुझे को दीजिए.

अर्ज़ ओ नियाज़-ए-इश्क के काबिल नही रहा,
जिस दिल पे नाज़ था, मुझे वह दिल नही रहा

अब मैं मुहब्बत का फर्ज अदा करने के काबिल नहीं रहा क्योंकि मुझे जिस दिल पे नाज था, उस दिल में अब वह बात ही नहीं रही.

जाता हू दागे हसरते हस्ती लिए हुए,
हू शम-ए-कुश्त.[3], दर खुरे महफिल[4] नही रहा

अब मैं उस शमा की तरह हू जो जल कर खत्म हो चुकी है इसलिए महफिल के काबिल नहीं रहा अब मैं अपने सीने में जिदगी के सैकडो दाग लिए जा रहा हूं. काश मुझ में और अधिक जलते रहने का सामर्थ्य होता और मैं अपने दिल के दागो से महफिल को रौशन रख सकता.

मरने की, ऐ दिल, और ही तदबीर कर, कि मैं,
शायाने-दस्त ओ बाज़ुए कातिल नही रहा

ऐ दिल अब मैं मुहब्बत में इतना गिर चुका हू कि इस काबिल ही नहीं रहा कि वह अपने हाथो से मुझे कत्ल कर के मेरा रुतबा बढ़ाए. अब

---

१ चिट्ठी लाने वाला २ मुहावरा है, मतलब जान से मार देना. ३ वह शमा जो जल कर खत्म हो गई है ४ काबिल.

तो मरने की ही कोई तदबीर सोच.

वरू-ए-शश-जेहत, दर-ए-आईनाबाज है,
या इम्तियाज़-ए-नाकिस ओ कामिल नही रहा

मेरे दिल का आईना सारी दुनिया के लिए है जो कोई चाहे इस में आ कर अपना साया देख ले मेरे यहा पहुंचे हुए और अधूरे शख्स में कोई फर्क नहीं

वा[1] कर दिए है शौक ने, बद-ए-नकाब-ए-हुस्न,
गैर अज़ निगाह, अब कोई हाइल नही रहा

उस के जलवा अफरोज होने के शौक ने नकाब के सारे बद खोल दिए हैं. अब भी अगर हमें उस का जलवा नजर नहीं आता तो यह हमारी निगाह का कुसूर है. क्यो कि अब उस के और हमारे बीच में कोई दूसरा गैर नहीं रहा, नही कोई परदा रहा. यह शेर हकीकी शेर है. खुदा की तरफ इशारा है.

गो[2] मैं रहा रहीने-सितमहा-ए-रोज़गार[3],
लेकिन तेरे ख़याल से गाफिल नही रहा

हालाकि मैं जिंदगी के गमो और दो वक्त की रोटी कमाने की फिक्र में बिलकुल तबाह व बरबाद था फिर भी मैं तेरे खयाल से बेगाना नहीं रहा मैं अगर अपनी परेशानियो की वजह से तुझ से नहीं मिल सका तो इसका यह मतलब हरगिज नहीं कि मै तुझे भूल गया हू

दिल से हवा-ए-किश्ते-वफा मिट गई, कि वा,
हासिल, सिवाय हसरते-हासिल नही रहा

मेरे दिल से वफा का अश तक मिट चुका है क्योंकि दिल में अब

---

१ खोल देना २ हालाकि ३ गिरवी

सिवा कुछ मिलने की हसरत के और कुछ नहीं रहा.

बेदाद[1]-ए-इश्क से नहीं डरता, मगर 'असद,'
जिस दिल पे नाज़ था मुझे, वह दिल नही रहा

आशिक कहता है कि ऐ महबूब मैं तेरे जुल्मों से नहीं डरता मैं हर एक जुल्म हंस कर सहन करने का आदी हूं! मगर अफसोस तो इस बात का है कि जिस दिल पर मुझे नाज था कि यह हंस हस कर सारे जुल्म सहन कर लेगा वह दिल अब मेरे पास नहीं रहा! क्योंकि दिल तो तू ने ले लिया है और वह अब तेरा बन चुका है.

रश्क कहता है, कि उस का गैर से इख़लास, हैफ,
अक्ल कहती है, कि वह बेमेह्र किस का आश्ना.

हसद यह कहता है कि बडे अफसोस की बात है कि वह काफिर किसी और से मुहब्बत करता है. लेकिन अक्ल यह कहती है कि नहीं वह जालिम किसी का दोस्त नहीं. मतलब यह कि उसके दिल में प्रेम है ही नहीं.

मैं, और इक आफत का टुकडा, वह दिले-वहशी, कि है,
आफियत का दुश्मन और आवारगी का आश्ना

क्या कयामत है कि ले दे कर मेरा साथी एक यह दिल है जो आफत का परकाला है इस दिल को आराम से सख्त दुश्मनी है और आवारगी से प्यार.

जिक्र उस परीवश का, और फिरवया अपना,
बन गया रकीब, आखिर, था जो राज़दां अपना

एक तो उस परी जैसे खूबसूरत महबूब का जिक्र और फिर उस पर

---

१ जुल्म

मेरा बयान करने का ढग. नतीजा यह हुआ कि मै जिस शख्स को अपना राजदां समझ कर अपने महबूब की सुन्दरता बयान करता था वही उलटा मेरा दुश्मन बन गया, यानी उसे मेरे महबूब से मुहब्बत हो गई.

मय वह क्यो बहुत पीते, बज्मे गैर मे, यारब,
आज ही हुआ मजूर, उन को इम्तिहां अपना

हे ईश्वर अगर उन्हें अपनी शराबनोशी का इम्तहान ही लेना था तो उन्होने गैर की महफिल क्यो चुनी ? क्या इस के लिए उन्हें कोई और समय न मिलता ? मुझ से यह नहीं देखा जाता कि वह शराब के नशे में गिरें और हमारे दुश्मन उन्हे अपने हाथो का सहारा दे कर सभाले.

मजर इक बलंदी पर, और हम बना सकते,
अर्श से इधर होता, काश कि मका अपना

काश हमारा मकाम आकाश से इधर होता तो हम उसे और ऊचाई पर बनाते पर क्या करें हमारा मकाम तो पहले ही आसमान से भी ऊपर है. अब और ऊचाई कहां से लाएं.

दें वह जिस कदर ज़िल्लत, हम हंसी में टालेंगे,
बारे आश्ना निकला उन का पासबा अपना

उनके दरवाजे का पहरेदार हमारा पुराना परिचित निकल आया. इसलिए अब वह यदि हमें अदर जाने से रोकता है या अपमानित करता है तो हम उस की किसी भी बात का बुरा न मानेंगे और उस की हर बात हसी में टाल देंगे. क्योकि वह हमारा पुराना जानने वाला है

दर्दे दिल लिखूं कब तक, जाऊं उन को दिखला दू,
उंगलिया फिगार अपनी, खामः खूचका अपना

मै अपना दर्दे दिल अब और कब तक लिखता जाऊं यहां तो

लिखते लिखते उंगलियां जख्मी हो गई हैं और कलम भी खून से तर हो गया है. उन्हें जा कर अपनी हालत क्यो न दिखा दूं शायद वह मेरी हालत देख कर मुझ पर कुछ तरस खाए. और यह समझ सकें कि मैं कितने अरसे से अपनी मुहब्बत की दर्द भरी व्यथा खून से लिख रहा हूं.

घिसते घिसते मिट जाता, आपने अवस बदला,
नगे सिज्द से मेरे, सगे आस्ता अपना.

मैं जो आप के चौखट के पत्थर पर रोज आ आ कर अपना माथा रगडता था उस के लिए आप ने मुफ्त में वह पत्थर वहा से हटा दिया. वह पत्थर तो मेरे सजदो से ही एक न एक दिन अपने आप घिस कर मिट जाता और आप को उसे उठाने का कष्ट भी न उठाना पड़ता. मतलब यह कि मेरे सजदो से पत्थर भी घिसते घिसते मिट जाता लेकिन आप पर कोई असर न हुआ.

हम कहा के दाना थे, किस हुनर में यकता थे,
वे सवव हुआ 'गालिव' दुश्मन आस्मा अपना

ऐ गालिब हम भला कहां के ऐसे अकलमंद और कला में बेमिसाल थे. यह आकाश तो मुफ्त में हमारा बैरी हो गया है. अगर वह केवल हमारा दुश्मन बना है तो इसलिए कि हम जैसा अक्लमंद और बडा शायर यहा दूसरा कोई नहीं है. अगर कोई दूसरा होता तो फिर दुनिया उस की दुश्मन न हो जाती ?

सुरम-ए-मुफ्त नज़र हूं, मेरी कीमत यह है,
कि रहे चशमे खरीदार पे एहसा मेरा.

मैं तो नजर के लिए एक वेदाम सुरमा हूं. मेरी किस्मत सिर्फ यह है कि लोग मुझे अपनी आखो में लगाए और उस से जो उन की आखो में रोशनी पैदा हो, उस के लिए मेरे एहसानमंद रहें मतलब यह

कि मेरी शायरी लाखो के दिल और आखो को रोशन करती है. और उस की लागत सिर्फ इतनी है कि वह मेरा एहसान मानते है.

रुख़सतेनालः मुझे दे, कि मबादा ज़ालिम,
तेरे चेहरे से हो ज़ाहिर, गमे पिन्हा मेरा

'रुखसते नाला मुझे दे' से मतलब है कि मुझे आह ओ फुगा करने की इजाजत दे ताकि मेरे अंदर जो गम का समुद्र है वह बह जाए. अगर वह मेरे सीने में ही रहा तो मुझे खतरा है कि कहीं मेरे गम की गभीरता को देख कर तेरा चेहरा भी गमगीन न हो जाए. अगर तेरे चेहरे से मेरा गम झलक आया तो उस में तेरी रुसवाई का डर है.

गाफिल ब वहमे नाज़ खुद आरा है, वर्नः या,
बेशान-ए-सबा[1] नही तुर्रः गियाह[2] का

ऐ गाफिल तू किसी वहम में पड़ कर यहां आया है और अपनी शान समझ रहा है, वरना इस दुनिया में एक तिनका भी हवा के बगैर नहीं हिल सकता. मतलब यह कि खुदा की मरजी के बगैर कुछ भी नहीं हो सकता

रहमत अगर कुबूल करे, क्या बईद है,
शर्मिदगी से उज्र न करना गुनाह का

अगर मै अपने गुनाहो की वजह से शरमिदा हो कर अपने गुनाहों का कोई बहाना पेश न करू तो कोई बडी बात नहीं है कि वह मेरे गुनाह मुआफ कर दे. यानी इनसान को सच्चाई मान लेने में कोई शरमिंदगी या बहाना न करना चाहिए. मुमकिन है कि तुम्हारी सच्चाई को देख कर तुम्हारे सब कुसूर माफ कर दिए जाएं.

---

१ हवा २ घास

मकतल को किस निशात से जाता हूं मैं, कि है,
पुर गुल खयाले ज़ख्म से, दामन निगाह का

मैं आज बड़ी खुशी के साथ कतलगाह की ओर जा रहा हूं इसे देख कर मेरा दामन जख्म लगने के ख्याल से फूलो से भरा हुआ है. याद रहे कि फूलो का रग भी सुर्ख होता है और घाव होने से जो लहू निकलेगा वह भी सुर्ख ही होगा. कहने का मतलब यह कि जख्मो से जो लहू वहेगा वह फूल बन कर नजरो में खिल रहा है.

जौर से बाज़ आए पर बाज़ आए क्या,
कहते हैं, हम तुझ को मुह दिखलाएं क्या

मेरा महबूब मुझ से कहता है कि बस अब मैं तुम पर जुल्म नहीं करूगा मुझे अपने ऊपर बड़ी शर्म आ रही है. ऐ, गालिब, मैं तुम्हें मुह दिखाने के काबिल नहीं रहा. गालिब कहते हैं कि उस का यह कहना कि अब वह हमें अपना मुह नहीं दिखाएगा, हम पर बहुत बडा जुल्म है. वह जुल्म करता था तो कम से कम हम उसे देख तो लेते थे.

रात दिन, गरदिश में है सात आस्मा,
हो रहेगा कुछ न कुछ, घवराएं क्या

रात दिन सातो आसमान चक्कर में है न जाने क्या मुसीबत ढाएगे लेकिन अब उस मुसीबत के खयाल से घबराने का भी कोई फायदा नहीं क्योकि कुछ न कुछ तो हो कर ही रहेगा.

लाग हो, उस को तो हम समझें लगाव,
जब न हो कुछ भी, तो धोका खाए क्या

अगर उस की हम से दुश्मनी भी हो तो हम समझें कि उस से कुछ सबध है. क्योकि हमारे लिए उस का सबध ही सब कुछ है. लेकिन उसे तो हम से दुश्मनी भी नहीं इसलिए इस धोखे में कब तक रहें

कि उसे हम से जरा भी संबध है

हो लिए क्यो नामः बर के साथ साथ,
यारब, अपने खत को हम पहुंचाए क्या

अपने महबूब को खत लिखा सो लिखा, लेकिन ऐसी भी क्या सुधबुध बिसारी कि चिट्ठीरसा (डाकिया) को खत दे कर खुद भी उस के साथ हो लिए. आखिर यह क्या माजरा है ? ऐ खुदा क्या अब हम खुद अपना खत अपने महबूब को दे दें क्योकि अब तो उस का घर भी नजदीक आ गया है.

मौजे खू सर से गुजर ही क्यो न जाए,
आस्ताने यार से उठ जाए क्या

अगर सिर से खून की नदी भी गुजर जाए तो भी हम अपने प्यारे महबूब की चौखट छोड कर नहीं जाएगे. अब आए तो जान की बाजी लगा कर ही आए है और कोई फैसला कर के ही जाएगे.

उम्र भर देखा किए, मरने की राह,
मर गए पर, देखिए, दिखलाए क्या

इस शेर का एक मतलब तो यह है कि उम्र भर हम मौत की राह देखते रहे. अब मर गए तो दिखाने को बाकी ही क्या रह गया है. यानी उस ने हमें उम्र भर तो मौत का रास्ता दिखाया है अब मरने के बाद न जाने क्या दिखाएगा. दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि अब तो मर गए अब देखने दिखाने को ही बाकी क्या रह गया.

पूछते है वह, कि 'गालिब' कौन है,
कोई बतलाओ, कि हम बतलाए क्या

अगर कोई जान बूझ कर अजान बन जाए तो क्या कहें ? वह हमें

जानत हुए भी सामने बैठे गैरों से पूछते कि गालिब कौन है किस का नाम है. ऐ दोस्तो तुम में से कोई बताता है या मैं स्वय बता दूं.

इशरते कतर. है, दरिया में फना हो जाना,
दर्द का हद से गुज़रना, है दवा हो जाना

पानी के एक कतरे की सब से बडी खुशनसीबी यह है कि वह दरिया में मिल जाए. यानी इनसान की इस से बडी और पहुच कोई नहीं हो सकती कि वह ईश्वरीय नूर का हिस्सा बन जाए. इसी तरह दर्द जब हद से गुजर जाता है तो आप अपनी दवा बन जाता है. आखरी मिसरा यही है कि ॰ खुद अपना इलाज है.

तुझ से, किस्मत में मेरी, सूरते कुफले अबजद[1],
था लिखा, बात के बनते ही, जुदा हो जाना

मेरे नसीब में ही यह लिखा था कि कुफले-अबजद की तरह मैं तुझ से मिलूं और फिर मिल कर बिछड जाऊं

दिल हुआ कशमकशे चार-ए-जहमत मे तमाम,
मिट गया घिसने में इस उक्दे[2] का वा हो जाना[3]

ग़मो को दूर करने के लिए जो कोशिश की अब वही कोशिश खुद एक मुसीबत बन गई है. ग़म तो क्या ही दूर होते, अपने दिल का ही काम तमाम हो गया है. यू समझ लो कि हम ने एक पहेली को हल करने की कोशिश की. वह पहेली तो हल न हो सकी अलबत्ता उसे हल करने की कोशिश में वह स्वय घिसते घिसते मिट गई

---

१ एक ऐसा ताला जिस में अक्षर अलग अलग लिखे हुए होते है इन अक्षरो को मिलाने से वह ताला खुल जाता है २ पहेली. ३ हल हो जाना, खुल जाना

अब जफा से भी है महरूम हम अल्लह अल्लह,
इस कदर-दुश्मने अरबाबे वफा हो जाना.

खुदा के लिए, वफा करने वालो के ऐसे दुश्मन तो न हो जाओ कि उन पे जुल्म करना ही छोड दो यही क्या कम था कि तुम ज़ुल्म किया करते थे और हम अपनी वफाओ पे अटल थे. क्योकि तुम दुश्मनी करते थे तो हमारी ओर ध्यान तो रहता था. अब तुम ने ध्यान भी देना छोड दिया इस से बड़ा जुल्म भला और क्या होगा ?

जोफ[1] से, गिरिय[2] मुबद्दल[3] ब दमे-सर्द हुआ,
बावर[4] आया हमें पानी का हवा हो जाना

तुम्हारे ग़म में रोते रोते हम इस क़दर कमजोर हो गए हैं कि हमारे आसू अब ठढी आहे बन कर रह गए है अब हमें इस बात पर विश्वास आ गया है कि पानी हवा बना जाता है

दिल से मिटना तिरी अगुश्त हिनाई का खयाल,
हो गया, गोश्त से नाखुन का जुदा हो होना

ऐ महबूब तेरी मेहदी से रगी उगलियो का ख़याल दिल से मिट जाना कुछ ऐसा ही है जैसे गोश्त से नाखून जुदा हो जाए.

है मुझे, अब्र-ए-बहारी का बरस कर खुलना,
रोते रोते गमे फुरकत मे, फना हो जाना

बहार का मौसम है. बादल पहले तो खूब बरसे और अब बरस कर खुल गए है यानी आसमान साफ हो गया है. मेरे नजदीक यह ऐसी ही बात है जैसे जुदाई के ग़म में रोते रोते मौत आ जाऐ.

---

१ कमजोरी. २ रोना. ३ बदलना. ४ यकीन.

वख्शे है जलव-ए-गुल ज़ौके तमाशः, 'गालिव',
चश्म को चाहिए हर रग में वा हो जाना

ऐ गालिब, फूलो की बहार जल्वो की दावत दे रही है इसलिए आख को हर रंग में खुला रहना चाहिए.

लिखता हू 'असद' सोज़ेशे-दिल से, सुखन-ए-गर्म,
ता रख न सके कोई मेरे हर्फ पे अगुश्त[1]

मेरा दिल गमो की जिस आग में जल रहा है उसी आग से मैं ने यह शेर कहे है. वही आग अपने इन शेरो में भर दी है कि कोई भी शख्स मेरे किसी शेर पर उंगली उठाने की जुर्रत न कर सके.

मुद गई, खोलते ही खोलते आखें, 'गालिव',
यार लाए मेरी वाली पे उसे, पर, किस वक्त

आखिर मेरे दोस्त उसे ले ही आए और मेरे सरहाने ला कर खडा कर दिया. लेकिन अफसोस उसे देखने की हसरत में मेरी आखें खुलते खुलते हमेशा के लिए वद हो गई और मै उसे न देख सका.

खान वीरा-साज़ि-ए-हैरत तमाशः कीजिए,
सूरते-नकशे कदम हू, रफ्त-ए-रफतारे दोस्त

हम ने अपने महवूब की रफतार जो देखी तो उस पे कुछ इस तरह मर मिटे कि खुद ही नकशे कदम (मिट्टी पे पाओ के बने हुए निशान) वन के रह गए है. घर बार सव कुछ भूल गए. और जिस तरह ज़मीन पे पाओ का निशान मिटने के लिए बनता है, उसी तरह अव हमारा भी यही अजाम है

---

१ उगली

इश्क में, वेदादे रश्के-गैर ने मारा मुझ,
कुश्तः-ए-दुश्मन हू आखिर, गरचः था बीमारे-दोस्त

मुझे रोग तो मुहब्बत का लगा हुआ था और उसी रोग के हाथो किसी न किसी दिन मुझे मरना था. लेकिन ग़ज़ब यह हुआ कि उस रोग के अलावा एक और बात जानलेवा हो गई. यानी मेरे दोस्त ने जो दूसरो से प्यार करना शुरू किया तो मै उसी ईर्ष्या के हाथो मारा गया.

गैर, यू करता है मेरी पुरसिश, उस के हिज्र में,
वे तकल्लुफ दोस्त हो जैसे कोई गमख्वारे दोस्त.

हमारा दुश्मन (वह शख्स जिस से आप की प्रेमिका को प्यार हो) इस तरह आ आ कर हमारी जुदाई के ग़म को भुलाने की कोशिश करती है जैसे हमारा बहुत ही हमदर्द हो. हम अपने महबूब के ग़म में बेहाल है और यह शख्स हमारा हाल पूछने आता है, मतलब यह कि जलते पर तेल गिरा रहा है

ता कि मै जानू, कि है उस की रसाई वा तलक,
मुझ को देता है, पयामे वाद -ए-दीदारे दोस्त

यह शेर पहले शेर के साथ ही पढ़ा ज़ाना चाहिए. वह सिर्फ आ आ कर हाल ही नहीं पूछता, बल्कि हमें यह यकीन दिलाता है कि कभी हम उस के साथ चलें तो वह हमें हमारे महबूब का दीदार करा देगा. इस तरह यह जता रहा है कि हमारे महबूब से इस की बेतकल्लुफ़ दोस्ती है.

गुलशन में ब्रदोबस्त बरगे-दिगर, है आज,
कुमरी का तौक हलक -ए-बेरूने दर है आज

आज फुलवारी का कुछ और ही रग है जो हम से हर बात छिपाई जा रही है और हम पर सब दरवाजे बंद कर दिए गए है.

आता है एक पार-ए-दिल हर फुगा के साथ,
तारे नफस, कमदे-शिकारे-असर, है आज

आज हर आह के साथ दिल का एक टुकडा निकल रहा है. यानी आज हर सास अपने महबूब पर अपना असर दिखाने पर तुल गई है.

ऐ आफियत, किनारा कर, ऐ इन्तिजाम चल,
सैलावे-गिरिय दर प-ए-दीवार-ओ दर, है आज

ऐ अक़्ल, अपना ठिकाना ढूड और ऐ 'असद', तू भी अपनी राह ले. हमारी आखो में आसुओ का सैलाव आज दीवारो तक को वहा ले जाएगा.

लो हम मरीज-ए-'अिश्क के तीमारदार है,
अच्छा अगर न हो, तो मसीहा का क्या 'अिलाज

इश्क के रोगी की हालत बहुत नाजुक हो गई तो फरमाया कि अच्छा लो हम उस की देखभाल करते है लेकिन 'ग़ालिब' कहते हैं कि अगर रोगी अब भी अच्छा न हुआ तो फिर मसीहाई किस काम की ? फिर मसीहा के इलाज से क्या फ़ायदा !

हुस्न गमज़े की कशाकश से छुटा, मेरे वाद,
वारे, आराम से है अहले-जफा, मेरे वाद

जब तक मैं जिंदा था तो दुनिया में हर एक खूबसूरत चेहरा इशारो और न जाने किस किस कशमकश में उलझा हुआ था. अब मैं मर गया तो इन खूबसूरत लोगो को इस उलझन से नजात मिल गई और चूकि अब इन की अदाओ से तड़पने वाला मेरे बाद और कोई नहीं है, इसलिए यह जालिम अब ख़ुदा के फ़ज़ल से आराम से है.

मन्सब-ए-शेफ़्तगी के कोई काबिल न रहा,
हुई माज़ूलि-ए-अदाज़-ओ-अदा मेरे बाद

अब मेरे बाद दीवानगी और आशिक़ी के फ़र्ज संभालने वाल और कोई नहीं रहा. लिहाज़ा हुस्न वालो ने अब नाज़ो अदा दिखान छोड़ दिया है.

शम'अ बुझती है, तो उस में से धुआ उठता है,
शोल.-ए-इश्क सियहपोश हुआ, मेरे बाद

जिस तरह से कि शमा बुझती है तो उस में से धुआं उठता है. उसी तरह मेरे मरने के बाद मेरी मुहब्बत का चिराग़ गुल हो गया है और खुद इश्क मेरा सोग मना रहा है.

खू है दिल खाक में, अहवाल-ए-बुता पर, यानी,
उन के नाखुन हुए मुहताज-ए-हिना, मेरे बाद.

मेरी मौत के बाद मुझे कब्र में हसीनो का हाल मालूम हुआ तो मेरा दिल ख़ाक में मिल कर भी लहू लुहान हो उठा. क्योंकि जब मैं ज़िंदा था तो हसीन मेरे दिल के लहू से अपने नाख़ुनो को रग लिया करते थे. अब चूंकि मैं मर गया हूं इसलिए, सुना है कि अब उन के नाख़ुन उस रग के लिए तरस गए हैं, इसी एहसास से मेरा दिल कब्र में भी ख़ूनख़ून हो रहा है.

दर खुर-ए-अर्ज़ नही जौहर-ए-बेदाद कुजा,
निगह-ए-नाज़ है सुरमे से ख़फा, मेरे ब'द

मेरी मौत के बाद निगाहे-नाज़ को अपनी अदाओ का शिकार बनाने के लिए कोई नज़र नहीं आ रहा. और उन की नज़रो की बेबसी बताई नहीं जा सकती कि उन्होने मेरी मौत के बाद आंखों में सुरमा तक लगाना छोड़ दिया है. यानी जब मैं ज़िंदा था तो सुरमे से वह आखें और

दिया—"

घर जब बना लिया तेरे दर पर, कहे बग़ैर,
जानेगा अब भी तू न मेरा घर, कहे बग़ैर

जब तुझ से बग़ैर पूछे हम ने तेरे दरवाज़े पे अपना घर बना लिया हैं तो क्या तू अब भी यही कहा करेगा कि तुझे मेरा घर मालूम नहीं है यानी कहते हैं कि क्या अब भी तू मेरे कहे बग़ैर मेरा घर नहीं जानेगा ?

कहते हैं जब रही न मुझे ताकत-ए-सुख़न,
जानू किसी की बात मैं क्यो कर, कहे बग़ैर

जब उन से अपना हाल कहते कहते मेरा यह हाल हो गया कि मुझ से कुछ कहा ही न जाता था तो वह किस सादगी से फरमाने लगे कि तुम ने तो चुप साध ली है. आख़िर मैं किसी की बात कहे बग़ैर कैसे जान लू ?

काम उस से आ पडा है, कि जिस का जहान में,
लेवे न कोई नाम, सितमगर कहे बग़ैर

अफसोस ! आज मुझे उस से काम आ पडा है जिसे लोग सितमगर (ज़ुल्म करने वाला) कह कर पुकारते हैं. ख़ुदा ही ख़ैर करे.

जी ही में कुछ नही है हमारे, वगरन हम,
सर जाए या रहे, न रहे पर कहे बग़ैर

उस से कहने को ही दिल में कुछ नहीं रहा वरना हम तो उन लोगो में से हैं जिन का सर रहे या कट जाए लेकिन जो बात दिल में है वह कहे बग़ैर नहीं रह सकते.

छोडूंगा मैं न उस बुते-काफिर का पूजना,
छोडे न ख़ल्क गो मुझे काफिर, कहे बग़ैर

ख़ुदा के सिवा किसी दूसरे की पूजा करना पर मैं अपने

महबूब को पूजना नहीं छोड़ सकता चाहे दुनिया वाले इस बात पर मुझे काफ़िर ही क्यो न कहें. यानी मुहब्बत में अपने ईमान पर भी आक्षेप आ जाए तो भी गवारा है.

मकसद है नाज़-ओ-ग़मज, वले गुफ्तगू में, काम,
चलता नही है, दश्न.-ओ-ख़जर, कहे बगैर

हमारे बात करने का मक़सद ही यह है कि हम उस के नाज़ और अदाओ को ब्यान करें. लेकिन अब इस का क्या कीजिए कि उस के नाज़ो अदा को तीर और ख़जर कहे बग़ैर काम ही नहीं चलता. यानी अगर और कोई शब्द कहें तो उस के नाज़ो अदा की तौहीन है. क्योंकि वह छुरे और भाले की तरह ही दिल में उतर आता है.

हर चद, हो मुशाहद.-ए-हक की गुफ्तगू,
बनती नही है, बाद -ओ-सागर कहे बगैर

यह शेर तसव्वुफता का और दार्शनिक रग का है. जब हम शराब या प्याले का ज़िक्र करते हैं तो भी उसी के असली नूर की तरफ ही इशारा करते हैं. शराब और प्याला, सुरूर और नशे के मतलब में आया है और सूफी लोग भी जब असली हकीक़त का ज़िक्र करते हैं तो उस में अजीब मस्ती और बेख़ुदी सी भरी होती है.

बहरा हू मैं, तो चाहिए दूना हो इल्तिफात,
सुनता नही हू बात, मुकर्रर कहे बगैर

ऐ महबूब, मैं तो बहरा हू इसलिए मुझ पर दुगुनी तवज्जुह दे जब तक मुझ से तू एक एक बात को दोदो तीनतीन बार नहीं कहेगा तब तक न सुन सकूगा, न समझ सकूगा. यानी महबूब को जो बात एक बार कहनी है जब वह उसे दो तीन बार कहेगा तो जाहिर है आशिक के दिल को कितनी ख़ुशी होगी दूसरे मिसरे में 'सुनता नहीं हू बात

मुकर्रर कहे बग़ैर' का मतलब है कि हर बात पे कहता हू "जरा मुकर्रर".

'ग़ालिब', न कर हुज़ूर मे तू बार बार अर्ज़,
ज़ाहिर है उन पे हाल तेरा सब, कहे बग़ैर

सिर्फ पहले मिसरे में हुज़ूर शब्द से मतलब है हिंदुस्तान के आख़िरी मुग़ल बादशाह बहादुरशाह 'ज़फ़र'.

क्यो जल गया न ताबे-रुख़े-यार देख कर,
जलता हू, अपनी ताकते-दीदार देख कर

मैं ने जब अपने महबूब के चेहरे से जल्वो का वह आलम देखा तो मैं जल क्यो न गया ? बुरा हो मेरी नज़रो का जिन में उस हुस्न को भी देखने की इस कदर ताक़त है कि देखती ही जा रही है. मुझे जलना तो उस के हुस्न को देख कर था लेकिन जल रहा हूं उसे देखने की अपनी ताक़त के हाथो.

आतश परस्त कहते हैं अहले जहा मुझे,
सरगर्म-ए-नालःहा-ए-शरर बार, देख कर

लोग मुझे हर वक्त आग जैसी आहें और फरियाद करते देख कर आग का पुजारी कहने लगे है. दूसरा मतलब यह भी है कि हमारी हर सास से शोले निकल रहे है और इसी वजह से लोग हमें आग का पुजारी कहने लगे है.

आता है मेरे कत्ल को, परजोशे-रश्क से,
मरता हू उस के हाथ में तलवार, देख कर

खुदा का लाख लाख शुक्र है कि वह मेरे क़त्ल को चले आ रहे है. लेकिन मैं तो उन के हाथ में तलवार देख कर ईर्ष्या से ही मरा जा रहा हू कि आज मुझे अपने महबूब के हाथो क़त्ल होने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है. इस शेर का एक मतलब और भी है. मेरी ज़िंदगी की सब से

बड़ी आकांक्षा यही थी कि वह मुझे अपने हाथो से क़त्ल करें, लेकिन आज जब कि वह मेरी आकांक्षा पूरी करने के लिए खुद आ रहे हैं तो मैं उन के हाथ में तलवार देख कर तलवार से जलने लगा हूं चूंकि वह हाथ तो मेरे गले में होने चाहिएं थे.

साबित हुआ है, गरदने मीना[1] पे खूने खल्क,
लरज़े है मौजे मै तेरी, रफ्तार देख कर

आज सुराही की गरदन पे पूरी दुनियां का ख़ून साबित हो गया है. क्योंकि तुम पी कर जो बहक चले हो तो तुम्हारी चाल पहले ही क़यामत से कम न थी अब तो नशे में पांव रखते कहीं हो पडता कहीं और है, इस वक्त तुम्हारी चाल का तो आलम है कि शराब की मौज भी तुम्हें देख कर कांप रही है.

वा हसरता[2], कि यार ने खेंचा सितम से हाथ,
हम को हरीसे-लज्ज़ते आज़ार देख कर

कितने अफ़सोस की बात है कि जब उन्होंने यह देखा कि वह हम पर जो ज़ुल्म करते है, हमें उन में भी ख़ुशी हासिल होती है, तो उन्होंने हम पर ज़ुल्म करना भी बंद कर दिया और हमें इस ख़ुशी से महरूम कर दिया.

बिक जाते है हम आप, मता-ए-सुख़न के साथ,
लेकिन, अयारे-तब-ए-खरीदार देख कर

अगर हमारी शायरी का क़दरदान वास्तव में शेर को समझने की योग्यता रखता है तो हम उस के हाथों अपनी शायरी के साथ खुद ही बिक जाते हैं.

---

१ सुराही की गरदन २ अफसोस ३ मैयार

जुन्नार[1] बाध, सुब्हे-ए-संद्दान[2] तोड डाल,
रहरौ चले है राह को, हमवार देख कर

खुदा तक पहुंचने के लिए जो कोई भी आसान रास्ता हो उसी को अपनाओ. अगर इस में मजहब भी बदलना पड जाए तो कोई बडी बात नहीं.

इन आबलो से पाव के, घबरा गया था मैं,
जी खुश हुआ है राह को पुर खार देख कर

मुहब्बत में मारे मारे फिरते रहने से पांवो में छाले पड गए थे और इन छालो से मैं घबरा गया था. अब रास्ते मे कांटे ही काटे देख कर जी खुश हुआ है, क्योंकि काटों से छाले अपने आप फूट जाएगे. मतलब यह कि मुहब्बत की मुश्किलें जुनूं को और ज्यादा बढ़ा देती है.

गिरनी थी हम पे बर्क-तजल्ली, न तूर पर,
देते है बाद-ज़र्फे-कदह्-ख्वार देख कर

इस्लामी विश्वास के अनुसार हज़रत मूसा ने कोहे तूर से खुदा को आवाज दी कि मुझे अपना जलवा दिखाओ. और आखिर जब उस ने अपना जलवा दिखाया तो हज़रत मूसा उस जलवे की ताब न ला सके और गश खा कर जमीन पर गिर पडे. 'ग़ालिब' फरमाते है कि पीने वाले का हौसला देख कर शराब दी जाती है. अगर तुम्हारे जलवो की बिजली भी हम पे गिरती तो हम संभले रहते.

सर फोडना वे वह, 'गालिबे'-शोरीद हाल का,
याद आ गया मुझे, तिरी दीवार देख कर

ऐ महबूब, तेरी दीवार देख कर मुझे याद आ गया है कि किसी

---

१ जनेऊ २ तसबीह.

जमाने में यहा एक पागल ग़ालिब ने अपना सर फोड़ के जान दे दी थी.

लरज़ता है मेरा दिल ज़हमते मेहरे दरख़्शा पर,
मैं हू वह कतर-ए-शबनम, कि हो खारे बयाबा पर

सारी दुनियां को रोशनी बख्शने वाले सूरज की परेशानी पर मेरा दिल कांप रहा है क्योंकि मैं तो शबनम का वह कतरा हूं जो जंगल में कांटों पे आ पड़ा हू. मैं किसी हरेभरे चमन में खिले हुए फूल पर शबनम का क़तरा नहीं हू. लेकिन यह सूरज मुझे भी सुखाने के लिए परेशान नज़र आ रहा है. अगर यह मुझे यूही रहने दे तो इस जंगल के कांटे फूल नहीं बन जाएगे और न ही मेरा मिटाना कुछ इसलिए जरूरी है कि मैं तो पहले ही कांटो की नोक पर पड़ा हूं.

मुझे अब देख कर अब्रे शफक आलूद., याद आया,
कि फुर्कत में तेरी, आतश बरसती थी गुलिस्ता पर.

महबूब से मिलाप हो गया है जुदाई की घड़ियां आखिर खतम हो गई. अब तेरे मिलने पर मुझे घिरे हुए बादल देख कर वह दिन याद आ गए जब तेरी जुदाई में आसमान हम पर आग बरसाता था.

बजुज़ परवाज़े-शौके-नाज़, क्या बाकी रहा होगा,
कयामत इक हवाए-तुद है ख़ाके-शहीदा पर

मुहब्बत में जो लोग शहीद हो गए, अब उन की कब्र पर आंधी और झक्कड चल रहे हैं और उन के लिए तो अब यही कयामत है कि उन की कब्रो से खाक तक उड़ चुकी है. महबूब के नाज़ पर मर मिटने के भाव के सिवा अब यहां उड़ने को कुछ नहीं रह गया.

न लड नासेह से, 'गालिब', क्या हुआ गर उस ने शिद्दत की,
हमारा भी तो, आखिर ज़ोर चलता है गरेबा पर

ऐ ग़ालिब, अगर नसीहत करने वाले जबरदस्ती आ आ कर हमें

उन्हे सूरज कहा गया है.

लेता, न अगर दिल तुम्हे देता, कोई दम चैन,
करता, जो न मरता कोई दिन, आह्-ओ-फुगा और

तुम्हे दिल देने की वजह ही से सारी उम्र रोते रोते गुजरी है. अगर मैं न मर गया होता तो जितने दिन और जिंदा रहता, इसी तरह रोने पीटने में गुजरते.

पाते नही जब राह्, तो चढ जाते है नाले,
रुकती है मिरी तब'अ तो होती है रवा और

जब तूफान को कोई रास्ता नहीं मिलता तो वह और शोर से ऊपर को चढ़ जाता है और आखिर उस चीज के ऊपर से बह निकलता है जो उस के रास्ते में रुकावट वन गई थी. यही मेरे शेर कहने की तबीयत का हाल है. अगर कहीं किसी तरह शेर कहने में कोई रुकावट पैदा हो जाय तो दिल के जज्बात और शिद्दत से शेरो के रुप में निकलते हैं.

है और भी दुनिया में सुखनवर वहुत अच्छे,
कहते है, कि 'गालिव' का है अदाज-ए-वया और

यू तो दुनिया में और भी अचछे अच्छे शायर है. परन्तु गालिब का अन्दाज-ए-बयान ही कुछ और है.

'असद' विस्मिल है किस अदाज का, कातिल से कहता है,
कि, मश्क-ए-नाज कर, खून-ए-दो-'आलम मैरी गरदन पर

गालिब किसी जमाने में अपना उपनाम असद भी लिखते थे. 'असद' किस अदाज का शेवा है कि अपने कातिल से कह रहा है तू सारी दुनिया को कत्ल करने का अभ्यास मुझी पे कर ले.

सितमकश मस्लिहत से हू, कि खूवा तुझ पे 'आशिक है,
तकल्लुफ वर तरफ, मिल जाएगा तुझ सा रकीव आखिर

मैं तो एक खास बात के लिए तेर सितम बर्दाश्त कर रहा हूं और वह बात यह है कि सभी खूबसूरत लोग तुझ पे अनुरक्त हैं और चूंकि मैं तेरा आशिक हूं, इसलिए वह मेरे दुश्मन हैं. आखिर उन्हीं में से मेरा कोई वाकिफ़ बन जाएगा और फिर तू तो नहीं लेकिन तुझ जैसा खूबसूरत दुश्मन मुझे भी मिल जाएगा.

लाजिम था कि देखो मिरा रस्तः कोई दिन और,
तनहा गए क्यो, अब रहो तनहा कोई दिन और.

मिर्जा ग़ालिब की यह ग़ज़ल मरसिया है जो कि उन्होंने अपनी बीवी के भाजे और अपने गोद लिए बेटे आरिफ़ की मौत पर कहा था. तुम्हे आख़िरी वक्त तक मेरा इतजार करना चाहिए था ऐ, आरिफ़ तुम अकेले क्यो चल दिए ? तुम ने मेरा इतज़ार क्यो न किया ? अब मरने के बाद भी तो मेरा रास्ता उस वक्त तक देखोगे, जब तक मैं तुम्हारे साथ नहीं आ मिलता तुम अकेले गए अब मेरी मौत तक वहां अकेले रहोगे. क्या बुरा था अगर तुम जीते जी ही मेरा इंतज़ार कर लेते और हम दोनो इकट्ठे ही मौत का सफ़र शुरू करते.

मिट जाएगा सर, गर तिरा पत्थर न घिसेगा,
हूं दर पे तिरे नासिय फरसा कोई दिन और

ऐ मौत मैं मरने की दुआए कर रहा हू और तेरे सामने पत्थर पे सर रगड़ रहा हूं कि तू मेरी दुआ सुन ले. लेकिन अगर मेरे सर रगड़ने से तेरा पत्थर न घिसेगा तो मेरा सर मिट जाएगा और अपने आप मेरी मौत हो जाएगी. अगर तू मेरी नहीं सुनती तो न सही, मैं भी अब कोई दिन का मेहमान हूं, और आखिर इसी तरह सर रगड़ते रगड़ते एक दिन चल बसूंगा.

आए हो कल और आज ही कहते हो, कि जाऊ,
माना, कि नही आज से अच्छा, कोई दिन और

ऐ आरिफ, तुम कल ही तो इस दुनियां में आए थे और आज तुम्हें जाने की पड़ गई. मैं ने माना कि कोई भी यहा हमेशा के लिए नहीं आता. अच्छा, कुछ दिन और रुक जाओ.

जाते हुए कहते हो, कयामत को मिलेंगे,
क्या खूब, कयामत का है गोया कोई दिन और

आरिफ़, तुम जाते हुए यह कहते हो कि अब क़यामत के दिन मिलेंगे. ए मेरे अज़ीज़ मेरे लिए तो यही दिन क़यामत का है मुझ पे तो आज ही क़यामत गुजर गई जब तुम हमेशा के लिए मुझ से जुदा हो गए. अब तुम किस क़यामत का ज़िक्र कर रहे हो ?

हा ऐ फलक-ए-पीर, जवा था अभी आरिफ,
क्या तेरा बिगडता, जो न मरता कोई दिन और

ऐ बूढे आसमान अभी तो आरिफ जवान ही था. अगर वह कुछ दिन और जिंदा रहता तो भला इस में तेरा क्या बिगड जाता. तू ने क्यो उसे अपना निशाना बनाया.

तुम माह-ए-शब-ए-चार दहुम थे, मेरे घर के,
फिर क्यो न रहा घर का वह नक्शा कोई दिन और

ऐ आरिफ, तुम तो मेरे घर के चौदहवीं के चांद थे. चौदहवीं के चांद की रोशनी तो कम से कम दो एक रात वैसी ही रहती है. लेकिन यह क्या हुआ कि तुम्हारे छिपते ही मेरे घर में अंधेरा ही अंधेरा हो गया.

तुम कौन से थे ऐसे खरे, दादा-ओ-सितद[1] के
करता मलेकुल मौत तकाजा, कोई दिन और

---

१ लेन देन

तुम लेनदेन के मामले में कब ऐसे खरे थे, यह क्या हुआ कि उधर मौत के फ़रिशते ने तुम से तुम्हारी जान मांगी और तुम ने हां कर दी. मौत के फ़रिशते को कुछ दिन तक और टालते मौत का फ़रिशता कुछ दिन तो रुक सकता था.

मुझ से तुम्हे नफरत सही, नय्यर से लड़ाई,
बच्चो का भी देखा न तमाशा कोई दिन और.

नैय्यर गालिब के शागिर्द भी थे और वह आरिफ़ को अपना अजीज भी जानते थे. आरिफ़! मान लिया, कि तुम्हे मुझ से नफ़रत हो गई थी और नैय्यर से लड़ाई थी, लेकिन अपने बच्चो का तो कुछ खयाल करते. इन नन्हीं मासूम जानो से तुम्हें क्या शिकायत थी.

गुजरी न बहरहाल यह मुद्दत खुशा-ओ-नाखुश,
करना था, जवामर्ग, गुज़ारा कोई दिन और.

ऐ आलम-ए-जवानी में चल बसने वाले, माना कि हम ने अपनी जिंदगी हंसते रोते किसी तरह तो गुज़ार ही दी है, तुम भी कुछ दिन और इसी तरह गुजारा कर लेते.

नादान है, जो कहते हैं क्यो जीते हो 'गालिब',
मुझ को तो है मरने की तमन्ना कोई दिन और.

ऐ ग़ालिब, जो लोग तुझ से यह कहते है कि आखिर अब किस लिए जी रहा है. अब तो मर जाना ही अच्छा है. तो वह बच्चो जैसी बातें सोचते है. हमारी किस्मत में अभी लिखा हुआ है कि हम अभी और मौत की तमन्ना करें.

हरीफ़-ए-मतलब-ए-मुश्किल नही फ़सून-ए-नियाज़,
दुआ क़ुबूल हो यारब, कि उम्र-ए-खिज्र दराज़

खिज्र मुसलमानो के एक पैग़म्बर का नाम है. खिज्र उस शख़्स को

भी कहते हैं जो अमर होता है, कभी नहीं मरता. ग़ालिब कहते हैं कि यारब, और तो मेरी कोई दुआ तू ने मानी नहीं. लें, अब यह दुआ करते हैं कि ख़िज्र की लम्बी उम्र पाए, यानी जिसे ख़ुदा ने पहले ही अमर बना रखा है, उसी की उमर की दुआ मांग रहे हैं.

न हो बहरजा बयाबां नवर्दे-वहमे-वजूद,
हनोज तेरे तसव्वुर में है नशेब-ओ-फराज

तू पहले अपने ख़याल और अपनी नजर की ऊचनीच ठीक कर ले. बग़ैर जाने बूझे इस दुनिया को 'माया' या वहम न कहता फिर.

न पूछ वुस'अत-ए-मय-खान. जुनू, 'गालिब',
जहा, यह कास[1]-ए-गर्दू, है एक खाक अदाज[2]

हमारे जुनू की वुसअतों का क्या ठिकाना. उस के सामने तो यह आसमान जो एक कटोरे की सी शक्ल का है, कूड़ा करकट जमा करने का बरतन है.

क्यो कर उस बुत से रखू जान अजीज़,
क्या नही है मुझे ईमान अजीज़

मैं ने उस हसीन पर जान कुरबान करना अपना ईमान (धर्म) बना लिया है. अब अगर मैं उस को जान न दू तो इस का मतलब यह होगा कि मुझे अपने ईमान का कोई लिहाज़ नहीं है

दिल से निकला, प न निकला दिल से,
है तेरे तीर का पैंकान[3] अज़ीज़

उस शोख ने हमारे दिल पर नजर का वह तीर मारा कि तीर तो

---

१ प्याला. २ कूडा करकट इकट्ठा करने वाली टोकरी. ३ तीर की नोक

दिल से निकल गया लेकिन उस का सिरा अटक गया है. यानी उस की याद की चुभन अब भी सीने में है.

ताब लाए ही बनेगी, 'गालिब',
वाक्या सख्त है और जान अज़ीज

हम पे जो कुछ गुज़री है अब उसे बरदाश्त करना ही पडेगा. क्योकि माना कि बहुत बडा सदमा था लेकिन अब जान भी तो प्यारी है. अगर यूही रोते रहे तो जान जाने का ख़तरा है.

न गुल-ए-नगम हू न परदः-ए-साज
मैं हू अपनी शिकस्त की आवाज.

मेरी शायरी मेरे दुख दर्द की जीती जागती तसवीर है, क्योकि जिंदगी कोई ऐसा साज नहीं है, जिस से गीत फूल बन बन कर निकलें.

तू, और आराइशे ख़मे काकुल,
मैं और अदेश हाए दूर-ओ-दराज

तुम तो अपनी ज़ुलफो के बल निकालने में मसरूफ़ हो और मैं इस ग़म में मर रहा हू कि न जाने इस का क्या नतीजा निकलेगा. इस शेर के कई मतलब हैं. एक तो यह कि जब तू ज़ुल्फें सवार कर बाहर निकलेगा तो न जाने कितने अपनी जान से हाथ धो बैठेंगे. दूसरा मतलब यह कि तुम्हें तो बनने सवरने की पडी हुई है और यहां जब तक तुम बन संवर कर तैयार हो जाओगे अपनी इतज़ार करने की ताक़त जवाब दे देगी और हम चल बसेंगे. एक मतलब यह है कि तुम्हें ज़ुलफो के बल निकालने से फुरसत नहीं और मैं बेकार अपनी तकदीर की गांठें सुलझा रहा हूं.

लाफ-ए-तमकी फरेब-ए-साद.-दिली,
हम है, और राज हाए-सीन गुदाज

सब्र करने की बात सिर्फ़ अपने आप को धोखा देने के बराबर होती है. क्योंकि हमारे सीने में जो राज छिपा हुआ है वह तो दिल को पिघला कर रख देगा. इस लिए कैसा सब्र और कहा तक.

है गिरफ्तारे उल्फते सैयाद,
वरन बाकी है ताकत-ए-परवाज

मुझे जिस ने गिरिफ़्तार कर रखा है, मै उस शिकारी की मुहब्बत में फस गया हूं, वरना उड़ कर आज़ाद होने की ताकत तो अब भी मुझ में मौजूद है.

मुझ को पूछा, तो कुछ गजब न हुआ,
मै गरीब और तू गरीब नवाज

अगर तू ने मेरा हाल पूछ लिया है तो इस में कोई गज़ब नहीं हो गया है. आख़िर ग़रीबों की ख़बर गरीबों को पालने वाला नहीं लेगा तो और कौन लेगा.

जवाने अहले-जबा में, है मर्ग-ख़ामोशी,
यह बात बज्म में, रौशन हुई ज़बानि-ए-शम्'अ.

अहले जबां (दिल्ली और लखनऊ के लोग) अपनी जबान में चुप को मौत कहते है और यह बात आज भरी महफिल में शमा की ज़बान से रोशन हो गई है. शमा ने बुझकर यह बात रोशन कर दी है कि चुप होना मौत की निशानी है.

जलता है दिल, कि क्यो न हम इक बार जल गए,
ऐ नातमामि-ए-नफस-ए-शो'लः बार, हैफ

अगर हमारी आहें हमें एक ही बार में जला कर राख कर देतीं तो बहुत अच्छा होता. अब दिल हर वक्त जलता है कि हम एक ही बार क्यो न जल गए ऐ आग की तरह दहकती हुई सासो! अफसोस की बात है.

आह को चाहिए इक उम्र, असर होने तक,
कौन जीता है तिरी जुल्फ के सर होने तक.

जब तक हमारी आहो में असर पैदा होगा तब तक हम चल बसेंगे क्योंकि खुद आह को असर बनने के लिए एक उम्र चाहिए.

दाम-ए-हर मौज में है, हल्क.-ए-सद कामे-निहग,
देखें क्या गुजरे है कतरे पे गुहर होने तक

पानी के एक क़तरे को मोती बनने के लिए जान पे खेलना पडता है. हर मौज पर उस के लिए एक जाल है और इस जाल का हर फदा मगरमच्छ की तरह मुह फाड़े खड़ा रहता है. देखिये, इतनी मुसीबतो से गुज़र कर पानी का कौन सा कतरा मोती बनता है. दूसरा मतलब यह है कि इनसान को सही मानो में इनसान बनने के लिए जानलेवा मरहलों से गुज़रना पडता है.

आशिकी सब्र तलब और तमन्ना बेताव,
दिल का क्या रग करू, खूने-जिगर होने तक

आशिकी कहती है कि सब्र करो और तमन्ना कहती है कि नहीं, जो कुछ होना है, अभी हो जाए. अब उन दोनो सूरतों में मेरे जिगर का खून तो होना ही था, क्योंकि अगर सब्र कर लू तो भी और न करूं तो भी. इस लिए ऐ दोस्त, अब तू ही बता कि जिगर के खून होने तक मैं अपने दिल का क्या रग करू ? यानी सब्र कर लू या कुछ और कर गुज़रूं.

हम ने माना कि तगाफुल न करोगे, लेकिन,
खाक हो जाएँगे हम, तुम को खबर होने तक

हम ने माना कि तुम्हे हमारा ध्यान आएगा, लेकिन उस वक्त तक तो हम मिट्टी में मिल चुके होगे.

परतव[1]-ए-खुर[2] से है शबनम को, फना की तालीम,
मैं भी हूं एक अिनायत की नजर होने तक.

सूरज की किरण शबनम के लिए मौत का पैगाम होती है. तुम भी इसी तरह मेरी तरफ एक इनायत की नजर कर दो. मैं भी तमाम हो जाऊंगा.

गम-ए-हस्ती का, 'असद' किस से हो जुज मर्ग इलाज,
शम'आ हर रंग मे जलती है सहर होने तक.

ऐ असद, जिंदगी के ग़मो का इलाज मौत के सिवा और क्या है? क्योंकि सुबह होने तक तो शमा को हर रंग में जलना ही है. कोई उस को जलते हुए देखे या न देखे. लेकिन जब तक सुबह नहीं हो जाती वह जलेगी, और जिस ग़म के हाथो शमा जलती है, वह उसी वक्त खत्म होगा जब शमा बुझ जाएगी.

आता है दागे-हसरते-दिल का शुमार याद,
मुझ से मेरे गुनह का हिसाब, ऐ ख़ुदा न मांग

दिल में लाखो हसरतें थीं. वह सब नाकाम हो कर दिल का दाग़ बन गई है. ऐ ख़ुदा, अब मुझ से मेरे गुनाहो का हिसाब न मांग, क्योंकि मुझे वह तमाम हसरतें याद आती है जो नाकामियो की वजह से मेरे दिल पर दाग़ बन कर जम गई है. इस शेर में ख़ुदा पर व्यंग्य है कि ऐ ख़ुदा, मेरा तो कोई अरमान अगर जिंदगी में पूरा हो जाता तो मैं अपना कुछ हिसाब देता भी.

है किस कदर हलाके-फरेबे-वफा-ए-गुल,
बुलबुल के कारोबार पे है खंद हा-ए-गुल

---

१ अक्स २ सूरज

फूल तो हस हस कर और मुसकरा मुसकरा कर खिल रहे हैं और उन्हें देख कर बुलबुल फरियाद कर रही है, लेकिन दरअसल फूलो को बुलबुल के इस रोने पर ही हसी आ रही है क्योकि उन की हसी और मुसकराहट सरासर धोखा है

आजादी-ए-नसीम मुबारक, कि हर तरफ,
टूटे पडे है हल्क-ए दामे-हवा-ए-गुल

अब गुलशन में हवा को पूरी पूरी आजादी है कि जिधर चाहे दन-दनाती फिरे, क्योकि हर तरफ फूलो के जाल टूट गए है और अब कोई भी नजर उन के जाल में नहीं फंसेगी. मतलब यह कि दुनिया की हवा दो दिलो को मिलने नहीं देती और उन को तबाह कर के आजादी के साथ उन की खाक उडाती है.

जो था, सो मौजे रग के धोके में रह गया,
ऐ वाए नाल-ए-लबे-खूनी नवाए गुल

दरअसल गुलाब की जो सुरखी थी, वह उस की फरियाद थी लेकिन लोगो ने असल बात तो जानी नहीं और फूलो के रंग के धोखे में आ गए.

बावजूदे यक जहा, हगाम. पैदाई नही,
है चरागाने-शविस्ताने-दिले-परवानः हम

हालाकि हमारे दिल में एक दुनिया आबाद है लेकिन जरा भी शोर नहीं है. हम तो परवाने के दिल की रोशनी का चराग है

मुझ को दयारे-गैर मे मारा, वतन से दूर,
रख ली मिरे खुदा ने, मिरी बेकसी की शर्म

खुदा ने मेरी बेकसी की लाज रख ली. अगर मैं इस बुरी हालत में अपने वतन में मरता, तो हर व्यक्ति मेरा परिचित होता और न

जाने लोग मेरी मौत के बाद मुझे और कितना जलील करते, लेकिन खुदा ने मुझे परदेस में ला कर मारा. अब यहा न कोई मेरा जानने वाला है न किसी को मेरी गुरबत का एहसास ही है कि मैं किस तरह मरा हू.

लू दाम[1] बख्ते खुफ्त.[2] से, यक ख्वाबे-खुश वले[3],
'ग़ालिब' यह खौफ है, कि कहा से अदा करू

मैं अपनी सोई हुई किसमत से एक रात की चैन की नीद तो उधार ले लूं और अपने दुनिया के सभी गमो से बेखबर हो कर सो रहू, लेकिन मुसीबत तो यह है कि वह क़र्ज़ जो लूगा उसे चुकाऊगा कैसे ?

वह फिराक और वह विसाल कहा,
वह शब-ओ-रोज़-ओ-माह्-ओ-साल कहा

अब न वह जुदाई का गम न वह मिलाप की खुशी न जाने कैसे दिन आ गए है वह पुराना जमाना न जाने कहा खो गया है

फुरसत-ए-कारोबार-ए-शौक किसे,
ज़ौक-ए-नज्ज़ार-ए-जमाल कहा

अब मुहब्बत के ख़याल में मस्त रहने की फुर्सत कहा ? अब सिर्फ उसी के हुस्न को देखते रहने का शौक कहा है ? यानी जिंदगी की धारा ही बदल के रह गई है

दिल तो दिल, वह दमाग भी न रहा,
शोरे सौदा-ए-ख़त्ता-ओ-ख़ाल कहा

दिल तो दिल अब वह पहले सा दमाग भी नही रहा जिस में किसी के हुस्न को देख कर फुतूर पैदा होता

---

१ कर्ज़ २ सोई हुई तकदीर ३ चैन की नीद

थी वह इक शख़्स के तसव्वुर से,
अब वो रानाइ-ए-ख़याल कहा

मेरे दमाग़ में जो हर वक्त ताजगी सी रहती थी, वह किसी की याद के साथ थी अब न उस की याद बाक़ी है, न तबीअत की रंगीनी.

ऐसा आसा नही, लहू रोना,
दिल मे ताकत, जिगर में हाल कहा

ठीक है पहले मैं जुदाई के ग़म में ख़ून के आंसू रोता था, लेकिन उन आसुओ में इतना लहू बह चुका है कि अब दिल और जिगर दोनो निढाल हो चुके हैं इसलिए अब मेरे लिए खून के आसू रोना पहले जैसी आसान बात नहीं है

हम से छूटा किमार-खान.-ए-'अिश्क,
वा जो जावे, गिरह में माल कहा

अब यदि हम मुहब्बत की बाजी में दाव लगाने की जुर्रत करें तो पल्ले माल ही क्या है वह दिल, वलवले, उमंगें, सब कुछ तो हम हार बैठे, अब क्या लगाएं ?

फिक्रे दुनिया में सर खपाता हू,
मैं कहा और यह ववाल कहा

अब मैं दो वक्त की रोटी के ग़म में सिर खपाता हूं. भला मुझे इन बातो से क्या मतलब ? मैं तो महबूब के ग़म में सुबह शाम डूबा रह सकता था लेकिन अब ऐसी आ पडी है कि मुझे वह काम करना पड रहा है जो मेरे बस का रोग नहीं है

मुज़महिल हो गए कुवा, 'गालिव',
वह अनासिर मे एतदाल कहा

अब जिस्म हर तरह से निढाल हो चुका है, क्योंकि अनासिर में तो

वज़न ही नहीं रहा.

की वफा हम से, तो गैर उस को जफा कहते हैं,
होती आई है, कि अच्छो को बुरा कहते हैं

अब तू ने हम से वफा की है तो हमारे दुश्मन इसे जफा कह रहे हैं लेकिन इस में घबराने की कोई बात नहीं है, क्योंकि दुनिया में हमेशा अच्छो को बुरा ही कहा गया है.

आज हम अपनी परीशानि-ए-ख़ातिर उन से,
कहने जाते तो है, पर देखिए क्या कहते है

आज हम अपना हाल उन्हें सुनाने तो जा रहे है लेकिन न जाने वहा पहुंच कर कुछ कहने का साहस होता या नहीं और अगर कुछ कहने की मजाल हुई तो भी न जाने उस के तेवर देख कर क्या कह बैठें दूसरा अर्थ यह है कि हम अपने ग़म का हाल उन से कहने जाते रहे हैं लेकिन अब देखिए वह हमारा हाल सुन कर क्या कुछ हमें सुनाते हैं.

अगले वक्तो के है यह लोग, इन्हे कुछ न कहो,
जो मै-ओ-नगम. को, अदोहरुवा कहते हैं

इस गजल के हर शेर का एक न एक मिसरा उर्दू भाषा का एक-एक मुहावरा बन चुका है. वह लोग जो शराब और सगीत को ग़म गलत करने का साधन कहते है उन्हें शराब और सगीत के बारे में कुछ ज्ञान नहीं है. उन की बातें सुन कर ख़फा नहीं होना चाहिए. यह लोग अगले वक्तो के है, इन से तर्क करने का कोई लाभ नही यह जो कुछ कहते हैं उस पर इन्हें बुरा कहने की जरूरत नहीं, बल्कि उन की बातें एक कान से सुनो और दूसरे से निकाल दो.

दिल में आ जाए है, जो होती है फुरसत गश से,
और फिर कौन से नाले को रसा कहते हैं

उस की याद में हम रोते रोते गश खा कर बेहोश हो जाते हैं तो उस की याद का भी अहसास नहीं रहता, लेकिन जैसे ही हम होश में आते हैं उस की याद फिर दिल में जाग उठती है और हम रोने लगते हैं. इस तरह फिर बेहोश हो जाते हैं ग़ालिब इस हालत में भी एक सफलता ढूढ़ते है और कहते हैं कि चूकि हमारी आहो से उस की याद दिल में आ जाती है, इसलिए हमारे रोने में असर है. क्योंकि बेहोशी के आलम में न तो हम रोते हैं न उस की याद होती है, मतलब यह कि हमारी आहें इतनी बेअसर नहीं हैं.

इक शरर दिल में है, उस से कोई घबराएगा क्या,
आग मतलूब है हम को, जो हवा कहते हैं

हमारे दिल में एक चिनगारी है, लेकिन इस से घबराने की कोई बात नहीं है, क्योकि इसी से तो हम जिन्दा हैं और चूकि चिनगारी बगैर हवा के भडक नहीं सकती, इसलिए हम इसी आग को हवा कहते हैं.

देखिए लाती है उस शोख़ की नख़वत,[1] क्या रग,
उस की हर बात पे हम, नामे ख़ुदा कहते हैं

हम उस शोख की हर बात पे वाह वाह सुबहान अल्लाह कहते हैं. देखिए हमारी इस दाद से उस का ग़ुरूर क्या गुल खिलाता है. इस का एक और भी मतलब है वह यह कि उस की हर बात पे हम खौफ के मारे ख़ुदा का नाम लेते हैं. देखिए उस का यह ग़ुरूर क्या रग लाता है.

'वहशत'-ओ-'शेफ्त.' अब मरसिय कहवे शायद,
मर गया 'गालिब'-ए-आशुफ्त-नवा, कहते हैं

इस शेर में वहशत और 'शेफता' दोनो अलग अलग अर्थ लिए हुए हैं.

---

१ ग़ुरूर

एक तो यह कि 'वहशत' और 'शेफता' दोनो मिर्ज़ा ग़ालिब के प्रिय शिष्यों में से थे. सो इस शेर का एक मतलब तो यह हुआ कि जमाने में चर्चा है कि ग़ालिब चल बसा. अब 'शेफता' और 'वहशत' शायद मरसिया लिखेंगे. दूसरा मतलब यह है कि ग़ालिब ने दूसरे मिसरे में आशुफ्ता नवा को लिख कर 'वहशत' और 'शेफता' को लफजी मानी भी दिए है. आशुफ्ता नवा का मतलब होता है वह व्यक्ति जो पागलपन की बातें करे. ग़ालिब कहते है कि चूकि अब पागलपन की बातें करने वाला ग़ालिब मर गया है इसलिए मुमकिन है कि पागलपन और जुनून खुद ग़ालिब का मरसिया लिखें. क्योंकि अब पागलपन और जुनून की बातें करने वाला कोई और रहा ही नहीं.

मुमकिन नही, कि भूल के भी आरमीदा[1] हू,
मैं दश्त-ए-गम में आहु[2]-ए-सैयाद-दीदा[3] हू

मैं तो भूल के भी आराम नही कर सकता. मैं तो गम के जंगल का वह हिरण हू जिस ने शिकारी को देख लिया है, इसलिए अब मेरे आराम करने का सवाल ही पैदा नहीं होता.

जा लब पे आई, तो भी नशीरी हुआ दहन[4],
अज्र-बस कि तलखि-ए-गमे हिजरा चशीदा[5] हू

मैं ने जुदाई के ग़मो की कडवाहट इस कदर चख ली है कि जब जुदाई के गमो की वजह से मेरी जान भी जुबान पर आ गई तो भी मिठास का एहसास न हुआ जान चूकि प्यारी होती है, इसी लिए उसे मीठा कहा गया है.

नै सुब्ह से इलाका न सागर से राब्ता,
मैं मारिज़-ए-मिसाल में, दस्त-ए-बुरीदा हू.

---

१ आराम करने वाला २ हिरण ३ शिकारी को देखने वाला
४ ज़बान ५ चखने वाला

मुझे न माला से कोई काम, न शराब के प्याले से. मै तो मिसाल के तौर पर एक कटा हुआ हाथ हू यानी मै इस कदर जिदगी में अलग थलग हो कर रह गया हू कि न भक्ति से काम है न शराब पीने से.

हरगिज़ किसी के दिल मे नही है मिरी जगह,
हू मै कलाम-ए-नग्ज़, वले नाशुनीदा हू

इस मे क्या शक है कि मेरे लिए किसी के दिल में जगह नहीं है. अगरचे मै एक बहुत बडा और दिल को पसंद आने वाला शायर हूं मगर मेरे शेर अभी तक तो किसी ने सुने भी नहीं.

आबरू क्या खाक उस गुल की, कि गुलशन मे नही,
है गरेबा नग-ऐ-पैराहन, जो दामन मे नही

वह फूल जो बाग में नहीं है, उस की खाक भी इज्जत नहीं है. इसी तरह वह गरेबान जो दामन में नहीं है, वह लिबास के लिए शरम का कारण है. क्योकि गरेबान की इज्जत इसी में है कि आशिक के हाथो उस की धज्जिया उड़ें.

जो'फ[1] से ऐ गिरिय[2], कुछ बाकी मिरे तन में नही,
रग हो कर उड गया, जो खू कि दामन में नहीं.

ऐ गिरिया मै इतना कमजोर हो चुका हूं कि मेरे तन में कुछ भी बाकी नहीं है अब अगर मेरे दामन में लहू के धब्बे नजर नहीं आते तो जितना खून मै ने आसुओं के साथ बहाया था और जो मेरे दामन पर जम गया था वह तो अब तक रग हो कर उड चुका है.

रौनक-ए-हस्ती है, 'अिश्क-ए-खान -वीरा साज़ से,
अजुमन बेशम्'अ है, गर वर्क खिरमन मे नही

---

१ कमजोरी २ रोनापीटना

जिन्दगी की रौनक़ उसी इश्क़ के दमख़म से है जो घरो को उजाड के रख देता है. अगर घास फूस में विजली न हो तो महफिल में शमा नहीं जल सकती. इश्क भी वह विजली है जो बसे हुए घरो को उजाड़ता है लेकिन इस के लिए घरों की रौनक वहुत जरूरी है

वस कि है हम इक वहार-ए-नाज के मारे हुए,
जलवः-ए-गुल के सिवा, गर्द अपने मदफन में नही

हम तो उस हसीन के मारे हुए है जो वहारो की तरह खूबसूरत है. इसलिए हमारी कब्र में भी फूलो के जलवो के सिवा और कोई गर्द नहीं.

हो फिशार-ए-ज़ो'फ में क्या नातवानी का नुमूद,
कद के झुकने की भी गुजाइश मिरे तन में नही

मैं इस कदर कमजोर हो चुका हू कि अब अपनी कमजोरी को जाहिर भी नहीं कर सकता. और कमजोरी की दलील यह पेश की गई है कि कद इतना झुक गया है कि अब और ज्यादा झुक ही नहीं सकता.

थी वतन में शान क्या 'गालिब' कि हो गुर्वत मे कद्र,
वेतकल्लुफ, हू वह मुश्त-ए-खस कि गुलखन में नही.

ऐ 'ग़ालिब' मेरे अपने वतन में ही मेरी क्या इज्जत थी जो अब परदेस में कदर की जाती. घास की अस्ल जगह तो भट्टी है लेकिन मैं वह मुट्ठी भर घास हू जो भट्टी में भी नहीं और ठीक तरह से जल भी नहीं सकता. यो ही हवा के साथ तिनका तिनका हो कर दर दर फिरूंगा.

'ओह्दे से मद्ह-ए-नाज़ के, वाहर न आ सका,
गर इक अदा हो, तो उसे अपनी कज़ा कहू

मैं तो उस की अदाओ का परिचय करने का भी फर्ज परी तरह अदा नहीं कर सका. कोई एक अदा होती तो तारीफ भी कर देता. वहां तो हर पल नई अदा है, किस किस की तारीफ करू ?

ज़ालिम मिरे गुमा से मुझे मुनफ'अिल न चाह,
हय, हय, ख़ुदा न करदः, तुझे बेवफा कहू

मुझे शक तो यही है कि तू बेवफा है. लेकिन खुदा न करे कि मैं कभी तुझे बेवफ़ा कहू, इसलिए तू मेरी शर्म पे न जा बल्कि जो कुछ कह रहा हूं उसी को मान.

मेह्रबा हो के बुला लो मुझे, चाहो जिस वक्त,
मैं गया वक्त नही हू कि फिर आ भी न सकू

महबूब ने आशिक को छोड़ दिया है. और आशिक कह रहा है कि मैं कोई गया वक्त नहीं हूं कि फिर लौट के नहीं आ सकता. तू जब भी मुझ पे मेहरबां हो के मुझे बुलाएगा मैं चला आऊंगा.

ज़ह्र मिलता ही नही मुझ को, सितमगर वरन,
क्या कसम है तिरे मिलने की, कि खा भी न सकू

महबूब ने आशिक़ से मिलने की कसम खा रखी है. आशिक करता है कि तेरी जुदाई में मरने के लिए जहर भी नहीं मिलता वरना क्या जहर भी तेरे मिलने की कोई कसम है जिसे मैं खा न सकूं. एक मतलब यह भी है कि, ऐ सितमगर, मुझे जहर मिलता ही नहीं, वरना तू ने जो मिलने की कसम खा रखी है, क्या इस के लिए जहर भी न खा सकूगा ?

हम से खुल जाओ, बवक्त-ए-मै परस्ती एक दिन,
वरन हम छेडेंगे, रख कर 'अुज़्र-ए-मस्ती एक दिन

तुम हम से किसी दिन शराब पीते हुए खुल जाओ. यानी बेतकल्लुफ़ हो जाओ. वरना हम किसी दिन नशे में होने का बहाना करके तुम्हें तंग करेंगे.

गर्र ए-औजे विना-ए- 'आलम-ए-इम्का न हो
इस बलदी के नसीबो मे है पस्ती, एक दिन.

दुनिया में जो चीजे आज बहुत बुलद है, उन्हें इस बुलदी पर ग़ुरूर नहीं करना चाहिए, क्योंकि किसी न किसी दिन इन को भी पस्ती पे उतरना पडेगा.

कर्ज की पीते थे मै, लेकिन समझते थे, कि हा,
रग लाएगी हमारी फाक मस्ती, एक दिन.

मतलब सीधा सादा है कि हम उधार ले ले कर शराब पिया करते थे. लेकिन अपने दिल में जानते थे कि हमारी यह फाकामस्ती एक न एक दिन ज़रूर रग लाएगी. यानी हम इस उधार के हाथों किसी न किसी दिन ज़लीलो-खार ज़रूर होगे लेकिन शराब की लत हमें उधार पीने पे मजबूर कर देती है.

गालिब बहुत समय तक किसी से उधार ले ले कर शराब पीते रहे. आख़िर जब पैसे न अदा कर सके तो उस व्यक्ति ने मिर्जा ग़ालिब पर मुक़दमा कर दिया. मुक़दमा जिस कोतवाल की अदालत में दायर किया गया था वह भी मिर्जा ग़ालिब का हमउम्र शायर था. 'आजुरदा' तख़ल्लुस करता था और नाम था मुफ्ती सदरउद्दीन. ग़ालिब के चाहने वालो में से था. जब ग़ालिब उस की अदालत में पेश हुए तो आजुरदा को देखते ही यह शेर कह दिया. आजुरदा ने ग़ालिब का सारा क़र्ज अपनी जेब से चुका दिया और ग़ालिब को बदनाम होने से बचा लिया.

नगम हा-ए-गम को भी, ए दिल गनीमत जानिए,
वेसदा हो जाएगा, यह साजे हस्ती, एक दिन

अगर जिंदगी में ख़ुशी के नग़मे नहीं है तो ग़मो के नग़मो ही को ग़नीमत जानना चाहिए. क्योकि एक दिन यह साज भी खामोश हो जाएगा. इस शेर में ग़ालिब ने एक तो ग़मों को जिंदगी का साज कहा है, दूसरा मतलब यह भी है कि आख़िर एक दिन जिंदगी खतम हो

जाएगी, इसलिए अगर खुशिया नहीं है तो ग़म ही से संगीत निकालना चाहिए.

हम पर, जफा से तर्के वफा का गुमा नही,
इक छेड़ है, वगरन. मुराद इम्तिहा नही.

अगर हम उस के साथ वफ़ा करना छोड दें तो यह उस के साथ सरासर ज़ुल्म है और उसे इस बात पर तो शक तक नहीं हो सकता कि हम वफा की राह से मुंह मोड़ लेंगे. इस लिए यह जो हम पे इलज़ाम दे रहा था कि हम ने वफ़ा करना छोड़ दिया है, तो सिर्फ हमें छेड़ रहा है, हमारा इम्तिहान ले रहा है.

किस मुह से शुक्र कीजिए, इस लुत्फे ख़ास का,
पुरसिश है और पाए सुखन दरमिया नही.

वह हमारा हाल तो पूछ रहे है लेकिन ज़बान से नहीं, बल्कि नज़रो ही नजरो में. यह तो हम पर उन की ख़ास मेहरबानी है. इस मेहरबानी का शुक्रिया अदा करने के लिए किस मुंह से शुक्रिया अदा करें ?

हम को सितम 'अज़ीज़, सितमगर को हम 'अज़ीज़,
नामेह्रबा नही है, अगर मेह्रबा नही.

हमें उस के ज़ुल्म प्यारे है और इसी वजह से हम उस ज़ालिम को प्यारे है क्योंकि हम उस के ज़ुल्म बडे शौक से सह रहे है. अब वह चूकि ज़ुल्म कर रहा है, प्यार नहीं कर रहा, इस लिए वह हम पर मेहरबान तो नहीं है, लेकिन चूकि ज़ुलम तो कर रहा है इस लिए वह नामेहरबान भी नहीं है

पाता हू दाद उस से कुछ अपने कलाम की,
रूहुल-कुदूस[1] अगरचे, मिरा हमज़बा नही.

---

१ फरिश्ता जिबरईल.

मैं अपनी शायरी की दाद फरिशता जिबरईल जो कि मेरी जबान तक नहीं समझता उस से पाता हू फरिशते तो मेरी शायरी की दाद दे रहे हैं हालाकि वे मेरी जबान तक नहीं जानते लेकिन इस दुनिया के लोग मेरी कोई कद्र नही करते

मानें'-ए-दश्तनवर्दी कोई तदवीर नही,
एक चक्कर है, मिरे पाव मे ज़जीर नही

मुझे जंगलो की खाक छानते फिरने से कोई रोक नहीं सकता, क्योंकि मेरे पांव में चक्कर है, कोई जजीर नहीं है लेकिन पहला मिसरा शेर का, और ही मतलब दे रहा है 'कोई तदवीर नहीं है' से मतलब है कि लोगो ने मुझे जगल जगल घूमने से रोकने के लिए मेरे पाव में जजीर डाल दी है लेकिन जजीर भी मेरे पाव का चक्कर बन के रह गई है- इस लिए मुझे रोकने की कोई तदबीर नहीं है

शौक उस दश्त[1] मे दौडाए है मुझ को, कि जहा,
जाद गैर[2] अज़ निगह ए-दीद.-ए-तस्वीर[3] नही

मेरा शौक़ मुझे उस बयाबान में लिए लिए फिरता है जहां कि वीरानी का यह आलम है कि हर रास्ता किसी तस्वीर की आख की तरह हो कर रह गया है यानी हैरतभरी नजर बन के रह गया है- मतलब यह कि मैं जिन मजिलो पे घूम रहा हू वह भी हैरान हो कर मुझे देख रही है

है तजल्ली तिरी सामाने वुजूद,
जर्रे बे परतव-ए-ख़ुरशीद नही

ए ख़ुदा, हर जानदार चीज में तेरा ही जल्वा है अगर सूरज की

---

१ जगल २ रास्ता ३ तस्वीर की आख

रोशनी न हो तो जर्रा तक न चमक सके यह जो जर्रा चमकता हैं इस में भी तेरा नूर है

राज़े माशूक न रुसवा हो जाए,
वरन. मर जाने मे कुछ भेद नही

हम इसी लिए नहीं मर जाते कि हमारी मौत से हमारे माशूक़ की बदनामी होगी लोग कहेंगे कि ग़ालिब फ़्ला की मुहब्बत में घुलघुल कर मर गया बस यही वजह है कि हम जिंदा है वरना इस में और कोई राज की बात नहीं हैं

गरदिशे रगे तरब से डर है,
गमे महरूमि-ए-जावेद नही

हमें तो इस चार दिन की आनी जानी ख़ुशी का डर हैं हमें उस महरूमी का कोई ग़म नहीं जो कि अमर है मतलब यह कि चार दिन की ख़ुशी से कहीं अच्छी वह महरूमी हैं जो हमेशा रहती हैं

कहते हैं, जीते हैं उम्मीद पे लोग,
हम को जीने की भी उम्मीद नही

निराशा इस से बढ़ कर और क्या हो सकती है कि लोग आशा पर जीते हैं और हमें कोई आशा है ही नहीं

जहा तेरा नक्श-ए- कदम देखते हैं,
ख़याबा ख़याबा इरम देखते हैं

हमें जहा कहीं तेरे पाव का निशान नज़र आ जाता है, उसी में हम को जन्नत नज़र आ जाती है

तिरे सर्व कामत से, इक कद्द-ए-आदम,
कयामत के फितने को, कम देखते है

तेरा सर्व जैसा कद जो क़यामत ढा रहा है वह उस क़यामत से कहीं अधिक बढ़ कर है

तमाशः कर ऐ महवे आईन.दारी,
तुझे किस तमन्ना से हम देखते हैं

ऐ मेरे महबूब, तू जो हर वक्त शीशे में अपने आप ही को देखता रहता है, जब कि आस्मान पर बादल छाए होते हैं पी लिया करता हू.

बना कर फकीरो का हम भेस, 'गालिब',
तमाशा-ए-अहले करम देखते हैं

ऐ ग़ालिब, यह जो हम ने फ़क़ीरो का सा भेस बना रखा है तो हम कोई भिखारी नहीं हैं हम ने तो यह भेस इसलिए बनाया है कि दौलतमंद लोग अपने आप को सखी और दाता समझते हैं, उन का तमाशा देख सकें कि वह कितने पानी में हैं

कब से हू, क्या बताऊ, जहाने खराब में,
शबहा-ए-हिज्र को भी रखू गर हिसाब में

तुम यह क्या पूछ रहे हो कि मैं कब से इस दुनिया में मुसीबतें उठा रहा हू मैं यह बताने के लिए अगर जुदाई की रातो को भी हिसाब में रखू फिर तो यह बताना बिलकुल नामुमकिन सी बात हो जाएगी कि मै इस दुखभरी दुनिया में कब से तकलीफ उठा रहा हू

ता फिर न इंतिज़ार में नीद आए उम्र भर,
आने का वाद. कर गए, आए जो ख्वाब में.

आज वह मेरे सपनो में आए और दोबारा आने का वायदा भी कर गए ताकि अब मैं बैठा उन का इंतजार करता रहू और उम्र भर न सो सकूं

कासिद के आते आते, ख़त इक और लिख रखू,
मै जानता हू, जो वह लिखेंगे जवाब मे

इस से पहले कि सदेशवाहक आए मै क्यो न उस के नाम एक और ख़त लिख रखू? क्योकि मै जानता हू कि वह जवाब में क्या लिखेंगे दूसरे मिसरे के वर्णन के अदाज़ और शोख़ी ने इस शेर को कई अर्थ दे दिए है, यानी वह जवाब देंगे ही नहीं या वह लिख भेजेंगे कि हमें मिलने की फुरसत नहीं है या कि हम तुम्हारा मुह नहीं देखना चाहते, मिलना तो एक तरफ रहा

मुझ तक कब, उन की वज़्म मे आता था दौरे जाम,
साकी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में

आज तक उन की महफिल में मुझ तक शराब का प्याला कब आया था यह जो आज मुझे भी शराब का प्याला मिल गया है तो कहीं मेरे साक़ी ने शराब में कुछ मिला न दिया हो

जो मुनकिरे वफा हो, फरेब उस पे क्या चले,
क्यो बदगुमा हू दोस्त से, दुश्मन के बाब मे

मै अपने महबूब से इस बात पे क्यों बिगडू कि वह दूसरो से मुहब्बत करता है और मुझे ख़ातिर ही में नहीं लाता चूकि मेरा महबूब तो वफा से इनकार करता है, इसलिए उस पर किसी की भी मुहब्बत का धोखा कैसे चल सकता है?

मै मुज़तरिब हू वस्ल में, ख़ौफे रकीब से,
डाला है तुझ को वह्म ने, जिस पेच-ओ-ताब में.

ग़ालिब अपने महबूब से कह रहे है कि मै तो इस मिलाप की घड़ी में इसलिए परेशान हूं कि कहीं तुम्हारा कोई दोस्त न आ जाए और हमारे मिलाप में ख़लल न पड़ जाए, लेकिन तुम किस वहम में परेशान हो?

यानी क्या तुम्हें भी यही शक खाए जा रहा है कि तुम्हें मेरी परेशानी से यह शक हो रहा है कि मुझे किसी और से मुहब्बत है और तुम्हारे आ जाने पर उस के खयाल ने परेशान कर दिया है

में और हज़्ज़े वस्ल खुदासाज़ बात है,
जा नज्र देनी भूल गया, इज़तिराव मे

जब मुझे खबर मिली कि मेरा महबूब मुझ से मुलाकात करने पे राज़ी है तो इतना हैरान हुआ कि इस हैरानी में जान देना भी भूल गया. यानी खुशी ही में मर जाने की बात थी, लेकिन उस के मिलने की खबर ने इतना परेशान कर दिया कि मर भी न सका।

है तेवरी चढी हुई, अदर नकाव के,
है इक शिकन पडी हुई, तुर्फे-नकाव में

यह जो उस शोख़ के नकाब (बुर्क़े) पर बल पड गए हैं इसे देख कर मुझे उस के माथे की त्यौरियो का ख़याल आता है और वही त्यौरिया नकाब के बल की सूरत में उभर आई है.

लाखो लगाव, एक चुराना निगाह का,
लाखो बनाव, एक बिगडना 'अिताव में

उस ज़ालिम के एक बार के नजर चुराने में लाखो मुहब्बत छुपी हुई है और उस के गुस्से में लाखो बनावटें छुपी हुई हैं यानी दोनों में लगाव ही लगाव है

'ग़ालिब' छुटी शराब, पर अब भी, कभी कभी,
पीता हू रोज़े अब्र-शबे माहताब मे

यूं तो हम ने शराब पीना छोड दिया है लेकिन हा अब भी कभी कभी चादनी रात में तो पी लेता हू. यानी शराब छोड़ने का यह आलम है कि महीने मे पदरहबीस दिन अब भी पी लेता हू.

है आज क्यो जलील, कि कल तक न थी पसद,
गुस्ताखि-ए-फरिश्त. हमारी जनाब में.

इस्लामी विश्वास के अनुसार जब खुदा ने इन्सान को मिट्टी के पुतले के रूप में बनाया तो फरिश्तो को हुक्म दिया गया था कि इस के सामने सिर झुकाओ लेकिन इजराईल ने मिट्टी के पुतले के सामने सिर झुकाने से इनकार कर दिया था और खुदा ने उसे शैतान बना दिया. ग़ालिब फ़रमाते हैं कि जब कल तक (यानी जब दुनिया बनी ही थी) हमारे हुजूर फ़रिश्तो की गुस्ताखी भी क़बूल नहीं की जाती थी तो क्या कारण है आज हमें नजरो से इतना गिरा दिया गया है कि तुम तक कभी पहुंच नहीं होती

रौ में है रख्शे[1]-अुम्र, कहा, देखिए थमे,
नै[2] हाथ बाग पर है, न पा है रकाब मे

जिन्दगी का घोडा अपनी पूरी रफ्तार के साथ उड़ा जा रहा था न जाने यह कहां जा कर थमेगा जहा तक हमारा सवाल है, न तो हमारे हाथ बाग पर है न पाव रकाब में है, कि इसे रोक सकें इसलिए हम जिदगी के साथ उड़ते चले जा रहे हैं मतलब यह कि जिदगी जिस धारा में बहाए ले जाती है और हम बेबसी से उसी में बहते चले जा रहे हैं

अस्ल-ए-शहूद-ओ-शाहिद-ओ-मशहूद एक है,
हैरा हू, फिर मुशाहिद. है किस हिसाब मे

जब कि देखने वाला, नजर आने वाला और जिसे देखना है, वह चीज सब उसी का नूर है तो फिर देखना क्या है? सूफियाना शेर है

---

१ घोडा २ नही

है गैबे-गैब, जिस को समझते है सम शहूद,
है ख्वाब में हनोज़, जो जागे है ख्वाब में

जो हम समझते हैं कि हमें कुछ नजर आ रहा है वह तो देखा ही नहीं जा सकता यानी हमारा हाल बिल्कुल यह है कि सीने में अपने आप को जागता हुआ देख कर यह समझ रहे हैं कि हम वास्तव मे जाग उठे हैं लेकिन यह गलत है क्योकि हम अभी तक सो रहे हैं और महज सपने में जाग उठे हैं यह शेर भी सुफियाना है

हैरा हू, दिल को रोऊ कि पीटू जिगर को मैं,
मकदूर हो, तो साथ रखू नौहगर को मै

बडी मुश्किल है कि दिल को रोऊ कि जिगर को पीटूं अगर बन पडे तो अपने साथ एक मातम करने वाला मुलाजिम रख लू

छोडा न रश्क ने, कि तिरे घर का नाम लू,
हर इक से पूछता हू, कि जाऊ किधर को मैं

ईर्ष्या ने मुझे तेरे घर का नाम किसी के सामने न लेने दिया ताकि कहीं वह खुद ही वहा न पहुच जाए, इसलिए रास्ते में खडा हर व्यक्ति से यह पूछ रहा हू कि मै किधर जाऊ?

जाना पडा रकीब के दर पर, हज़ार बार,
ऐ काश, जानता न तिरी रहगुज़र को मै

अगर मुझे तेरे घर का रास्ता मालूम न होता तो कितना अच्छा होता, कम से कम मैं जलील होने से तो बच जाता अब जब भी तेरे घर जाता हू तो यही पता चलता है कि तू दूसरो के घर पे है और मुझे तेरी खातिर उस दुश्मन के दरवाजे पर जाना पडता है

लो, वह भी कहते हैं कि यह बेनग-ओ-नाम है
यह जानता अगर, तो लुटाता न घर को मैं·

मैं न उन के लिए जब अपना सब कुछ गवा दिया तो वह भी फरमाते हैं कि यह तो बेघर और बेइज्जत शख्स है अगर मुझे पहले यह पता होता कि वह यू कहेंगे तो मै उन के लिए अपना घरबार कभी न लुटाता,

चलता हू थोडी दूर, हर इक तेज रौ के साथ,
पहचानता नही ह अभी, राहबर को मैं

मैं अपनी जिदगी में वह भटका हुआ राही हूं जिसे अभी तक अपने सच्चे मार्गदर्शक की पहचान नहीं है जो भी कोई मुझे जरा तेज चलते हुए नजर आ जाता है मैं उसी के साथसाथ थोड़ी दूर तक हो लेता हूं, फिर कोई और नजर आ जाता है तो उस के साथ चल देता हू कि शायद मुझे मेरी जिदगी की मजिल तक पहुचा देगा इस शेर का एक और भी बहुत दर्दनाक मतलब है, कि किसी भी व्यक्ति को अपनी सही मंजिल का पता नहीं है

ख्वाहिश को, अहमको ने, परस्तिश दिया करार,
क्या पूजता हू उस बुते-बेदादगर को मैं

मैं तो उस जालिम की मुहब्बत में मारामारा फिर रहा हू और बेवकूफ लोग यह समझ रहे हैं कि मैं उस की पूजा करता हू

फिर बेखुदी मे भूल गया, राह-ए-कूए-यार,
जाता वगरन. एक दिन अपनी खबर को मैं

मुहब्बत की बेखुदी में मैं अपने दोस्त की गली का रास्ता ही भूल गया वरना एक न एक दिन जा कर अपनी खबर जरूर ले आता यानी वहा पहुच कर ही हम अपने होश में आते हैं लेकिन अब ऐसे पागल से हुए हैं कि उस गली का रास्ता ही भूल गए

अपने पे कर रहा हू कयास, अहले-दहर का,
समझा। दिल पिजीर मता'ए हुनर को मैं.

जिस तरह मै कला और शायरी की क़द्र करता हू, उसी तरह दुनिया वालो को भी मै ने ग़लती से अपने जैसा समझ लिया और यह ख़याल किया कि वह भी शायरी और कला की कद्र करते हैं

ज़िक्र मेरा, ब वदी भी, उसे मजूर नही,
ग़ैर की बात बिगड जाए, तो कुछ दूर नही

उस ज़ालिम को तो मेरी बुराई का ज़िक्र सुनना भी मंज़ूर नहीं है इसलिए वह लोग जो हर वक्त उस के सामने मेरी बुराई ही करते रहते हैं, अगर किसी दिन उन को मुह की खानी पडे तो कोई बडी बात नहीं.

हू जहूरी के मुकाबिल मे ख़िफाई 'गालिब',
मेरे दा'वे पे यह हुज्जत है कि मशहूर नही

ऐ ग़ालिब, यू तो मै फारसी के महान शायर जहूरी की टक्कर का शायर हू लेकिन जब मै यह बात करता हू तो लोग कहते है कि भई, जहूरी जितना मशहूर हुआ है, तुम उतने मशहूर नहीं हो जब तुम भी उतने ही मशहूर हो जाओगे तो तुम्हारा यह दावा हम मान लेंगे यानी दुनिया में लोग भेडचाल चलते है, कला की कद्र नहीं करते

कम नही वह भी खराबी मे प वुस'अत मा'लूम,
दश्त में, है मुझे वह ऐश, कि घर याद नही

यू तो मेरा घर भी कुछ कम वीरान नहीं है, लेकिन वह बियाबान की तरह बड़ा नहीं है. इसलिए मुझे बियाबान में इतना ऐश है कि घर की याद तक नहीं आती.

करते किस मुह से हो, गुरबत की शिकायत, 'गालिब',
तुम को बेमेह्रिए-यारान-ए-वतन याद नही.

ऐ ग़ालिब, अब परदेश में अपनी ग़रीबी को क्या बैठे रो रहे हो.

अपना दुखदर्द किसे सुना रहे हो क्या तुम्हें वह दिन याद नहीं जब तुम्हें जलील हो कर अपना वतन छोडना पडा था और अपने ही वतन के लोगो ने तुम्हारी बात तक न पूछी थी

दोनो जहान दे के, वह समझे, यह ख़ुश रहा,
या आ पडी यह शर्म, कि तकरार क्या करे

ख़ुदा ने तो हमें दोनो जहान बख़्श दिए है और अपने जी में यह समझ लिया कि हम खुश हो गए हम इस शर्म में मारे गए कि अब क्या बहस करें कि हमें यह दोनो जहान नहीं, सिर्फ तेरी ही जरूरत है

थक थक के, हर मकाम[1] पे दो चार रह गए,
तेरा पतः न पाए, तो नाचार[2] क्या करें

यूं तो ऐ ख़ुदा तेरा पता पाने की सब ने कोशिश की परन्तु सब ही थकहार बैठ गए तेरा पता अगर उन्हें न मिले तो क्या करें!

क्या शम'आ के नहीं है हवाख्वाह अह्ले बज़्म,
हो गम ही जा गुदाज़, तो ग़मख्वार क्या करें

शमा जो जलजल के घुली जा रही है तो क्या वह लोग जो इस की रोशनी में बैठे हुए है वह यह नहीं चाहते कि शमा जलजल के न बुझ जाए? यानी सब यही चाहते है कि शमा यूं जलजल के न बुझ जाए लेकिन जो ग़म शमा को जला रहा है, वह जानलेवा है तो फिर गमख्वार क्या करेंगे? मतलब यह कि हमारे दोस्त तो सैकडो है जो हमारी जिंदगी की दुआए मांग रहे है कि हम ज्यादा देर जिंदा रहें और अच्छी शायरी कर जाएं लेकिन यही शायरी तो असल में वह जानलेवा ग़म है जो हमें जला रहा है और आखिर उसी के हाथो हम एक दिन जल मरेंगे

---

१ जगह २ मज़बूर हो कर

यह हम जो हिज्र मे, दीवार-ओ-दर को देखते है,
कभी सबा को, कभी नामबर को देखते है

हम जो जुदाई में कभी दीवार और कभी दरवाजे की तरफ देख रहे है तो असल में हवा और चिट्ठी लाने वाले की राह देख रहे है कि दोनों में कौन उस का पैगाम लाता है

वह आए घर में हमारे, खुदा की कुदरत है,
कभी हम उन को, कभी अपने घर को देखते है

यह शेर तो हमारी जिंदगी में आम बोलचाल की भाषा बन चुका है- किसी भी मेहमान के आने पर उस की इज्जत के खयाल से हम यह शेर पढ देते हैं मतलब यह कि हमें अपने घर की खुशकिस्मती पर अभी तक यकीन नहीं आ रहा है कि वह कभी यहां भी आ सकते है, यह तो खुदा की क़ुदरत हो गई

नज़र लगे न कही, उस के दस्त-ओ-बाजू को,
यह लोग क्यो मिरे ज़ख्मे जिगर को देखते है

लोग मेरे जिगर के जख्मो को क्यो देख रहे है कहीं उस के हाथ को नजर न लग जाए क्योंकि यह जख़्म तो उसी ने डाला है

कोई कहे, कि शब-ए-मह में क्या बुराई है,
बला से, आज अगर दिन को अब्र-ओ-बाद नही

अगर आज दिन के वक्त आस्मान पर बादल नहीं छाए तो बला से- रात में तो चांदनी है इस म शराब पीने में क्या बुराई है

जो, आऊ सामने उन के, तो मरहबा न कहें,
जो जाऊ वा से कही को, तो खैरबाद नही

ऐसी बेरूखी भी क्या कि अगर उन से मिलने जाएं तो कोई मिलनसारी न दिखाए? 'आओ बैठो' तक न कहें और उठ के जाने लगू तो

कोई दुआसलाम न हो

कभी जो याद भी आता हू मैं, तो कहते हैं,
कि, आज बज़्म मे कुछ फितन:-ओ-फसाद नही

गालिब कहते है कि मेरे बारे में मेरे महबूब की इतनी ग़लत राए है कि अगर कभी भूले से उसे याद आ भी जाऊं तो कहता है कि भई, आज महफ़िल में कोई फसाद झगड़ा नहीं है चैन है यानी उस के नज़दीक हर झगडे की जड मैं ही हूं

जहा मे हो गम-ओ-शादी[1] बहम[2], हमें क्या काम,
दिया है हम को ख़ुदा ने वह दिल, कि शाद नही.

दुनिया में गम और शादी इकट्ठे होते होगे लेकिन हमें इस से क्या मतलब? हमें तो ख़ुदा ने वह दिल दिया है जो हमेशा उदास ही रहता है, कभी उसे खुश नहीं देखा

तुम उन के वादे का ज़िक्र उन से क्यो करो, 'गालिब',
यह क्या, कि तुम कहो और वह कहें कि याद नही

महबूब ने झूठा वादा किया तो गालिब उस से शिकायत करने गए. इस पर उस ने कह दिया कि भई हमें तो याद नहीं कि तुम से कब मिलने को कहा था ग़ालिब अब अपने आप से कह रहे हैं कि उन के वादे का उन से ज़िक्र क्या करना है? तुम कहते हो आप ने मिलने का वादा किया था और वह कहते हैं कि याद नहीं वादा करके न आने पर जो हमें दुख हुआ सो हुआ, अब उन के इस तरह वादे से ही मुकर जाने का और भी दुख पहुच रहा है, इसलिए बेहतर यही है कि बात ही न करो

आह का किस ने असर देखा है,
हम भी इक अपनी हवा बाधते हैं

---

१ खुशी २ इकट्ठे

कभी आहो में भी किसी ने असर देखा है हम तो बस मुफ्त में बैठे अपनी हवा बांध रहे हैं आहें करना और हवा बाधना उस में भी ग़ालिब ने एक ख़ास बात पैदा की है, क्योंकि आहें भी तो हवा में घुल जाती है इसलिए यह मतलब भी निकल सकता है कि हम ने इतनी आहें भरी है कि अपनी एक हवा बाध दी है

गलती-ए-म्हाए मज़ामी मत पूछ,
लोग नाले को रसा[1] बाधते हैं

लोग ग़लतफहमी में मुबतला है और समझते है कि आहो में असर होता है अगर कहीं होता तो हमारी आहें यू नामुराद न रहतीं

साद. पुरकार[2] है ख़ूबा[3], 'गालिब',
हम से पैमाने वफा बाधते है

सादा और पुरकार को इकट्ठा लिखने से छोटी सी बात बड़ी हो गई है हुस्न वाले इतने सादा नहीं है लेकिन इतने चालाक है कि हम से वफा के वादे कर रहे हैं और यह नहीं जानते कि हम उन के इन वादो की हकीक़त ख़ूब समझते हैं

ज़मानः सख़्त कम आज़ार है बजान-ए-'असद'
वगरनः हम तो तवक्को' ज़ियाद. रखते है

दुनिया ने तो हमें जितनी तकलीफें दी है वह हमारी आशा से कम ही निकलीं वरना हम तो बहुत ज्यादा उम्मीदें लगाए बैठे थे कि अभी जितने दुख मिले हैं इस से ज्यादा भी दुनिया हमें सताएगी

दाइम[4] पडा हुआ तेरे दर पर नही हूं मे,
ख़ाक ऐसी ज़िंदगी पे कि पत्थर नही हूं मै

---

१ पहुच २ चालाक ३ हसीन ४ हमेशा के लिए.

ऐसी जिंदगी पे लानत है कि मै इनसान हू पत्थर नहीं हू अगर पत्थर होता तो हमेशा तेरे दरवाजे पर पडा रहता और हर बार तेरे पांव से मेरा सर लगता दूसरा मतलब यह है कि क्या ही अच्छा होता अगर मै पत्थर होता यानी उस ने जितने दुख दिए है, उन्हे महसूस ही न करता और वहीं उम्र भर के लिए बेकार बैठा रहता लेकिन चूकि इनसान हू, इसलिए दुखी हो कर उठा आया हू

क्यो गरदिशे[1] मुदाम[2] से घबरा न जाए दिल,
इनसान हू, प्याल-ओ-सागर नही हू मै

शराब का प्याला हमेशा चक्कर में रहता है एक हाथ से दूसरे हाथ में घूमता रहता है फ़रमाते है लेकिन मै तो शराब का प्याला नहीं हू आखिर इनसान हू तकदीर ने इतने चक्कर दिए हैं कि आखिर तग आ कर घबरा गया हूं

यारब, ज़मान मुझ को मिटाता है किस लिए,
लौह-ए-जहा पे हर्फ़-ए-मुकर्रर नही हू मैं

यारब, आख़िर जमाना मुझ को क्यो मिटा रहा है? मै दुनियां की तख़ती पर कोई ऐसा अक्षर नहीं हू जो बारबार लिखा जाए

हद चाहिए सज़ा में, अकूबत के वास्ते,
आखिर गुनाहगार हू, काफिर नही हू मै

मुझे मेरे गुनाहों की जो सजा मिल रही है आख़िर उन की कोई हद होनी चाहिए ऐ ख़ुदा मै गुनाह करने का गुनाहगार हू लेकिन काफिर नहीं हू काफ़िर यानी वह शख़्स जो ख़ुदा को न मानता हो मै तुझे मानता तो हूं, लेकिन तू मुझे यू सजाए दे रहा है जैसे तेरे दरबार में

---

१ चक्कर २ हमेशा

खड़े रहे

जा फिज़ा है बादः, जिस के हाथ मे जाम आ गया,
सब लकीरे हाथ की, गोया रग-जा हो गई

शराब का प्याला जान डाल देने वाली चीज़ है लिहाजा जिस के हाथ में वह आ गया उस के हाथ की सब लकीरें जान डाल देने वाली बन गई. यानी उस की जान मुट्ठी में आ गई

हम मुवह्हिद[1] है, हमारा केश है, तर्के-रसूम,
मिल्लतें जब मिट गई, अज्ज़ा-ए-ईमा हो गई.

हम किसी धर्म को पराया नहीं समझते और उन अलगअलग धर्मों को छोड देना हमारी रस्म है क्योकि जब भी अलगअलग धर्म मिट जाते है तो अस्ल और सच्चे धर्म का हिस्सा बन जाते हैं. लिहाजा हम उसे सच्चा धर्म मानते है

रज से खूगर[2] हुआ इनसा, तो मिट जाता है रज,
मुश्किले मुझ पर पडी, इतनी कि आसा हो गई.

इनसान को अगर दुख दर्द सहन करनें की आदत पड़ जाए तो फिर कोई भी ग़म उसे दुखी नहीं करता क्योकि वह दुख उठाने का आदी हो चुका होता है इसी तरह मुझ पर इतनी मुश्किलें पड़ी है कि मैं मुश्किलो का आदी हो गया हू और मेरी सब मुश्किलें अपने आप आसान हो गई है.

यू ही गर रोता रहा 'ग़ालिब', तो अय अहले जहा,
देखना इन बस्तियो को तुम, कि वीरा हो गई.

अगर ग़ालिब तू इसी तरह रोता रहा तो तेरे रोने से सारी दुनिया

---

१ एक अल्लाह को मानने वाला. २ आदी.

तेरे आसुओ में बह जाएगी.

दीवानगी से, दोश पे ज़ुन्नार भी नही,
यानी हमारी जेब में इक तार भी नही.

हम ने मुहब्बत में दीवाना हो कर अपने कपड़ो की धज्जियां उडा दी है और इतनी उडाई कि हमारे लिबास का एक तार भी हमारे जिस्म पर बाकी नहीं रहा. अगर एक तार भी रहता तो हम उसे जनेऊ बना कर पहन लेते जिस से उस काफिर से हमारी मुहब्बत का पता चलता

मिलना तिरा अगर नही आसा, तो सह्ल है,
दुश्वार तो यही है, कि दुश्वार भी नही

सब से बडी मुश्किल तो यही है कि तेरा मिलना मुश्किल नहीं है, लेकिन इस के बावजूद हम तुझ से मिल नहीं पाते

बेइश्क उम्र कट नही सकती है, और या,
ताकत बकद्रे-लज़्ज़ते-आज़ार भी नही

मुहब्बत के बगैर जिदगी गुज़री तो क्या गुजरी लेकिन मुहब्बत में जो हमें दुख उठाने पडते हैं, उन्हें बरदाश्त करने की भी हम में हिम्मत नहीं है

शोरीदगी[1] के हाथ से, है सर वबाले[2] दोश[3],
सहरा में, ऐ खुदा, कोई दीवार भी नही

हमारा सर हमारे दीवानापन के हाथो हमारे कधो पर बोझ बना पडा है हम इस जंगल में मारेमारे फिरते है कि अगर यहा कोई दीवार हो तो उसी के साथ सर फोड कर मर जाए लेकिन रेगिस्तान में दीवार के होने का सवाल ही पैदा नहीं होता. इसी कारण यह पागल

१ दीवानगी. २ मुसीबत ३ कधा

पन नहीं जाता.

गुंजाइशे 'अदावते अग़यार इक तरफ़,
या दिल में ज़ोफ़ से, हवसे यार भी नही

मुहब्बत में हम पे इतनी मुर्दनी छा गई है कि गैरों की दुश्मनी की बात तो एक तरफ़ रही, यहा दिल में अपने उस दोस्त से मिलने की भी इच्छा नहीं रही.

इस सादगी पे कौन न मर जाए, ऐ खुदा,
लडते है और हाथ में तलवार भी नही

महबूब इतना सादा और भोला है कि बिना तलवार ही के वार करता है. यानी उस की तीखी चितवनो के वार किसी तलवार से कम नहीं है

देखा 'असद' को खलवत-ओ-जलवत में बारहा,
दीवानः गर नही है, तो हुशियार भी नही

हम ने असद को कई बार भरी महफ़िलो में और कई बार अकेले बैठे देखा है, वह अगर दीवाना नहीं है तो कुछ इतना होशियार भी नहीं

हज़ारो दिल दिये, जोशे जुनूने 'अिश्क ने मुझ को,
सियह[1] हो कर सुवैदा[2] हो गया हर कतरः खू तन में

मेरी मुहब्बत के जुनून ने मुझे हज़ारों दिल दिए हैं और इस दावे के सबूत में मेरे खून का हर क़तरा जलजल कर काले तिल के समान हो गया है

मज़े जहान के अपनी नज़र में खाक नही,
सिवाए खूने जिगर, सो जिगर में खाक नही.

---

१ काला. २ तिल

अगर रगो में ख़ून दौड़ता हो तो दुनिया की रंगीनियां भी अच्छी लगती हैं यहां ख़ून ही जिगर में नहीं रहा तो दुनिया की रौनकें हमें क्या ख़ाक अच्छी लगें?

मगर[1] गुबार हुए पर, हवा उडा ले जाए,
वगरनः[2] ताब-ओ-तवा बाल-ओ-पर में ख़ाक नही.

अगर हम मिट्टी में मिल जाएं तो शायद हमें हवा उड़ा कर वहां तक ले जाए जहा तक उड़ कर हम पहुचने का ख़याल रखते हैं वरना अब हम में इतनी शक्ति कहा जो हम स्वयं वहा तक पहुच सकें

भला उसे न सही, कुछ मुझी को रह्म आता,
असर मिरे नफसे बे असर मे ख़ाक नही

यह तो अब मानी हुई बात है कि हमारी आहो में जरा भी असर नहीं है और उस ने भी हम पर कोई रहम नहीं खाया चलो यू ही सही, लेकिन हम तो अपने आप को यू रोरो कर न मिटाते यदि हम को अपने आप पर रहम आ गया होता पर वह भी न हुआ

ख़याले जलव:-ए-गुल से ख़राब है मैकश,
शराबख़ाने के दीवार-ओ-दर में ख़ाक नही.

शराबख़ाने से किसे मतलब है? वह तो हम लोग फूलो के जलवों के ख़याल में ख़राब होते फिर रहे हैं कि शायद कहीं फूल खिले हुए हों दूसरा मतलब यह कि खुशियो के ख़याल में शराब पीने पर मजबूर हू वरना शराबख़ाने से क्या मतलब?

हुआ हू 'इश्क की गारतगरी से शरमिंद:',
सिवाए हसरते ता'मीर घर में ख़ाक नही

---

१ शायद २ वरना.

मुहब्बत ने मेरे घर को बरबाद कर के रख दिया है अब घर बनाने की हसरत के सिवाय मुझ में खाक नहीं है, यानी कुछ भी नहीं है-

हमारे शे'र है अब सिर्फ दिल लगी के, 'असद',
खुला, कि फायद. 'अरज़े हुनर मे खाक नही

इस शेर में जमाने की बेकदरी की शिकायत है. अब हमारे शेर सिर्फ दिल्लगी के लिए हो कर रह गए हैं, क्योकि जमाने के घटिया मजाक़ ने हम पर साबित कर दिया है कि यहां अच्छे फन और अदब में कुछ नहीं धरा

अब हम ग़ालिब की इस ग़जल पर आते हैं जो बेहद मशहूर हुई है और वैसे भी बहुत ऊची है

दिल ही तो है, न सग-ओ-ख़िश्त, दर्द से भर न आए क्यो,
रोएगे हम हज़ार बार, कोई हमें सताए क्यो

इस शेर में ग़ालिब कहते हैं कि हमारे सीने में एक धडकता दिल है, कोई ईंट या पत्थर तो नहीं कि किसी के बुरे सलूक से दिल भर न आए और हम रो न पडें हमारा दिल अगर दुखेगा तो हम हजार बार रोएगे और अगर किसी को हमारे रोने से इतनी ही शिकायत है तो हमें सताया क्यो जाता है?

दैर नही, हरम नही, दर नही, आस्ता नही,
बैठे है रहगुज़र पे हम, कोई हमें उठाए क्यो

मदिर नहीं, मस्जिद नहीं, किसी के घर का दरवाजा नहीं, किसी की डेवढ़ी पे नहीं, हम तो खुले रास्ते में बैठे है यहा से हमें उठाने का किसी को क्या हक? मतलब यह कि अपनी आजादाना जिदगी गुजार रहे हैं- किसी धर्म, किसी जाति, किसी रीतिरिवाज या रस्म से हमें कोई मतलब नहीं है फिर हमें अपने रास्ते से कोई कैसे हटा सकता है? क्या हम किसी के रास्ते में रुकावट डाल रहे है जो अब भी हम से किसी को शिकायत है-

जब वह जमाले दिल फरोज[1] सूरते मेह्रे नीमरोज़[2],
आप ही हो नजार.सोज़[3] पर्दे मे मुंह छुपाए क्यो

बडी हैरानी की बात है कि जब वह दिल को मोह लेने वाली सूरत जो कि दोपहर के सूरज की तरह चमकदार है, जो देखी नहीं जा सकती और जिस का नजारा नहीं किया जा सकता, वह सूरत परदे में छिपी बैठी रहे

दश्न[4]-ए-गमज़[5] जा सिता, नावके[6] नाजे बे पनाह,
तेरा ही अक्से रुख[7] सही, सामने तेरे आए क्यो

तेरी आख का इशारा जानलेवा खजर की तरह है और तेरे नाजो अदा का तीर बेपनाह है. ज़ाहिर है जिस पर तेरी आख उठेगी वह मारा जाएगा इसी की बिना पर ग़ालिब कहते है कि अब वह चाहे आइने में तेरा अपना ही प्रतिबिब क्यो न हो, तेरे सामने नहीं होना चाहिए क्योकि तेरे प्रतिबिब के पास भी यही हथियार होगे और जब तू आइने में अपना जलवा देखने के लिए आख उठाएगा तो तेरे हथियार तुझी पर चल जाएगे.

कैदे हयात-ओ-बदे गम, अस्ल में दोनो एक है,
मौत से पहले आदमी, गम से नजात पाए क्यो

जिदगी क़ैद और गम की क़ैद असल में दोनो एक है. मतलब यह कि दोनो बराबर के सताए हुए है इसलिए इनसान अपनी मौत से पहले गम से किसी तरह भी नहीं बच सकता

---

१ दिल मोह लेने वाला सौंदर्य २ दोपहर का सूरज ३ नज़ारे को जला देने वाला ४ खजर ५ आख का इशारा ६ तीर ७ चेहरा

हुस्न और उस पे हुस्ने ज़न, रह गई बुलहवस की शर्म,
अपने पे ऐतिमाद है, गैर को आज़माए क्यो

एक तो खूबसूरती, उस पर इस बात का एहसास कि हम खूबसूरत हैं और फिर उस पे यह गर्व कि फलां मुझ पर मरता है, यानी उसे हर बात में अपनेआप पर पूरापूरा भरोसा है इसी लिए वह मेरे दुश्मन की मुहब्बत को आजमाने के लिए तैयार नहीं. और चूकि वह आजमाने के लिए तैयार नहीं, इसलिए मेरे दुश्मन की पोल खुलने से बच गई

वा वो गुरूरे 'अिज्ज़-ओ-नाज़, या यह हिजाबे पासे वज़ू,
राह में हम मिले कहा, बज़्म में वह बुलाए क्यो

उन्हें तो अपने हुस्न पर ग़ुरूर और नाज है और यहा हम जिस तबियत के आदमी है उसी का लिहाज आता है. यानी बिन बुलाए उस के यहा कैसे चले जाए? यह बात तो हमारे स्वभाव के ख़िलाफ है. और उन्हें चूकि अपने हुस्न पे ग़ुरूर है, इसलिए वह हम से मिलने भला बाहर क्यो निकले? और फिर जब तक हम वहा खुद न जाए, वह हमें अपने यहा क्यो बुलाए. इसलिए मुलाकात की कोई भी सूरत नहीं. वह अपने ग़ुरूर के मारे बुलाते नहीं और हम अपनी आन के मारे बिन बुलाए जाते नहीं-रास्ते में मुलाकात होने का सवाल ही पैदा नहीं होता

हा, वह नही खुदा परस्त, जाओ वह बेवफा सही,
जिस को हो दीन-ओ-दिल अज़ीज़, उस की गली में जाए क्यो

इस शेर में ग़ालिब ने हम लोगो को अडे हाथो लिया है कि जो आए दिन मिर्जा से कहते है कि भई इस मुहब्बत से बाज आओ वह एक तो खुदा को नहीं मानता, दूसरे बेवफा है, इसलिए मुफ्त में अपने दिल से हाथ धो बैठोगे ग़ालिब कहते है कि हा, वह खुदा को नहीं मानता. जाओ वह बेवफा सही, जिस को अपना धर्म और अपना दिल प्यारा है, वह उस की

गली में जाता क्यो है? हमें उस के सामने न अपना धर्म प्यारा है न दिल.

'गालिब'-ए-खसत' के बगैर, कौन से काम बद है,
रोइए जार जार क्या, कीजिए हाय हाय क्यो

दुनिया में किसी के बग़ैर कोई काम नहीं रुकता कोई हो या न हो, इस से दुनिया को कोई फर्क नहीं पड़ता. मुफ्त में रोने पीटने से कोई लाभ नहीं

गुचः-ए- नाशिगुफ्त. को दूर से मत दिखा, कि यू,
बोसे को पूछता हू मैं, मुह से मुझे बता, कि यू

मै ने यह पूछा था कि बोसा किस तरह देते है. यह तुम ने दूसरे से एक अधखिले फूल को होठो से लगा कर मुझे क्या दिखाया है? तुम्हारे होठ भी गुचे की तरह है और पूरे खिले हुए गुचे की तरह अपने वह होठ मेरे होठो से लगा कर मुझे बताओ कि बोसा यू दिया जाता है

रात के वक्त मै पिए, साथ रकीब को लिए,
आए वो या खुदा करे, पर न करे खुदा, कि यू

खुदा करे कि रात को वह शराब पी कर मेरे घर आए, लेकिन खुदा ऐसा न करे कि वह आते हुए अपने साथ किसी और को भी ले आए.

गैर से रात क्या बनी, यह जो कहा, तो देखिए,
सामने आन बैठना, और यह देखना कि यू

मै ने जो उन से यह पूछा कि कल रात गैर के साथ कैसे गुजारी तो क्या गुस्से में मेरे सामने बैठ कर मुझे तेजतेज नजरों से देख रहे है, जैसे रात मेरे दुश्मन के साथ भी उन्होने ऐसा ही सुलूक किया हो.

बज्म मे उस के रूबरू क्यो न खमोश बैठिए,
उस की तो खामुशी में भी, है यही मुद्'आ कि यू.

पहले तो वह हमें डांट देते हैं कि चुप रहो. लेकिन जब इस तरह चुप हुए हैं, जैसे उन की चुप भी हमें डांट रही हो कि चुप रहो. अब भला बताइए कि हम भरी महफ़िल में क्यो न छुप कर बैठें.

मैं ने कहा कि, बज़्मे नाज़ चाहिए गैर से, तिही,
सुन के सितम ज़रीफ ने मुझ को उठा दिया, कि यू

मैं ने उस से यह कहा कि तुम्हारी महफिल में पराए आदमी का क्या काम, उस को यहा से निकाल दो, तो उस ने मुझी को महफ़िल से उठा दिया और पूछा : यू? यानी मैं तो चाहता ही था कि मेरे और उस के बीच कोई पराया न हो और उस ने मुझ को ही पराया समझा.

मुझ से कहा जो यार ने, जाते है होश किस तरह,
देख के मेरी बेख़ुदी चलने लगी हवा, कि यू

उन्होंने जो मुझ से पूछा कि होश किस तरह उडते हैं तो मेरी बेख़ुदी को देख कर हवा चलने लगी कि यू होश उडते हैं

कब मुझे कू-ए-यार, में रहने की वज़'अ याद थी,
आइन दार बन गई, हैरते नक्शे पा, कि यू

मुझे इस के कूचे में बसने के अदाज़ कब याद थे. वह तो मेरे पाव के निशान हैरानी से मुझ को देखने लगे और बताया कि यू बसते है. यानी मिट्टी में मिल जाओ.

जो यह कहे, कि रेख़त. क्यो कि हो रश्के फारसी,
गुफ्त -ए-'गालिब' एक बार पढ के उसे सुना कि यू

अगर कोई यह कहे कि उर्दू की शायरी फारसी शायरी की टक्कर की कसे है तो ग़ालिब के शेर सुना दो कि यूं फ़ारसी की शायरी की टक्कर की है.

हसद से दिल अगर अफसुर्द. है, गर्मे तमाशः हो,
कि चश्मे तग, शायद, कसरते नज्ज़ार से वा हो

अगर तेरा दिल ईर्ष्या और जलन से बुझाबुझा रहता हो तो तुझे चाहिए कि तू अपने में ही सीमित न हो कर सारी दुनिया के अनगिनत दृश्य देख जिस से तेरी सकुचित दृष्टि खुल जाए.

ता'अत में ता, रहे न मै-ओ-अगबी की लाग,
दोज़ख में डाल दो, कोई ले कर बहिश्त को

ग़ालिब ने जब कभी झूठे पंडितो और मौलवियो पर चोट की है तो ऐसी भरपूर कि दूसरा तिलमिला कर रह जाए. फरमाते है कि लोग इस दुनिया में इसी लिए भक्त और पुजारी बन बैठे है ताकि उन्हें मरने के बाद जन्नत मिले. जन्नत में शराब होगी, हूरें होगी. ग़ालिब कहते है कि प्रार्थना में हूरो और शराब का लालच बाक़ी न रहे, इस के लिए ज़रूरी है कि जन्नत को उठा कर दोज़ख में फॅक दो दोज़ख की आग उसे जला कर रख देगी, न जन्नत रहेगी न लोग न लोग हूरो और शराबो के लालच में भक्ती का ढोग रचेंगे फिर अगर कोई भक्ती करेगा तो सच्चे दिल से करेगा.

वारस्त. उस से है, कि मुहब्बत ही क्यो न हो,
कीजे हमारे साथ, अदावत ही क्यो न हो

हम इन बातो से आज़ाद है कि हमारे साथ आप मुहब्बत कीजिए या न कीजिए लेकिन एक बात का ख़याल रहे कि अगर आप को दुश्मनी ही करनी है तो फिर किसी और से न कीजिए, बल्कि सिर्फ हमारे साथ ही कीजिए

छोडा न मुझ में ज़ो'फ ने रग इख्तिलात का,
है दिल पे बार, नक्शे मुहब्बत ही क्यो न हो

अब दिल इतना बुझ चुका है कि उन की मुहब्बत भी दिल पर एक बोझ सा लगती है.

पैदा हुई है, कहते हैं, हर दर्द की दवा,
यू हो, तो चार-ए-गम-ए-उल्फत ही क्यो न हो

हर कोई यही कहता है, कि आज हर दर्द की दवा मिलती है. अगर ऐसी ही बात है, तो फिर मुहब्बत के दर्द का इलाज क्यो नहीं किया जाता.

डाला न बेकसी ने किसी से मु'आमला,
अपने से खीचता हू, खजालत ही क्यो न हो

मेरी बेकसी ने कहीं भी मेरी बात न बनने दी. मैं तो खुद अपने आप ही से शर्मिंदा हूं किसी और से क्या शिकायत करू?

है आदमी बज़ात-ए-खुद, इक महशर-ए-खयाल,
हम अजुमन समझते है, खल्वत ही क्यो न हो

इनसान लाखो खयालो का पुतला है जब अकेला होता है उस वक्त भी हजारो खयाल उस के दिल और दमाग में घूमते रहते हैं इसलिए हम तो अकेलेपन को भी महफ़िल कहते है.

हगाम-ए-ज़बूनि-ए हिम्मत[1] है इन्फ'आल[2],
हासिल न कीजे दह्र से, 'अिबरत[3]' ही क्यो न हो

दुनिया से कुछ भी हासिल न कीजिए चाहे वह बुराई के नतीजे से सबक ही क्यो न हो क्योकि आप इस दुनिया से जो कुछ हासिल करेंगे वह आप की हिम्मत को तोड़ देगा

---

१ हिम्मत हार जाना २ शर्मिंदगी. ३ नसीहत.

वारस्तगी बहान-ए-बेगानगी नही,
अपने से कर, न गैर से, वहशत ही क्यो न हो.

हम जो हर एक बधन से आजाद है तो इस का मतलब यह नहीं कि बेगाना है. अगर तुम्हें वहशत भी हो तो अपनेआप से होनी चाहिए न कि किसी दूसरे से.

मिटता है फौते फुर्सते, हस्ती का गम कोई,
उम्र-ए-अज़ीज़ सर्फे 'अिबादत ही क्यो न हो.

ग़ालिब ने एक बार फिर उपदेशको पर पूरी चोट की है सारी जिंदगी चाहे इबादत ही में क्यो न गुजर जाए, लेकिन दिल से यह चार दिन की ज़िंदगी खतम हो जाने का गम कभी नहीं मिटता और जब मौत का ग़म लगा रहे तो इबादत क्या खाक होगी?

उस फितन. खू के दर से अब उठते नही 'असद',
इस में हमारे सर पे कयामत ही क्यो न हो

अब हम उस के दरवाजे से उठने का नाम नहीं लेंगे, चाहे इस में हमारे सर पे कयामत ही क्यो न आ पडे.

कफस में हू, गर अच्छा भी न जानें मेरे शेवन को,
मिरा होना बुरा क्या है, नवा सजाने गुलशन को

अगर मै शेर कहता भी हू तो आखिर इन लोगो का उस में एतराज क्या है? क्योकि मै एक क़ैदी हूं और वह आजाद है. इसलिए मेरे शेरो से इन की महफिलें बिगड़ नहीं सकतीं.

नही गर हमदमी आसा, न हो यह रश्क क्या कम है,
न दी होती, खुदाया आरज़ू-ए-दोस्त दुश्मन को

ऐ खुदा, मै मानता हूं कि मेरा दुशमन इतना खुशनसीब नहीं है कि मेरे महबूब से मिल सके, लेकिन मेरे लिए क्या यही हसद कम है कि

मेरी तरह उस के दिल में भी उसी को प्यार करने का भाव है जिस पे मैं जान देता हू.

खुदा शरमाए हाथो को, कि रखते है कशाकश में,
कभी मेरे गरीबा को, कभी जाना के दामन को

खुदा इन हाथो को शरमाए कि कभी उन के दामन को खींचते है, कभी अपने गरीबान को फाड़ते हैं. यानी उन का दामन तो इसलिए खींचते है कि रुक जाओ, मत जाओ और अपना गरीबा इसलिए फाड़ते हैं कि उन पे कुछ बस नहीं चलता और वह ठहरते नहीं.

वफादारी, बशर्ते उस्तवारी, अस्ले ईमा है,
मरे बुतखाने में, तो का'बे में गाडो बरहमन को

इस शेर में अगर कोई ब्राह्मण सारी उम्र मदिर में भक्ति करते-करते मर जाए तो भी उसे किसी मस्जिद में दफनाना चाहिए, क्योकि असली ईमान यही है कि पूरी वफादारी से खुदा की खिदमत की जाए.

शहादत थी मेरी किस्मत में, जो दी थी यह खू[1] मुझ को,
जहा तलवार को देखा, झुका देता था गरदन को

मेरी क़िस्मत में खुदा ने शहीद होना लिखा था. इसलिए मुझे यह आदत बख़्श दी थी जहा कहीं भी मैं तलवार को देखता था, अपनी गरदन झुका देता था

न लुटता दिन को, तो कब रात को यू बेखबर सोता,
रहा खटका न चोरी का, दुआ देता हू रहज़न[2] को.

मुझे जिस लुटेरे ने दिनदहाडे लूट लिया है मैं अब बैठा उसे दुआएं दे रहा हूं, क्योकि पहले अपने माल की हिफाज़त के ख्याल से मैं रात को

१ आदत २ लुटेरा

बेखटके सो नहीं सकता था. अब माल ही नहीं रहा, जिस की हिफ़ाजत करूं, इसलिए बेखटके सो रहा हूं,

वा उस को हौले दिल है, तो यूं मैं हूं शर्मसार,
यानी ये मेरी आह की तासीर से न हो.

वहां उस को दिल धडकने के दौर पड रहे हैं और यहां हम इस बात से शरमिंदा हो रहे हैं कि कहीं यह हमारी आहो का असर न हो, जो उसे यह तकलीफ है.

दिल को मैं, और मुझे दिल, महवे वफा कहता है,
किस कदर ज़ौके गिरफ्तारि-ए-हम, है हम को.

मेरा दिल मुझे और मैं अपने दिल को, दोनो ही एक दूसरे को उस से वफ़ा करने के लिए कहते रहते हैं और फिर दुख उठाते हैं कि जिस तरह हम एक दूसरे को वफ़ा के रास्ते पे डटे रहने के लिए कहते हैं, उस से तो यही जाहिर है कि हमें खुद मुसीबतो में फंसने का शौक़ है.

जान कर कीजे तग़ाफुल, कि कुछ उम्मीद भी हो,
यह निगाहे गलत अंदाज़ तो सम[1] है हम को

आप हमें पहचान कर अपरचित बन जाए तो खैर, यह सदमा हम सहन कर भी लेंगे लेकिन जिस तरह आप बिल्कुल अपरचितो की तरह देख कर गुजर जाते हैं, यह निगाह तो हमारे लिए जहर है. हम इस से नहीं बच सकेंगे.

सर उडाने के वा'दे को मुकर्रर चाहा,
हस के बोले कि तिरे सर की क़सम है हम को

उन्होंने जो हम से कहा कि हम किसी दिन तुम्हारा सर उड़ा देंगे तो हम ने कहा कि जरा एक बार फिर कहना. हमारा यह जवाब सुन

---

१ जहर

कर वह हंसे और हस कर बोले : तेरे सर की कसम है. अब इस में दो मतलब निकलते है. एक तो यह कि उन्होंने यह कहा कि तेरे सर की क़सम खा के कहते हैं कि जरूर उडा देंगे और दूसरा यह कि तेरे सर की कसम खा रखी है. यानी नहीं उड़ाएगे

दिल के खू करने की क्या वज्ह, वलेकिन[1] नाचार,
पासे[2] बेरौनकि-ए-दीदः अहम[3] है हम को.

हम जो अपने दिल का ख़ून करते है इस की कोई वजह तो नहीं है. हा, लेकिन एक बात है और वह यह कि हमारी आखें ग़म के मारे बेरौनक हो गई है. इन में रौनक पैदा करना हम वहुत जरूरी समझते हैं. और इसी लिए हमें अपने दिल का ख़ून करना पड़ रहा है

तुम जानो, तुम को गैर से जो रस्म-ओ-राह हो,
मुझ को भी पूछते रहो, तो क्या गुनाह हो.

तुम जिस से चाहो दोस्ती रखो, लेकिन अगर कभीकभी हमारा हाल भी पूछते रहो तो क्या गुनाह हो जायेगा.

बचते नही मुआख़ज़[4]-ए-रोज-ए-हश्र[5] से,
कातिल अगर रक़ीब हो, तो तुम गवाह हो

जिस दिन क़यामत आएगी और सब लोगो के गुनाहो की पूछताछ की जाएगी उस दिन तुम भी बचने के नहीं. तुम पर भी इल्जाम आएगा क्योकि अगर मुझे मेरे दुशमन ने क़त्ल किया है, लेकिन इस बात के गवाह तुम्हीं हो और तुम्हें उस दिन सब के सामने मेरे कत्ल की गवाही देनी पड़ेगी.

क्या वो भी बेगुनह-कुश-ओ-हक़ ना शनास है,
माना कि तुम बशर नही, खुरशीद-ओ-माह हो.

---

१ लेकिन २ खयाल. ३ जरूरी. ४ पूछताछ ५ कयामत का दिन.

ऐ दोस्त मैं मानता हू कि तुम इस क़दर ख़ूबसूरत हो कि तुम्हें केवल एक ही इनसान नहीं कहा जा सकता. तुम तो सूरज या चाद हो, लेकिन इतना बता दो कि क्या सूरज और चाँद भी तुम्हारी तरह बेगुनाहो को मारते हैं और उन का हक़ तसलीम नहीं करते.

उभरा हुआ निकाब मे है उन के, एक तार,
मरता हू मैं, कि यह न किसी की निगाह हो

उन के नकाब में एक तार उभरा हुआ है और मैं इस ईर्ष्या से मरा जा रहा हूं कि कहीं किसी हुस्न के पुजारी की नजर उन के जलवे को देखने के लिए इस नकाब के अदर न चली गई हो.

जब मैकदः छुटा, तो फिर अब क्या जगह की कैद,
मस्जिद हो, मदरस. हो, कोई खानकाह हो

जब हम को शराब खाने से निकाल दिया गया है तो फिर अब जगह की क्या कैद? अब जहां जी चाहेंगे बैठ कर शराब पिएगे. अब चाहे मस्जिद हो या मदरसा हो या खानकाह हो.

सुनते है जो बहिश्त की तारीफ, सब दुरुस्त,
लेकिन खुदा करे, वह तेरी जल्वगाह हो

जन्नत की जितनी भी तारीफ़ सुनते है कि वहां ऐसीऐसी ख़ूबसूरत हूरें होगी जो इस दुनिया के लोगो ने कभी देखी न होगी और यह होगा और वह होगा. मुमकिन है कि यह सब बातें ठीक हो. लेकिन हमारी तो ख़ुदा से यही दुआ है कि जन्नत भी तेरी जलवा गाह हो. यानी वहां भी हमें तेरा ही जलवा देखने को मिले. अगर हमें जन्नत में तेरा जलवा न देखने को मिला तो हमारे लिए जन्नत और वहा की हूरें सब बेकार हैं.

'ग़ालिब' भी गर[1] न हो, तो कुछ ऐसा ज़रर[2] नही,
दुनिया हो, यारब, और मिरा बादशाह हो.

अगर दुनिया में 'ग़ालिब' भी न हो (यानी इतना बडा शायर भी न हो) तो कोई नुक़सान नहीं हो जाएगा. यह दुनिया रहे और इस दुनिया में मेरा बादशाह हमेशा सलामत रहे. यह शेर ग़ालिब ने बहादुर-शाह जफर की तारीफ़ में कहा है.

गई वह बात, कि हो गुफ्तगू तो क्योंकर हो,
कहे से कुछ न हुआ, फिर कहो, तो क्योंकर हो.

इस शेर के दो मतलब हैं. पहला मतलब यह कि पहले तो हमें यह ग़म लगा रहता था कि उस से बातचीत कैसे हो. लेकिन जब बात-चीत हो गई तो इस का कुछ नतीजा न निकला. लिहाजा अब वह बात हो गई कि इस फ़िक्र में घुले जाते थे कि उस से बातचीत कैसे हो और जब कि एक बार करने से कुछ नहीं हुआ, फिर उसी बात को उस के सामने दुहराने से क्या बनेगा? दूसरा मतलब यह है कि बातचीत से तो कोई नतीजा न निकला और बात भी गई, यानी उस से कुछ कहने की नौबत न आई. अब बताओ कि उस पर अपना प्यार कैसे जताए? अब क्या करें?

हमारे ज़ेह्न[3] मे, उस फ़िक्र का है नाम विसाल[4],
कि गर न हो तो कहा जाए, हो, तो क्योंकर हो.

हमारे दमाग़ में तो उस फ़िक्र का नाम विसाल है. अगर विसाल न हो तो क्या करें और हो तो कैसे हो.

---

१ अगर २ नुकसान ३ दमाग ४ मिलाप

अदब है और यही कशमकश, तो क्या कीजे,
हया है और यही गूमगू[1], तो क्योकर हो

यहा तो सभ्यता हमें उन से कुछ भी खुल के कहने नहीं देती अजीब संघर्ष मे जान है. कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करें. और उधर एक तो शर्म है, और उस पर उलझन अब भला उन पर दिल का हाल कैसे खुले?

तुम्ही कहो, कि गुज़ारा सनमपरस्तो[2] का,
बुतो की हो अगर ऐसी ही ख़ू[1], तो क्योकर हो

कहते है कि अब तुम्हीं कहो कि अगर बुतो की ऐसी ही आदत हो जैसी तुम्हारी है कि किसी की बात सुनने को तैयार ही नहीं हो तो भला बुतो को पूजने वालो का गुजारा कैसे हो. वह क्या करें?

उलझते हो तुम, अगर देखते हो आईन,
जो तुम से शहर मे हो एक दो, तो क्योकर हो

तुम तो शीशे में ही अपना ही प्रतिबिम्ब देख कर उसी से उलझ बैठते हो कि मुझ जैसा ख़ूबसूरत तू कहा से आ गया? अब बताओ कि अगर तुम जैसे दो एक ख़ूबसूरत और भी शहर में हो तो न जाने तुम उन का क्या हाल करोगे

जिसे नसीब हो रोज़े सियाह मेरा सा,
वह शख्स दिन न कहे रात को, तो क्योकर हो

जिस बदनसीब को मुझ जैसी तकदीर मिली हो कि हर वक्त वह अंधेरो से ही घिरा रहे, तो ऐसा व्यक्ति यदि दिन को भी रात कहे तो क्या अजीब बात है

---

१ उलझन २ बुतो को पूजने वाले ३ आदत

हमें फिर उन से उमीद, और उन्हें हमारी क़द्र,
हमारी बात ही पूछें न वो, तो क्योकर हो

अब वह हमारी बात ही नहीं सुनते तो फिर यह बात कैसे मुमकिन है कि हमें उन से किसी क़िस्म की उम्मीद हो और उन्हें हमारी कदर हो.

गलत न था, हमें ख़त पर, गुमा तसल्ली का,
न माने दीद.-ए-दीदार जू, तो क्योकर हो.

हमारी तसल्ली तो तुम्हारे ख़त ही से हो जाती. इस में कोई झूठी बात नहीं है. लेकिन यह आंख जो तुम्हारी सूरत देखने की इच्छुक है, अगर यही न माने तो फिर दिल की तसल्ली कैसे हो?

मुझे जुनूं नही 'गालिब', वले बकौले हुजूर,
फिराक़े यार में तस्कीन हो, तो क्योकर हो.

इस शेर का दूसरा मिसरा बहादुरशाह जफ़र का है. और इसी पर ग़ालिब ने यह ग़जल कही है : कहते है कि ग़ालिब मुझे कोई पागलपन नहीं है लेकिन बादशाह जफ़र ने जो पते की बात कहीं है कि दोस्त की जुदाई में चैन कैसे आ सकता है अब इस बात से कैसे इनकार किया जा सकता है?

किसी को दे के दिल कोई नवासंज-ए-फ़ुगा क्यो हो
न हो जब दिल ही सीने में, तो फिर मुह में जबा क्यों हो.

जब किसी को दिल दे दिया तो फिर रोनेपीटने का क्या काम? क्योकि जब सीने में दिल ही नहीं है जो कि आह व फ़रियाद करता तो फिर मुह में जबान भी क्यो हो? यानी मुहब्बत में इनसान को चुप लग जानी चाहिए. यह नहीं कि सारी दुनिया को रोरो के कहता फिरे कि मैं ने तो उसे दिल दे दिया लेकिन उस को मेरी कोई क़द्र ही नहीं.

वो अपनी खू न छोडेंगे, हम अपनी वज़'अ क्यो बदलें,
सुबुक-सर हो के कहते है, कि हम से सरगिरा क्यो हो

जब वह अपनी नाराज होने की आदत नहीं छोड़ते तो हम अपना तरीका क्यो बदलें? और ख़्वाहमख़्वाह अपने आप को गिरा कर उस से यह पूछें कि आप हम से नाराज क्यो है?

किया ग़मख्वार ने रुसवा, लगे आग इस मुहब्बत को,
न लावे ताब जो गम की, वह मेरा राज़दा क्यो हो

मै जिसे अपनी मुहब्बत का भेदी बनाए हुए था उसी ने मुझे बदनाम कर दिया. क्योकि जब उस ने देखा कि मै तो ग़म के हाथो घुलघुल के मर जाऊंगा तो वह यह सहन न कर सका और उस ने सारी दुनिया में यह बात फैला दी कि फ़लां ने ग़ालिब पर इतना जुल्म किया है कि अब उस का बचना मुश्किल है ग़ालिब कहते है ऐसी मुहब्बत को आग लगे कि मेरे ग़मख्वार ही ने मुझे बदनाम कर के रख दिया. जो आदमी ग़म को बरदाश्त करने की ताकत नहीं रखता उसे मेरा भेदी बनने का क्या हक है? यानी जिस इनसान में मुहब्बत का ग़म बरदाश्त करने की ताकत नहीं है वह इनसान नहीं है.

वफा कैसी, कहा का इश्क,जब सर फोडना ठहरा,
तो फिर ऐ सगेदिल, तेरा ही सगेआस्ता क्यो हो

कहते है कि जब हमारी तकदीर में ही मुहब्बत के हार्यों सर फोड कर मरना लिखा है तो फिर ऐ पत्थर दिल तेरे ही दरवाजे के पत्थर पर क्यो सर फोड़ कर मरें? जब सर फोड़ के मरना ही है तो किसी भी पत्थर से क्यो न टकरा मरें. क्योकि तेरे दरवाजे के पत्थर पर सर फोड़ कर मरने से तुझ पर तो कोई असर होने का नहीं. और अगर तू कहे कि यह तो वफ़ा नहीं है, यह तो मुहब्बत नहीं है कि मै किसी

ऐ मेरे महबूब तुम तो किसी और के हो गए और कह रहे हो कि तुम किसी और के हो कर सिर्फ मेरी मुहब्बत का इमतिहान ले रहे हो? मेरी मुहब्बत को आजमा रहे हो. अगर आजमाना इसी को कहते हैं तो फिर सताना किसे कहते हैं? अगर तुम किसी और के हो गए हो तो फिर मेरा इमतहान क्यो लेते फिर रहे हो?

कहा तुम ने कि, क्यो हो गैर के मिलने में रुस्वाई,
बजा कहते हो, सच कहते हो, फिर कहिए कि हा क्यो हो

तुम कहते हो कि ग़ैर से मिलने में बदनामी होने लगी है. ठीक ही कहते हो. लेकिन इस बात पे मेरी हा क्यो चाहिए? इस शेर का एक दूसरा मतलब बड़ा व्यंगपूर्ण है, कि जी हा, बिलकुल ठीक, आप ने बिलकुल सच बात कही, जरा फिर कहिए कि 'हां' बदनामी क्यों होने लगी?

निकाला चाहता है काम क्या त'नो से ऐ 'गालिब',
तिरे बेमेह्र कहने से, वह तुझ पर मेह्रबा क्यो हो

ऐ ग़ालिब तू उन पर ताने कस रहा है कि तुम बेवफ़ा हो, ज़ालिम हो; लेकिन तेरे इन तानों से वह तुझ पर मेहरबान क्यो हो?

रहिए अब ऐसी जगह चल कर, जहा कोई न हो,
हम-सुखन कोई न हो, और हम-ज़बा कोई न हो

ऐसी जगह तो मैं ने रह कर देख लिया जहा लोग मेरी बातें, मेरी भाषा जानते और समझते थे, लेकिन किसी ने मेरी क़द्र न की अब किसी ऐसी जगह चल कर रहें जहां न कोई मेरी बातें समझने वाला हो और न मेरी ज़बान. फिर दिल में यह ख़याल ही पैदा न होगा कि बेक़द्री हो रही है.

बेदर-ओ-दीवार का इक घर बनाया चाहिए,
कोई हमसायः न हो और पासबा कोई न हो

अब तो कोई ऐसा घर बनाना चाहिए जिस का न कोई दरवाज़ा हो और न दीवारें अगर दरवाज़ा नही होगा तो कोई चौकीदार न होगा और जब दीवारें ही न होगी तो फिर हमसाया भी कहां से कोई बनेगा?

पडिए गर बीमार, तो कोई न हो तीमारदार,
और अगर मर जाइए, तो नौहः ख्वा[1] कोई न हो

यह शेर भी ऊपर के दोनो शेरो के साथ का है. कहते है कि अब ऐसी जगह चलें जहा अगर हम बीमार पड़ जाए तो कोई आ कर हमारा हाल न पूछे और अगर मर भी जाएं तो कोई मातम करने वाला न हो

है सबज़ जार हर दर-ओ-दीवार-ए गमकद,
जिस की बहार यह हो, फिर उस की खज़ा न पूछ

मेरे घर की बहार का यह हाल है कि दरवाज़ो और दीवारो पर चारो तरफ काई जम गई है. और लंबीलबी घास उग आई है. जिस घर की बहार ऐसी हो, उस की ख़िज़ा का फिर क्या पूछना?

यह रात भर का है हगाम सुब्ह होने तक,
रखो न शम्अ पर ऐ अहले-अजुमन तकिया

ऐ मेरी महिफल के बासियो, इस शमा को महफ़िल का सहारा न समझो। यह तो जल कर सुबह तक बुझ जाएगी यह तो सिर्फ एक रात की मेहमान है अपनेअपने ठिकाने बना लो.

---

१ मातम करने वाला

तोड बैठे, जब कि हम जाम-ओ-सुबू फिर हम को क्या,
आस्मा से बाद ए-गुलफाम, गो बरसा करे

जब कि हम जाम और सुराही तोड ही चुके है फिर अगर आस्मान से शराब बरसे तो भी हमें इस से कोई मतलब नहीं.

मैं हू मुश्ताके[1] जफा, मुझ पे जफा और सही,
तुम हो बेदाद[2] में खुश, इस से सिवा और सही

मै तुम्हारे जुल्मो का चाहने वाला हू. चलो मुझ पर और जुल्म करो तुम जुल्म करने में खुश रहो, तो जियादा से जियादा जुल्म करो

तुम हो बुत, फिर तुम्हें पिदारे खुदाई क्यो है,
तुम खुदावद ही कहलाओ, खुदा और सही

तुम तो बुत यानी एक मूर्ति हो, तुम्हें ख़ुदाई का गरूर क्यों है? तुम हमारे मालिक बन जाओ. ख़ुदा और सही यानी हम ख़ुदा किसी और को समझ लेंगे इस में एक व्यंग्य है यानी जब तुम जैसा जालिम हमारा मालिक बन जाएगा तो फिर ख़ुदा ही से तो फरियाद करेंगे अगर ख़ुदा भी तुम्हीं बन जाओ तो फिर तुम्हारे जुल्म के खिलाफ किस से फरियाद करेंगे

कोई दुनिया में मगर[3] बाग नही है, वाइज़[4],
खुल्द[5] भी बाग है, खैर आब-ओ-हवा और सही

ऐ वाइज़ तुम जो हर समय जन्नत के बाग़ का ज़िक्र करते रहते हो तो क्या इस दुनिया में तुम्हें कोई बाग अच्छा नहीं लगता. माना कि जन्नत में भी एक बाग़ है. यहां वहा में सिर्फ आबोहवा का ही तो

---

१ पसद करने वाला २ जुल्म ३ शायद ४ धर्म प्रचारक.
५ जन्नत

'फर्क होगा आख़िर वहां की इतनी बडाई किस बात पे करते रहते हो?

क्यो न फिरदौस में दोज़ख़ को निकालें, यारब
सैर के वास्ते थोडी-सी फिज़ा और सही

यारब, हम जन्नत में सैर करते-करते जियादा दूर तक नहीं जा सकते क्योंकि यह तो बहुत छोटी सी जगह है क्यो न हम जन्नत में दोज़ख़ को भी मिला लें सैर के वास्ते थोडी सी जगह और हो जाएगी

सद जलव. रू ब रू है, जो मिज़गा उठाइए,
ताकत कहा, कि दीद का एहसा उठाइए

पलकें उठाते ही उन के सैकड़ो जलवे नज़र आने लगते हैं हम में इतनी ताक़त ही नहीं कि इतना अहसान भी उठा सकें हम तो उन्हें देखना चाहते है और वह अपने आप को दिखाने के बजाय अपने सैकड़ो जलवे दिखाते हैं

दीवार, बारे-मिन्नते-मज़दूर से, है खम
ऐ ख़ानमा ख़राब, न एहसा उठाइए

अगर घर की दीवारें टेढी होने लगी है तो याद रख कि वह उन मज़दूरो के एहसान के बोझ से दब कर टेढी हो रही है, जिन्होने यह दीवारें बनाई थीं इसलिए ऐ उजडे घर वालो, घर बसाने का एहसान हरगिज़ न उठाना यानी इनसान को दुनिया में किसी का अहसान न उठाना चाहिए,

मै से गरज़ निशात है किस रूसियाह को,
इक-गून बेखुदी मुझे दिन रात चाहिए

मेरा मुह काला हो जाए यदि मेरे शराब पीने का मतलब खुशी से हो. हम तो शराब इसलिए नहीं पीते कि उस के नशे में दुनिया की

सारी परेशानी और ग़म भूल जाए और बखुद हो कर एक कोने में पड़े रहें.

नश्व-ओ-नुमा है अस्ल से, 'ग़ालिब' फरू'अ को,
ख़ामोशी ही से निकले है, जो बात चाहिए.

ऐ ग़ालिब, ज़रा सी कोंपल से ही इतनी बड़ी शाख़ बनती हैं और कोपल ज़रा सी भी आवाज़ किए बिना ज़मीन का सीना चीर के निकल आती है और बाद में इतनी बड़ी चीज़ बन जाती है कि पेड़ की सूरत अपना लेती हैं इसलिए इनसान को इस से कुछ सबक़ लेना चाहिए. इनसान जो कुछ कहता है वह बात उस की ख़ामोशी से निकलनी चाहिए न कि ज़बान से

रहे उस शोख़ से आज़ुर्दः हम चदे, तकल्लुफ से,
तकल्लुफ बरतरफ, था एक अदाजे जुनू वह भी

हम जो उस शोख़ से नाराज़ से रहे हैं तो हम बन रहे हैं वैसे ही झूठमूठ नाराज़ हैं लेकिन तकल्लुफ बर तरफ़—यानी असली बात तो यह है कि यह भी हमारे पागलपन का एक अदाज़ है. वरना हमारे लिए उस से नाराज़ होने का सवाल ही पैदा नहीं होता

न करता काश नालः, मुझ को क्या मालूम था हमदम,
कि होगा बाइसे अफज़ाइशे दर्दे दरू वह भी

मैं तो इसलिए रोया था कि शायद रोने से दिल कुछ हलका हो जाएगा. लेकिन मुझे क्या मालूम था कि रोने से ग़म और गहरा और गंभीर हो जाएगा अगर मैं यह बात जानता तो हरगिज़ न रोता.

म-ए-'अिश्रत की ख्वाहिश साकिए गर्दू से क्या कीजे,
लिए बैठा है, इक दो चार जाम-ए-वाज़गू[1] वह भी

---

१ औंधे प्याले.

दुनिया में हमें ख़ुशी नहीं मिलती तो आस्मान से ख़ुशी की शराब क्या मांगें? क्योंकि आस्मान के पास दोचार औंधे प्यालो के सिवा और क्या है?

मिरे दिल में है, 'गालिब', शौके-वस्ल-ओ-शिकव.-ए-हिजरा,
ख़ुदा वो दिन करे, जो उस से मैं यह भी कहूं वह भी

ऐ ग़ालिब, मेरे दिल में अपने महबूब से कहने के लिए दो अरमान हैं एक तो उस की जुदाई की शिकायत और दूसरे उस से मिलने का शौक़ ख़ुदा वह दिन दिखाए जब कि मैं यह दोनो बातें उस से कह सकू. यानी मिलने का शौक और जुदाई का ग़म अब यह दोनो बातें उस के मिले बग़ैर कैसे पूरी हो सकती हैं वह मिले तो अपने दुखड़े भी उस के सामने रो लूं और उसे गले भी लगा लू

बहुत सही गमे-गेती, शराब कम क्या है,
ग़ुलामे साकिए कौसर हू, मुझ को गम क्या है

दुनिया के ग़म लाख सही, लेकिन उन्हें दूर करने वाली शराब भी कम नहीं है और शराब न मिलने का तो मुझे ग़म ही नहीं हो सकता. क्योंकि मैं तो कौसर के साक़ी का गुलाम हू (कौसर : जन्नत की एक नहर) वह मुझे शराब की कमी थोड़े ही महसूस होने देगा.

तुम्हारी तर्ज़-ए-रविश, जानते है हम, क्या है,
रकीब पर है अगर लुत्फ, तो सितम क्या है

अगर तुम हमारे दुश्मन पर मेहरबान हो गए हो तो इस में कौन सा क़हर टूट पड़ेगा हम तुम्हारे तरीको से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं कि तुम ने आज तक हमारे साथ हमेशा ऐसा ही सुलूक किया हैं जिस से हम दिल ही दिल में जलते रहें. इसलिए अब तुम्हारी यह बातें हम पे जुल्म नहीं ढा सकतीं. क्योंकि हम तुम्हें समझ गए हैं.

काटे तो शव, कही काटे तो साप कहलाए,
कोई बताओ कि वह ज़ुल्फे खम बख़म क्या है

कहीं महबूब के बालो को जुदाई की रात जितना लंबा कहा जा रहा है कहीं नागिन. भई, कोई बताए तो कि वह बल खाती हुई ज़ुल्फें असल में है क्या चीज़?

सुखन में खाम[1]-ए-'गालिब' की आतश अफशानी[2],
यकी है हम को भी, लेकिन अब उस मे दम क्या है

हमें भी यकीन है कि ग़ालिब का कलम आग बरसा सकता है. लेकिन भई, अब ग़ालिब में दम ही क्या है जो वह आग बरसाएगा आग बरसाने के लिए भी सीने में दम चाहिए वही नहीं है तो अकेला क़लम क्या करेगा?

रज ताकत से सिवा हो तो निबेड़ क्योकर,
जेह्न में ख़ूबी-ए-तसलीम-ओ-रज़ा है तो सही

मेरे दिमाग़ में तो उस की हर बात के सामने सर झुका देने की ख़ूबी अब भी मौजूद है लेकिन जब दिल में गम बरदाश्त करने की ताक़त से ज़ियादा हो तो कैसे बरदाश्त हो सकता है

दोस्त गर कोई नही है, जो करे चारागरी,
न सही, लेक[3] तमन्ना-ए-दवा है तो सही

अगर अब मेरा ऐसा कोई दोस्त नहीं है जो मेरे दुखो का इलाज कर सके तो क्या हुआ? कम से कम मेरे दिल में अभी दवा की तमन्ना तो है कि मैं अच्छा हो जाऊ और मेरे दुख दर्द दिल से मिट जाए

---

१ क़लम. २ आग बरसाना ३ लेकिन

गैर से, देखिए क्या खूब निभाई उस ने,
न सही हम से, पर उस बुत मे वफा है तो सही

जरा देखो तो सही कि महबूब ने गैर से क्या ख़ूब निबाही है चलो. हम से वफ़ा नहीं की, न सही, लेकिन उस में वफा है तो. अब उसे बेवफ़ा कैसे कह दें? इस में एक और भी पहलू है कि जब हमें पता चल गया कि उस में वफा है तो हमें भी उम्मीद हो सकती है वह कभी हम से भी वफा करेगा.

नक्ल करता हू उसे नाम.-ए-आमाल में मैं,
कुछ न कुछ रोज़े अज़ल तुम ने लिखा है तो सही

ऐ ख़ुदा, तू ने दुनिया बनाते वक्त मेरी तक़दीर में जो कुछ लिख दिया है मैं उसी को अब अमल में लाना चाह रहा हू. इसलिए तू मुझे मेरे गुनाहो की सजा नहीं दे सकता. जो तू ने मेरी तकदीर में लिख दिया है, मैं वही कर रहा हूं.

कभी आ जाएगी, क्यो करते हो जल्दी, 'गालिब',
शोहर -ए-ताज़ि-ए-शम्शीर-ए-कजा है तो सही

ऐ ग़ालिब आखिर यहा से जाने की इतनी जल्दी क्यो कर रहे हो? तुम कहते हो कि आख़िर तुम्हें मौत क्यों नहीं आती? मान लिया कि तुम्हारे मामले में उसे देर हो गई है लेकिन आ अवश्य जाएगी.

है बज्मे बुता मे सुखन[१] आर्ज़ुद.[२] लबो से,
तग आए है हम, ऐसे खुशामद तलबो से

उन की महफिल में हमारी बातचीत ही खुद हमारे होठो से परेशान

---

१ बातचीत २ परेशान

हो उठी है कि उस के सामने बैठे उस की खुशामद किए जा रहे हैं. लेकिन उस पर कोई असर नहीं होता. हम ऐसे खुशामदपसद हुस्न से सख़्त तग आए है.

रिदाने दरे मैकद., गुस्ताख हैं, ज़ाहिद,
जिनहार न होना तरफ़, इन वे अदबो से

ऐ जाहिद, शराबखाने के दरवाज़े पर जो शराबी खड़े हुए हैं. तुम उन्हें शराब छोड़ देने की नसीहत करने मत जाना. यह लोग बहुत गुस्ताख और बेअदब है तुम्हारी पगड़ी उछाल देंगे. यानी दूसरो का नाम ले कर ज़ाहिद को कहा गया है कि हमें शराब छोड़ने के लिए मत कहा कर

वेदादे वफा देख, कि जाती रही आखिर,
हर चद मिरी जान को था रब्त लवो से

हालाकि उस के ज़ुल्म सह सह कर मेरी जान मेरे होठो पे अटकी हुई थी और निकलन ही में न आती थी लेकिन जब उस ने वफा पे भी बेहद ज़ुल्म होते देखा तो वह आखिर निकल ही गई. उस से यह ज़ुल्म न देखा गया.

ता, हम को शिकायत की भी बाक़ी न रहे जा,
सुन लेते है, गो ज़िक्र हमारा नही ' करते.

ताकि हमें शिकायत करने का मौक़ा न मिले वह हमारा ज़िक्र सुन तो लेते है लेकिन अपनी जबान से नहीं करते? अगर अपनी ज़बान से हमारा ज़िक्र करने लगें तो उस में हम से कोई खास सबध नहीं आने लगेगा चाहे वह बुरा ही ज़िक्र क्यो न करें

'गालिब', तिरा अहवाल सुना देंगे हम उन को,
वह सुन के बुला लें, यह इजारा नही करते.

ग़ालिब ने अपना ग़म अपने एक दोस्त को बताया. वह दोस्त कह रहा है कि भई, हम तुम्हारा हाल उन से जा कर कह ज़रूर देंगे लेकिन यह वादा नहीं कर सकते कि वह तुम्हारा हाल सुन कर तुम्हें बुला भी लेंगे या नहीं.

घर में था क्या? कि तिरा गम उसे गारत करता,
वो जो रखते थे हम इक हसरते तासीर, सो है

हमारे घर में था ही क्या जो तेरा ग़म उसे बरबाद करता? यहां तो ले दे के शुरू ही से एक घर बसाने की हसरत थी. सो अब भी है.

गमे दुनिया से, गर पाई भी फुरसत, सर उठाने की,
फलक का देखना, तकरीब तेरे याद आने की.

अगर हमें दुनिया के वबाल से सर उठाने की फ़ुरसत मिली भी तो आंख उठाते ही आस्मान नज़र आया और एकदम तेरा ख़याल आया. तेरा खयाल आते ही वह सब ज़ुल्म याद आ गए जो तू ने हम पर किए थे. इसलिए हम अगर दुनिया के ग़मो से पल भर के लिए सर उठा भी सके तो तेरे ग़मों ने आ घेरा.

खुलेगा किस तरह मज़मू मिरे मकतूब का, यारब,
कसम खाई है उस काफिर ने, कागज़ के जलाने की

मैं ख़तो में जो उसे अपना हाल लिख भेजता हूं वह उस पर खुल ही नहीं सकता क्योंकि उस ने तो मेरे भेजे हुए हर ख़त को जलाने की क़सम खा रखी है.

हमारी सादगी थी, इल्तिफाते नाज़ पर मरना,
तिरा आना न था, ज़ालिम, मगर तमहीद[1] जाने की

---

१ प्राकथन

तुम जब आए थे तो हम अपनी सादगी की वजह से उसे मुहब्बत समझते थे. लेकिन तुम्हारा आना दरअसल तुम्हारे लौट आने की तमहीद थी.

कहू क्या खूबि-ए-औज़ा[1]-ए-इबना-ए-ज़मा[2], 'गालिब',
बदी की उस ने, जिस से हम ने की थी बारहा[3] नेकी

दुनिया के रखरखाओ का गालिब क्या जिक्र करू? जिस से हम ने सौ बार नेकी की थी उसी ने बडे सलीके के साथ बदी की

उस शम'अ की तरह से, जिस को कोई बुझा दे,
मैं भी जले हुओ मे हू, दाग़-ए-नातमामी[4].

मै उस शमा की तरह हू जिस को कोई पूरा न जलने दे और फूक मार के बुझा दे. मै भी उन्हीं जले हुओ में अधूरा जलने का दाग बन गया हूं.

है कायनात को हरकत तेरे जौक से,
परतो से आफताब के, ज़र्रे में जान है

दुनिया में जो जिदगी नज़र आती है वह इसी लिए कि सब को तेरा शौक है और वह तुझे पाने के लिए जिंदा है. अपनी इस बात को और जियादा मजबूत बनाने के लिए ग़ालिब ने दूसरे मिसरे में यह दलील पेश की है कि जैसे सूरज के नूर से एकएक जर्रा चमकता है, उसी तरह तेरे शौक़ से यह दुनिया भी कायम है

हस्ती का अे'तबार भी गम ने मिटा दिया,
किस से कहू कि दागे जिगर का निशान है

ग़म की आग ने मेरे जिगर को जला कर राख कर दिया है. अब जिगर

---

१ दुनिया वाले २ रख रखाव ३ कई बार ४ अपूर्ण, असफल

के बजाय वहा एक जला हुआ निशान बाकी रह गया है ग़म की इस जला देने वाली ताकत ने मेरी नजरो में जिदगी का एतबार भी मिटा दिया है क्योकि जब उस ने जिगर को जला के राख कर दिया है तो जिदगी उस के शोलो से कैसे बचेगी?

दर्द से मेरे है तुझ को, बेकरारी, हाय हाय,
क्या हुई ज़ालिम तिरी गफ्लत शआरी हाय हाय

तुझे मेरा दर्द है और तू इस वजह से तड़प रहा है? हायहाय ऐ ज़ालिम तू ने मेरे दुख में अपना क्या हाल कर लिया है? तेरी वह आदत कहा गई कि तू मेरी तरफ ध्यान न देता था. अब अपनी उसी आदत को वापस ला और खुदा के लिए अपने आप को संभाल. तू ने मेरे ग़म में अपने साथ यह क्या जुल्म किया है?

तेरे दिल में गर, न था आशोबे गम का हौसला,
तू ने फिर क्यो की थी मेरी गमगुसारी, हाय हाय.

अगर तुझ में ग़म बरदाश्त करने की हिम्मत नहीं थी तो तुझे मेरा गम बटाना ही नहीं चाहिए था हायहाय, तू ने मेरा ग़म बाट कर अपनी जान को रोग लगा लिया

क्यो मिरी गमख़्वारगी का तुझ को आया था ख़याल,
दुश्मनी अपनी थी मेरी दोस्तदारी, हाय हाय.

तेरे दिल में मेरा गम बटाने का ख़याल ही क्यो आया. मेरे साथ दोस्ती क़रने में तू ने अपने साथ दुश्मनी कर ली, यह क्या किया तू ने?

अुम्र भर का तू ने पैमाने वफ़ा बाधा तो क्या,
अुम्र को भी तो नही है पायदारी हाय हाय

तू ने उमर भर के लिए मेरे साथ वफा करने का वादा किया भी तो

क्या? उमर तो खुद फ़ानी है

ज़हर लगती है मुझे आब-ओ-हवा-ए-ज़िंदगी,
या'नी तुझ से थी उसे नासाज़गारी, हाय हाय.

मुझे इस जिंदगी की आब-ओ-हवा ज़हर लगती है क्योंकि इसे तुझ से दुश्मनी थी, तू इस आब-ओ-हवा में जिंदा न रह सका.

शर्मे रुसवाई से, जा छुपना नकाबे खाक में,
खत्म है उलफत की तुझ पर परद'दारी हाय हाय.

तू ने इसलिए मौत की दावत कबूल कर ली कि कहीं हमारी मुहब्बत का राज दुनिया पर न खुल जाय और इस में बदनामी न हो जाय ऐ मेरे दोस्त, मुहब्बत को राज बनाए रखने की बात तुझ पर खत्म है?

खाक में नामूसे पैराने मुहब्बत मिल गई,
उठ गई दुनिया से राह-ओ-रस्मे यारी, हाय हाय

मेरा दोस्त क्या दफनाया गया, कि मुहब्बत और वफ़ा के वादे की इज्जत को मिट्टी में मिला दिया गया क्योंकि इस दुनिया में एक वही था जो मुहब्बत और वफा करता था. उस के इस दुनिया से उठते ही दोस्ती और वफ़ा खत्म हो गई.

इश्क़ ने पकडा न था, 'गालिब', अभी वहशत का रंग,
रह गया था दिल में जो कुछ ज़ौके ख्वारी, हाय हाय.

ऐ ग़ालिब, अभी मेरी मुहब्बत परवान न चढी थी कि मेरे दोस्त की वफ़ा से दिल की आरज़ूएं दिल ही में रह गईं

सर गश्तगी में, आलमे हस्ती से यास है,
तस्की को दे नवेद, कि मरने की आस है.

हम उस की तलाश में भटकतेभटकते जिंदगी ही से निराश हो चुके हैं. हमें जिंदगी में आराम और चैन पाने की जो हसरत थी, अब उस हसरत से कह दो कि हमें मरने की आस है. इसलिए अब हमेशा के लिए चैन आ जाएगा.

लेता नही मिरे दिले-आवारः की ख़बर,
अब तक वह जानता है, कि मेरे ही पास है.

आशिक कहता है कि महबूब अब उस दिल की ख़बर नहीं लेता कि जो आप का हो चुका है. कभी किसी पर मरता है और कभी किसी पर. इधर महबूब यह समझाता है कि आशिक का दिल अभी आशिक ही के पास है पर दिल कभी का गुम हो चुका है

कीजे बया सुरूरे तबे गम कहा तलक,
हर मू[१] मिरे बदन पे ज़बाने सिपास[२] है

मुहब्बत के ग़म का सुरूर कहा तक बयान किया जाए मेरा रुआं, उस का शुक्रिया अदा कर रहा है कि उस ने हमें ग़म प्रदान किया है

पी, जिस कदर मिले शवे महताब में शराब,
इस बलगमी मिजाज को गरमी ही रास है

चादनी रात चूंकि ठंढी होती है, इसलिए फरमाते हैं कि चादनी रात को जितनी शराब मिले पी, क्योंकि ठंढी रातो में बलगमी मिजाज वालो को गरम चीजें ही दी जाती है और शराब से बढ़ कर गरम चीज और क्या हो सकती है?

हर इक मकान को है मकी से शरफ, 'असद',
मजनू जो मर गया है, तो जगल उदास है

---

१ बाल. २ कृतग्य, शाकिर

हर मकान अपनेअपने रहने वालों की वजह से मशहूर होता हैं-मजनूं का घर चूंकि जंगल ही था इसलिए अब उस के बगैर जगल भी उदास हो गया है अब वहा रहने वाला कोई नहीं रहा

गर खामुशी से फायदः, अखफार-ए-हाल है,
खुश हू, कि मेरी बात समझना मुहाल है

खामोश रहने का भी तो यही लाभ है कि इस से आदमी का हाल छिपा रहता है. इसलिए अब अगर मेरी बात को समझना लोगो के लिए मुश्किल है तो मै बहुत खुश हू क्योंकि बात करने पर भी मेरा हाल किसी पर नहीं खुलता और यह एक तरह से राज है.

हैं हैं, खुदा न ख्वास्त. वह और दुश्मनी,
ऐ शौक, मुनफ'अिल, यह तुझे क्या खयाल है

वह और दुश्मनी करेगा? यह असंभव सी बात है. और अपने आप को समझाने के अदाज में कहते हैं कि यह कैसा खयाल दिल में आ बसा है. वह दुश्मनी कर ही नही सकता.

वहशत पे मेरी अर्स-ए-आफाक़ तग था,
दरिया ज़मीन को 'अरक़-ए-इनफ'आल है

मेरे जुनू के लिए यह सारी दुनिया बहुत छोटी थी, इस वजह से दुनिया को शर्म महसूस हुई तो वह पसीनापसीना हो गई और जमीन पर जो दरिया बहते हैं वह वही पसीना है

हस्ती के मत फरेब मे आजाइयो, 'असद',
'आलम तमाम हल्क़-ए-दाम-ए-खयाल है.

यह सारी दुनिया महेज एक खयाल का जाल है. इस में हक़ीक़त बिलकुल नहीं है. इसलिए ऐ असद, इस जिंदगी के धोखे में मत आ जाना.

तुम अपने शिकवे की बातें, न खोद खोद के पूछो,
हज़र करो मिरे दिल से, कि इस में आग दबी है

महबूब अपने आशिक से पूछ रहा है कि आखिर उसे क्याक्या शिकायतें हैं. ग़ालिब कहते हैं कि नहीं! इस तरह मेरे दिल से अपनी शिकायतो के बारे में खोदखोद कर न पूछो. मेरे दिल से डरो. क्योकि इस में ग़म की आग दबी हुई है. कहीं यह आग तुम्हें भी अपनी लपेट में न ले ले. यानी मेरे दिल में जो ग़म है उसे यूं ही रहने दो, ख़्वाह-मख्वाह वह बातें जबान पर आ जाएंगी जिन से तुम्हें दुख पहुचेगा और तुम भी मेरी तरह ग़मगीन हो जाओगे

जी जले ज़ौके फना की नातमामी पर न क्यो,
हम नही जलते, नफस हरचद आतिशबार है

हमारे दिल में जो मौत की तमन्ना है उस की नाकामी पर जी क्यों न जले क्योंकि हमारा हर सास आग की एक लपट है, लेकिन इस के बावजूद हम जल कर राख नहीं हो जाते.

आंख की तस्वीर सरनामे पे खेंची है, कि ता'
तुझ पे खुल जावे, कि इस को हसरते दीदार है

मैं ने सरनामे पे आंख की तसवीर इसलिए खींच दी है ताकि तुझे यह पता लग जाए कि मैं तेरी सूरत देखने को तरसता हूं

चशमे खूबा[1] खामुशी में भी नवा परदाज़[2] है,
सुरम , तू कहवे, कि दूद-ए-[3] शो'ल -ए-आवाज़ है.

खूबसूरत आंख खामोश रह कर भी बहुत कुछ कह जाती है और

---

१ खूबसूरत आख २ वातें करना ३ धुआ

उस में जो सुरमा होता है वह वास्तव में उस की आवाज़ का धुआ होता है.

अिश्क मुझ को नही, वहशत ही सही,
मेरी वहशत, तिरी शोहरत ही सही

ऐ दोस्त, तू कहता है कि मुझे मुहब्बत नहीं है, बल्कि वहशत है तो चलो वहशत ही सही तू इसी बहाने दुनिया भर में मशहूर हो जाएगा कि फला शख़्स तेरे लिए पागल है.

कत'अ कीजे न तअल्लुफ हम से,
कुछ नही है, तो अदावत ही सही

हम से सबध बिलकुल न तोड लो. कुछ नहीं है तो दुशमनी ही सही. इसे तो रहने दो.

मेरे होने मे है क्या रुसवाई,
अय, वह मजलिस नही, खल्वत ही सही

तुम मुझे अपनी महफ़िलो में इसलिए नहीं आने देते कि कहीं तुम्हारी बदनामी न हो जाए, लेकिन यह तुम्हारा डर अकारण है. वैसे अगर भरी महफ़िल में नहीं आने देते तो अकेले में बुला लो, वहा तो कोई नहीं देखेगा और तुम्हें बदनामी का डर भी न होगा. यह तो आशिक की दिली तमन्ना होती है कि उस का महबूब उस से बिलकुल अकेले में मिले.

हम भी दुश्मन तो नही है अपने,
गैर को तुझ से मुहब्बत ही सही

चलो मान लिया कि हमारे दुशमन को तुझ से मुहब्बत है अब इस का यह मतलब तो नहीं कि हम अपनी जान के दुशमन बन जाए· यह जानते हुए भी तुझे दिल दे बैठे कि तू अब किसी और का है

अपनी हस्ती ही से हो, जो कुछ हो,
आगही गर नही, गफलत ही सही

इस शेर के दो मतलब हैं. एक तो यह कि अपने आप को जान लेना या अपने आप से गाफिल हो जाना, अपनी ही हिम्मत से हो. इस में किसी और की मदद न लेनी पड़े. दूसरा मतलब यह हैं कि तू किसी और के बारे में बाख़बर या ग़ाफिल न हो. जो कुछ हो, अपनी ज़ात ही से हो.

'अुम्र हर चद कि है बर्क़ ख़िराम,
दिल के ख़ू करने की फुरसत ही सही

जिंदगी का चाहे कुछ भरोसा नहीं है, फिर भी हम ने इतना वक्त निकाल लिया है कि तेरे ग़म में अपने दिल का ख़ून कर सकें. जिंदगी की मुसीबतो में इश्क के ग़म का ज़िक्र किया है.

हम कोई तर्क वफा करते है,
न सही 'अिश्क, मुसीबत ही सही

इश्क लाख मुसीबत हो, लेकिन हम क्या वफा के रास्ते से हट जाने वाले है? लाख दुख पड़ें लेकिन हम वफा करते जाएगे

कुछ तो दे, ऐ फलक-ए-नाइनसाफ,
आह-ओ-फरियाद की रुख़सत ही सही

अन्यायी आस्मान हमें कुछ तो दे कम से कम उस के गम में रोने की इजाज़त तो दे!

हम भी तस्लीम की ख़ू डालेंगे,
बे नियाज़ी तेरी 'आदत ही सही

ऐ दोस्त, हमने माना कि यह लापरवाई तेरी आदत है, इसलिए हम

भी ऐसी बातों से घबराने के नहीं. हम भी बराबर तुझे आ कर मिलते रहेंगे और आखिर तेरी यह बेनियाजी की आदत बदल के रहेंगे. तुझे आखिर मिलना-जुलना पसद करा देंगे

यार से छेड़ चली जाए, 'असद',
गर नही वस्ल, तो हसरत ही सही.

ऐ असद, अगर उस से मिलना नहीं हो सकता तो मिलने की तमन्ना ही सही. उस से जाजा कर मिलते रहो और अपने दिल का हाल कहते रहो.

मकदूर हो तो खाक से पूछू कि, ऐ लईम[1],
तु ने वो गंज्हा-ए-गिरामाय.[2] क्या किए ?

अगर कभी किस्मत ने साथ दिया तो मैं इस मिट्टी से पूछूंगा कि ऐ कंजूस तू ने वह अनमोल खजाने क्या किए जो तेरे अंदर दबे हुए थे. जिन्हें तेरे सीने से निकालना था और दुनिया को मालामाल करना था. बोल, क्या तू उन्हें खा गई?

ज़िद की है और बात, मगर खू बुरी नही,
भूले से उस ने सैकडो वादे वफा किए.

इस शेर में महबूब पर बडी प्यारी चोट है. वह अपनी ज़िद पर अड गया है यह और बात है. लेकिन वह तबीअत का बुरा नहीं. उस ने अब तक भूले से सैकड़ो वादे पूरे किए हैं. लेकिन इस शेर में एक खास पहलू यह है कि उस ने जितने वादे किए अंजाने में किए. अगर जानता हो तो एक भी वादा न निभाता.

---

१ कजूस २ अनमोल खजाना

'ग़ालिब, तुम्ही कहो, कि मिलेगा जवाब क्या,
माना कि तुम कहा किए और वह सुना किए

ऐ ग़ालिब हम मानते है कि हम उन से कहते रहे और वह सुनते रहे, मगर यह तो कोई बताओ कि हमारी बातो का जिन में केवल प्रेम ही प्रेम भरा है वह क्या जवाब देंगे.

मै नामुराद दिल की तसल्ली को क्या करू,
माना, कि तेरे रुख से निगह कामयाब है.

मै नें माना कि तुझे देख कर इन आखो ने अपनी प्यास बुझा ली है लेकिन मै तो नामुराद ही रहा, क्योंकि तुझे देख कर दिल तुझ से मिलने के लिए तड़प उठा था. अब मै इस की तसल्ली कैसे करू?

गुजरा 'असद', मुसर्रत-ए-पैगाम-ए-यार से,
क़ासिद प मुझ को रश्के सवाल-ओ-जवाब है

उस तक पैग़ाम भेजने की सारी खुशिया ईर्ष्या के इस भाव की शिकार हो के रह गईं कि पैग़ाम मेरा होगा लेकिन उस से बातें तो वही करेगा जो मेरा पैग़ाम ले कर जाएगा.

देखना किस्मत कि आप अपने पे रश्क आ जाए है,
मै उसे देखू, भला कब मुझ से देखा जाए है

जब उस ने एक नजर देख लेने की इजाजत दे दी तो मुझे अपने आप पर रश्क आ गया कि मै और उसे देखूं.

ग़ैर को, यारब, वह क्यो कर मन'-ए-गुस्ताखी करे,
गर हया भी उस को आती है, तो शरमा जाए है,

जब ग़ैर कोई उस से छेड़छाड़ करता है तो वह उसे कैसे रोक दे?

क्योंकि उस की किसी बात पर जब उसे हया आती है तो वह बुरी तरह शरमा जाता है

शौक को यह लत, कि हरदम नालः खेंचे जाइए,
दिल की यह हालत, कि दम लेने से घबरा जाए है

इश्क को यह इल्लत पड गई है कि हरदम बैठे आहें भरता रहे और दिल की यह हालत हो चुकी है कि दम लेते ही घबरा जाता है यानी कि दम निकला ही जाता है.

गरचेः है तर्ज़े तगाफुल, परद दारे राज़े 'अिश्क,
पर हम ऐसे खोए जाते है, कि वह पा जाए है.

किसी से ग़ाफ़िल हो जाने का अदाज मुहब्बत के राज़ का पर्दा होता है लेकिन हम उसे देख कर ऐसा खो जाते है कि वह जान लेता है कि हम उस से मुहब्बत करते है. यानी किसी भी तरह हमारी मुहब्बत उस से छिपी नहीं रहती.

उस की बज़्म आराइया[1] सुन कर, दिले रज़ूर[2], या[3],
मिस्ल-ए-नक्श-ए-मुद्द'आ-ए गैर, बैठा जाए है

जब मुझ तक यह बात पहुची कि वहां महफिल सजाई जा रही है तो मेरा ग़म का मारा दिल बैठने लगा कि नहीं मालूम आज गैर उस से क्याक्या बातें करेंगे.

हो के 'आशिक वह परीरुख़, और नाज़ुक बन गया,
रग खुलता जाए है, जितना कि उडता जाए है

पहले तो वह परी जैसा खूबसूरत महबूब सिर्फ महबूब ही था, लेकिन अब जब से उसे किसी से इश्क हुआ है, और वह खुद किसी का आशिक

---

१ महफिल सजाना. २ गमजदा दिल ३ यहा

बमा है तो वह और भी नाजुक हो गया है. क्योंकि मुहब्बत में इंसान का रंग उड़ जाता है और वह कुछ खोयाखोया रहता है. लेकिन जब से वह महबूब खोयाखोया रहने लगा है उस के हुस्न में चार चाँद लग गए हैं.

नक्श को उस के, मुसव्विर पर भी क्या क्या नाज़ है,
खेंचता है जिस क़दर, उतना ही खिचता जाए है

महबूब की सुन्दरता को चित्रकार पर कितना नाज़ है कि चित्रकार जितना नक्श खींचता है और उसे देखता है तो यह ज्ञात होता है कि अभी उस के नाज को पकड़ तक नहीं सका

सायः मेरा, मुझ से मिस्ले-दूद भागे है, 'असद',
पास मुझ आतिश बजा के, किस से ठहरा जाए है.

मैं आग में इस तरह जल रहा हूं कि मेरा साया भी धुएं की तरह मुझ से दूर भागता है.

निस्य-ओ-नक्दे दो 'आलम की हकीकत मा'लूम,
ले लिया मुझ से, मिरी हिम्मते 'आली ने मुझे.

इस दुनिया में जो कुछ मिला है और दूसरी दुनिया में जो कुछ मिलेगा, मैं उस की हकीकत जानता हू यानी मेरी नज़रो में इस की कोई वक्त नही है. मैं तो अपनी हिम्मत का कायल हू. जो कुछ लूंगा अपनी हिम्मत से हासिल करूगा. दूसरी दुनिया के झूठे वादो या इस दुनिया के झूठे लेनेदेने पर मुझे एतबार नहीं है.

कस्रत-ए-आराइ-ए-वहदत, है परस्तारि-ए-वह्स,
कर दिया काफिर इन असनाम-ए-खयाली ने मुझे

रियाज और तपस्या के बेशुमार जलवे देखना महज वहम को पूजन

वाली बात है मुझे अपने खयाली बुतों ने ही तो ईमान की राह से हटाया है और काफिर बनाया है.

हवसे गुल का तसव्वुर में भी खटका न रहा
'अजब आराम दिया, बेपर-ओ-बाली ने मुझे.

जब उड़ने के लिए पर ही नहीं रहे तो फिर अब चमन में उड कर जाने और वहां फूलो का जलवा देखने की तमन्ना कैसी? फूलो को देख कर जो मेरे दिल की बेताबी बढ जाती थी, अब वह बेताबी भी नहीं रही. इसलिए अगर मेरे पर नहीं रहे तो मुझे एक तरह से अजीब किस्म का आराम है

उग रहा है दर-ओ-दीवार से सब्ज़, ग़ालिब',
हम बयाबा में हैं और घर मे बहार आई है

घर की वीरानी का नक्शा खींच रहे हैं. कहते हैं कि हमारा घर बरसों से उजाड़ था इसलिए अब वहां दीवारो पर काई उग आई है दरवाजो की दराजो से घास उग रही है. ग़ालिब इसी को बहार कह रहे हैं और कहते है कि हम उस घर को छोड़ कर यहा वीराने में पडे हुए है जहा बहार आ गई है.

देखना तकरीर की लज़्ज़त, कि जो उस ने कहा,
मैं ने यह जाना, कि गोया यह भी मेरे दिल में है

हम कई बार बातोबातो में किसी की बात पर कह देते हैं. तू ने मेरे दिल की बात कह दी है. ग़ालिब भी इस शेर में यही कह रहे हैं कि उस के बात करने का सलीका तो देखो कि उस ने जो भी कहा मुझे यू लगा कि जैसे यह भी मेरे दिल की बात कह दी.

गरचेः है किस किस बुराई से, वले[1] बा ईं हमः[2],
जिक्र मेरा, मुझ से बेहतर है, कि उस महफिल में है.

हालांकि वहा मेरी बुराई पर बुराई हो रही थी लेकिन इस के बावजूद मुझे यह तसल्ली है कि मेरा जिक्र हो रहा है. इस लिहाज से तो मुझ से मेरा जिक्र ही बेहतर है कि उन की महफ़िल में होता तो है.

वस, हुजूमे नाउमीदी, ख़ाक में मिल जाएगी,
यह जो एक लज्ज़त हमारी स'अि-ए-बेहासिल मे है.

हम जानते है कि हमारी कोशिशें बेकार जाएगी. हम नाकाम रहेंगे, लेकिन इस तरह बारबार कोशिश करने में भी हमें एक ख़ास स्वाद मिल रहा है. और यह जो हमारे दिल में निराशाओ का जमघट लग गया है अगर यह दिल से अलग न हुआ तो हमारी नाकाम कोशिशो के स्वाद को खत्म कर देगा.

रज-ए-रह क्यो खेंचिए, वामादगी से 'अिश्क है,
उठ नही सकता, हमारा जो कदम मजिल में है.

हम सफर करतेकरते आखिर थक कर निढाल हो कर रास्ते में गिर पड़े है. हमारी इस ख़स्ता हालत को हम से इश्क हो गया है इसलिए वह अब हमें आगेआगे चलने नहीं देगी. लिहाजा अब हमारा मजिल तक पहुचना नामुमकिन है

है दिल-ए-शोरीद -ए-'गालिव' तिलिस्म-ए-पेच-ओ-ताव,
रह्म कर अपनी तमन्ना पर, कि किस मुश्किल में है

ऐ दोस्त, देखो कि ग़ालिब का दीवाना, तड़पने में भी एक पहेली वन गया है और यह मेरी ही तमन्ना मे तड़प रहा है. इसलिए इस दिल में

---

१ लेकिन २ इस के बावजूद

तेरी तमन्ना भी तड़प रही है. अब तू हम पर नहीं तो कम से कम अपनी तमन्ना पर तो रहम कर. जरा देख तो सही कि तेरी तमन्ना मेरे दिल में कितना तड़प रही है.

दिल से तिरी निगाह जिगर तक उतर गई,
दोनो को इक अदा में रज़ामद कर गई

तेरी एक ही निगाह मेरे दिल और जिगर में उतर गई है और अपनी एक ही अदा से दोनो को अपना बना गई है.

शक[1] हो गया है सीन', ख़ुशा[2] लज्ज़ते फराग
तकलीफे परद दारि-ए-ज़ख्मे जिगर गई.

जुदाई के मारे सीना फट गया है. वाहवाह रे जुदाई की लज्जत! तुझ मुबारक हो. अब हमें अपने जिगर के जख्म छिपाने के लिए कोई तकलीफ नहीं करनी पड़ेगी.

वह बादः-ए-शबानः की सरमस्तिया कहा,
उठिए बस अब, कि लज्ज़ते ख्वाबे सहर गई.

इस शेर के बारे में यह बात मशहूर है कि गालिब न यह शेर हिंदुस्तान पर अंगरेजी हुकूमत आने पर कहा था इशारों ही इशारों में कह रहे है कि अब वह भरी महफिल की मस्तिया और शराब के दौर कहा! उठिए, अब सुबह हो गई है और वह ख्वाब देखने की लज्जत भी चली गई है.

उढती फिरे है खाक मिरी, कू-ए-यार में,
बारे अब ऐ हवा, हवसे बाल-ओ-पर गई.

हम मिट्टी में मिल गए हैं और हमारी खाक यार की गलियों में

---

१ फट जाना. २ मुबारक हो.

उड़ती फिर रही है. पहले तो वहा हमें ख़ुद उड़ कर पहुचने की हसरत थी, लेकिन अब हवा ही हमारी खाक को उड़ा कर वहां ले गई है.

देखो तो, दिलफरेबि-ए-अदाज़-ए-नक्शे-पा,
मौजे खिरामे यार भी, क्या गुल कतर गई

मेरे दोस्त के चलने के अंदाज ने जमीन पर क्याक्या नक्श बनाए हैं. क्या-क्या शगूफ़े छोड़े हैं कि जिसे देखो उधर ही को चला जा रहा है जिधर उस के कदमो के निशान जाते हैं.

हर बुल्हवस ने हुस्नपरस्ती शि'आर की
अब आबरू-ए-शेवः-ए-अह्ल-ए-नज़र गई

अब हर लालच के बदे और मतलबी शख़्स ने हुस्न को पूजना शुरू कर दिया है अब हुस्न की पहचान रखने वालो की आबरू मिट्टी में मिल गई है क्योकि अब लालची लोग अपना मतलब पूरा करने के लिए न जाने किस चीज़ को ख़ूबसूरत करार दे रहे हैं और उसे पूजने लगे हैं. यह तो सिर्फ ज्ञानी ही जानते हैं कि कौन सी चीज ख़ूबसूरत है और पूजे जाने के क़ाबिल है लेकिन चूकि हर ऐरागैरा अपनेआप को ज्ञानी समझने लगा है इसलिए अब यह पहचानना भी मुश्किल हो गया है कि ख़ूबसूरती क्या है और ख़ूबसूरती को परखने वाली नजर क्या है. इस शेर में ग़ालिब सिर्फ़ प्यार और रूप के मूल्यो के पतन का रोना नहीं रो रहे हैं बल्कि शेरो-शायरी और जिदगी की हर ख़ूबसूरत और अच्छी क़दर की पस्ती का रोना रो रहे हैं. यह शेर हर जमाने के बड़े शख़्स के हार्दिक भावों का प्रतिरूप है. विशेषकर आज के ज़माने में जब कि भले बुरे की इस तमीज कदर मिट चुकी है कि जाहिल और ग़लत किस्म के लोग ताकत सभाले बैठे है और सूझबूझ रखने वाले लोगो को अपने इशारो पर नचाना चाहते हैं.

नज़्ज़ारे ने भी, काम किया वा नकाब का,
मस्ती से हर निगह तिरे रुख़ पर बिखर गई.

तू ने अपने चेहरे से नक़ाब उलट दिया और सब को अपना जलवा देखने की दावत तो दे दी लेकिन तेरे जलवे की ताब कौन लाता. लिहाज़ा जिस किसी की नज़र तेरे चेहरे पर पड़ी वह इतनी मस्त हुई कि मुझे देखना तो क्या था तेरे चेहरें ही पे बिखर के रह गई. तेरे हुस्न का नज़ारा भी एक तरह से नकाब बन गया.

फरदा-ओ-दी-का तफरकः यक बार मिट गया,
कल तुम गए कि हम पे कयामत गुज़र गई.

तुम्हारे चले जाने से तो हम पे क़यामत गुजर गई क्योंकि हमारे दमाग़ से आज और कल का फ़र्क़ ही मिट गया है. हमें अपनी सुध-बुध तक भूल गई है और कुछ नहीं जानते कि क्या है किस हाल में है-कल क्या थे, या कल क्या होंगे.

मारा ज़माने ने, असुदुल्लाह खा, तुम्हे,
वह वलवले कहा, वह जवानी किधर गई

ऐ असदुल्ला खां तुम्हे तो ज़माने की सख्तियो ने मार दिया क्योंकि अब वह उमगें, वह तरगें और वह जवानी की अदाए न रहीं. वह तो केवल एक भूला बिसरा सपना बन कर रह गई है!

तस्की को हम न रोए, जो ज़ौक़-ए-नज़र मिले
हूराने खुल्द में तिरी सूरत मगर मिले

हमारी आंखो को तो सिर्फ तेरी सूरत से तसल्ली होती है. तू चूंकि हमें अपना जलवा दिखाता नहीं और तुझ जैसा कोई दूसरा है नहीं, इसलिए हम इतने ग़मगीन और दुखी रहते हैं. हम एक दिन इस दुख के

हाथो चल बसेंगे. अब तो यही उम्मीद है कि वहा जन्नत की हूरो में शायद किसी एक की सूरत तुझ से मिलती-जुलती हो और उस से हमारी कुछ तस्कीन हो जाए.

अपनी गली मे, मुझ को न कर दफ्न, ब'द-ए-क़त्ल,
मेरे पते से खल्क को क्यो तेरा घर मिले.

मुझे क़त्ल करने के बाद अपनी गली में न दफनाना. क्योकि उस से लोगो को तेरे घर का रास्ता मालूम हो जाएगा और जब कोई किसी से तेरे घर का रास्ता पूछेगा तो बताने वाला यही बताएगा कि वह जो ग़ालिब का मज़ार है, वहीं तो उस का महबूब रहता है उसी ने तो उस को कत्ल किया था और वहीं दफना दिया गया था. इस से लोगो को तेरे घर का रास्ता मालूम होगा और इस तरह तेरी बदनामी होगी

लेकिन इस शेर में जो ख़ास बात है वह है ईर्ष्या की. दूसरा मिसरा पढ़िए और देखिए कि 'क्यो' क्या कह रहा है यानी, क्यो किसी को तेरा घर मेरे पते से मिले? क्यो कोई वहा आए?

साकीगरी की शर्म करो आज, वरन. हम,
हर शब पिया ही करते है मै, जिस कदर मिले.

ऐ महबूब, आज तो तू मेरा साक़ी है जी भर के पिला दे और कुछ नहीं तो अपने साकी होने की शर्म कर. वरना हर रात तो हमें जितनी शराब मिलती थी, पी लेते थे, लेकिन आज तो मेरा साकी तू है इसलिए दिल की हसरत निकाल दे!

तुझ से तो कुछ कलाम नही, लेकिन ऐ नदीम,
मेरा सलाम कहियो, अगर नामवर मिले

जिस महबूब ने ख़त का जवाब नहीं दिया उसी से कह रहे है कि हमें तुझ से तो कुछ नहीं कहना, हा अगर कहीं रास्ते में चिट्ठी ले जाने

वाला मिल जाए तो उस से मेरा सलाम कहना. मैं ने कभी एक खत लिखा था, अभी वह उस का जवाब नहीं लाया.

तुम को भी हम दिखाए, कि मजनू ने क्या किया,
फुरसत कशाकश-ए-गम-ए-पिनहा से गर मिले

हमारे दिल में जो तुम्हारा गम है, हम उसे सहन करने में जरा सफल हो जाए फिर तुम्हें दिखाएगे कि मजनू ने लैला के प्यार में क्या किया था.

लाज़िम नही, कि खिज्र की हम पैरवी करें,
माना कि इक बुज़ुर्ग हमें हमसफर मिले

खिज्र उस आदमी को कहते है जो कभी नहीं मरता और भटके हुए लोगो को रास्ता बताता है. गालिब कहते है कि यह कोई जरूरी तो नहीं कि हम उसी के दिखाए हुए रास्ते पर चलें. हम अपने रास्ते पर चलेंगे हा इतना ज़रूर मानेंगे कि रास्ते में एक बुज़ुर्ग कुछ देर तक हमारे साथ चलते रहे थे

अय साकिनान-ए-कूचः-ए-दिलदार, देखना,
तुम को कही जो गालिब-ए-आशुफ्त सर मिले.

इस शेर के दो अर्थ है एक तो यह कि ऐ मेरे महबूब की गली में रहने वालो, जरा उस ग़ालिब दीवाने को देखना जो वहां आया था और वहीं कहीं खो गया है. दूसरा मतलब इस शेर का यह भी है कि ऐ मेरे महबूब की गली में रहने वालो, जब ग़ालिब वहां आएगा तो उस समय देखना कि प्यार करने वाले कैसे होते है तुम उस की गली में रहते हो तो क्या हुआ, तुम में से किसी को भी प्यार की अदा छू तक नहीं गई.

कोई दिन, गर जिंदगानी और है
अपने जी में हम ने ठानी और है

जब हम यह कहते हैं कि अच्छा अगर इस दुख से जिंदा रहे तो हम ने भी कुछ दिल में ठान रखी है यानी वह बात ही ख़त्म कर देंगे जिस के आधार पर यह दुख उठाया था. अगर तेरे ग़मो के हाथो हम कुछ दिन और जिंदा रहे तो हम तुम्हारी तरफ मुह तक न करेंगे तुम से कोई सबध न रखेंगे

आतश-ए-दोज़ख मे यह गरमी, कहा,
सोज़-ए-गमहा-ए-निहानी और है

जो ग़म मैं अपने सीने में छुपाए बैठा हू और उस ग़म की आग जहन्नुम की आग से कहीं बढ कर तेज है.

बारहा देखी है उन की रंजिशें,
पर कुछ अब के सरगिरानी और है

यो तो हम ने उन्हें कई बार रूठते और बिगडते देखा है, लेकिन अब के तो उन्हें जितना गुस्सा आया है, और वह जितना बिगड़े है, इतना पहले कभी न बिगडे थे साफ है कि पहले तो वह बिगड कर मान भी जाते थे लेकिन अब वह कुछ इस तरह बिगडे है कि उन्हें मनाना भी मुश्किल नज़र आता है

दे के ख़त, मुह देखता है नामवर,
कुछ तो पैगाम-ए ज़बानी और है

महबूब की चिट्ठी लाने वाला व्यक्ति ग़ालिब के हाथ में वह ख़त दे कर अब ग़ालिब का मुह देख रहा है अब उस के जितने मतलब चाहिए, निकाल लीजिए. एक तो यह कि वह देख रहा है कि इस

व्यक्ति को, और उस ने खत लिखा यानी यह वह व्यक्ति है जिस से उस जानलेवा हुस्न का संबंध है

दूसरा मतलब यह कि चिट्ठी लाने वाला अब ग़ालिब और उन के महबूब का अपने आप को भेदिया समझ रहा है कि तुम्हारे उन से होने वाले पत्रव्यवहार को हम जानते है तुम्हारी मुहब्बत का भेद हमें मालूम है. तीसरा मतलब यह कि जब ग़ालिब के महबूब ने ग़ालिब के नाम ख़त को पकडाया होगा तो कुछ बुरी भली सुनाई होगी और कहा होगा कि उस से जा कर कह देना कि क्यो ख़त लिखलिख कर मेरा और अपना वक्त बरबाद कर रहा है क्यो मेरी मुसीबत बना हुआ है अब वह नामाबर ग़ालिब को ख़त दे कर उस का मुह देख रहा है कि कुछ उन्होंने जबानी पैग़ाम भिजवाया है, वह कहू या न कहू. ग़ालिब इस बात को समझ गए कि नामाबर को कुछ और भी कहना है. तभी कहते हैं—दे के ख़त मुंह देखता है नामाबर, कुछ तो पैग़ामे जबानी और है.

हो चुकी, 'ग़ालिब,' बलाएं सब तमाम,
एक मर्ग-ए-नागहानी और है

ऐ ग़ालिब, अब तो सब बलाएं हम पर ख़त्म हो चुकी हैं अब तो सिर्फ ले दे कर मौत का ही आना बाकी रह गया है. और उस का कुछ पता नहीं कि कब आए क्योंकि अगर यह मालूम ही हो जाए कि फला दिन हमारी मौत का है तो यह सब दुख आधे हो जाए कि चलो उस दिन इन दुखो से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा

कोई उम्मीद बर नही आती,
कोई सूरत नजर नही आती.

कोई भी उम्मीद पूरी नहीं होती और न ही उस के पूरा होने की कोई सूरत ही नजर आती है.

मौत का एक दिन मु'अय्यन[1], है,
नींद क्यो रात भर नही आती

यह तो हम जानते है हमें भी किसी दिन मौत आएगी लेकिन हम उस के इतजार में इतना क्यो रहें? अब इस शेर के शाब्दिक सौंदर्य को भी देखिए मौत का तो एक दिन नियत है ही लेकिन फिर भी हमें रात भर नींद नहीं आती, क्योंकि इस उलझन में रहते है कि न जाने किस समय आ जाए.

आगे आती थी हाल-ए-दिल पे हसी,
अब किसी बात पर नही आती

पहले तो हमें अपने हाल पर हसी आया करती थी पर अब बिलकुल नहीं आती, क्योंकि हम यह नहीं जानते थे कि इश्क में हमारा यहा तक हाल हो जाएगा

जानता हू सवाब-ए-ता'अत-ओ-ज़ोह्द,
पर तबी'अत उधर नही आती.

ग़ालिब इस शेर में उस व्यक्ति को सबोधित करते है जो उन से आ कर यह कह रहा है कि क्यो अपनी ज़िदगी इश्क और मुहब्बत के चक्कर में तबाह कर रहे हो आख़िर तुम्हें एक दिन ख़ुदा के सामने पेश होना है कुछ उस की भक्ति कर लो, उस का तुम्हें कुछ पुण्य मिलेगा तुम्हें इस इश्क मे इस दुनिया में भी बरबादी और उस दुनिया में भी बरबादी के अलावा कुछ न मिलेगा इस पर ग़ालिब कहते है कि तुम्हारी बातें ठीक है जी को लगती है मैं जानता हू कि भक्ति करने से पुण्य मिलता है लेकिन करू क्या, उधर मेरी तबीयत आती

---

१ नियत

ही नहीं

है कुछ ऐसी ही बात, जो चुप हू
वरन क्या बात कर नही आती

मैं अगर चुप हू तो कोई खास ही कारण होगा. वरना क्या मेरे मुह में जबान नहीं है, या मुझे कुछ कहना नहीं आता? अब वह बात जिस पर मैं चुप हू राज ही रहने दो, वरना ख्वाहमख्वाह तुम को भी रज होगा

हम वहा हैं, जहा से हम को भी
कुछ हमारी खबर नही आती

हम मस्ती की उस सीमा पर जा पहुचे है कि जहा हमें अपनी भी सुध नहीं है.

मरते हैं आरजू में मरने की,
मौत आती है, पर नही आती

अब तो हमें केवल मौत की ही आस रह गई है पर वह भी नहीं आती कि हम इस कष्ट के जीवन से छुटकारा पा जाए

दिल-ए-नादा, तुझे हुआ क्या है,
आखिर इस दर्द की दवा क्या है

ऐ नादान दिल तुझे क्या हो गया है? क्या तुझे किसी से प्यार हो गया है? मुहब्बत ने तुझे जो दर्द दिया है, आखिर इस दर्द की कोई दवा भी है?

हम हैं मुश्ताक और वह बेज़ार,
या इलाही, यह माजरा क्या है

ए खुदा, आखिर यह माजरा क्या है कि हम तो उन्हें देखने और उन से मिलने के लिए बेचैन है और वह है कि हम से दूर भागते है

मै भी मुह में जबान रखता हू,
काश, पूछो, कि मुद्द'आ क्या है.

ऐ महबूब तू हर एक से उस का हाल पूछता है केवल मुझ से ही नहीं पूछता. क्या मेरे मुह में जबान नहीं है जो तेरी बात का जवाब दे सकूं. आखिर मुझ से ही इतनी दुश्मनी क्यो है ?

जब कि तुझ बिन नही कोई मौजूद,
फिर यह हगाम-ऐ-खुदा क्या है

ऐ खुदा! जब कि तेरे सिवा इस दुनिया में कुछ है ही नहीं तो आखिर ससार में आपाधापी किस ने मचा रखी है

यह परी चेहर लोग कैसे है,
गमज़-ओ-अिश्व-ओ-अदा क्या है

यह लोग जिन के चेहरे परियो जैसे सुंदर है और इन की तीखी नजाकतें, इशारे, यह सब इन्हें कौन सिखाता है ?

सब्ज़-ओ-गुल कहा से आए है,
अब्र क्या चीज़ है, हवा क्या है

यह हरियाली और यह फूल कहा से आए है? अगर यह जमीन से निकलते है तो इन्हें इतने रग कहां से मिलते है? यह बादल क्या चीज है, हवा क्या है ?

हम को उन से, वफा की है उम्मीद,
जो नही जानते, वफा क्या है

हम उस हरजाई से भी वफा की आस लगा रहे हैं जिस ने केवल तडपाना ही सीखा है और जिसे यह भी मालूम नहीं कि वफा है किस चीज़ का नाम

हा भला कर, तिरा भला होगा,
और दरवेश की सदा क्या है.

फकीरो को कोई कुछ दे न दे, लेकिन वह सब को यही दुआ देते है हा, भला कर तेरा भला होगा यानी अगर तू किसी और का भला करता है तो उस में खुद तेरी भलाई है.

जान तुम पर निसार करता हू
मै नही जानता, दुआ क्या है.

किसी पर जान निछावर करते समय कुछ दुआए इत्यादि पढी जाती है. ग़ालिब कहते है कि मै उन दुआओ वग़ैरह से भली प्रकार परिचित नहीं हू मै तो तुम पर केवल जान ही कुरबान कर सकता हू. सो कर रहा हूं.

मै ने माना कि कुछ नही 'गालिब',
मुफ्त हाथ आए, तो बुरा क्या है

इस शेर में ग़ालिब अपने महबूब से कह रहे है कि मै ने माना कि ऐ महबूब कुछ भी नहीं है लेकिन तुझे तो मेरा दिल मुफ्त में मिल रहा है. अब तुझे लेने में क्यो इनकार हो रहा है.

कहते तो हो तुम सब, कि बुत-ए-गालिय. मू[1] आए,
इक मर्तब घबरा के कहो कोई कि, वो आए.

---

१ महकती हुई जुल्फो वाला

तुम सब लोग यह तो कह रहे हो कि काश, वह महकती हुई जुल्फो वाला आ जाए लेकिन कोई हमारे दिल की बात भी तो कह दे. यानी लपक कर उठे और कहे, लो भई, वह आ गए. इस शेर में प्रतीक्षा की हालत को एक खास अदाज से बयान किया गया है. हमें जब किसी का सख्त इतजार होता है और कहीं हम सब दोस्त बैठे उस की बातें कर रहे हो और अचानक कोई कह दे कि 'वह आ गया' तो दिल में एक अजीब किस्म की खुशी की लहर सी दौड जाती है

> हू कशमकश-ए-नज़'अ मे, हा जज्ब-ए-मुहब्बत,
> कुछ कह न सकू, पर वह मिरे पूछने को आए

ऐ मुहब्बत की कशिश, मैं तो अब आखिरी सासो पे हू. मेरी जान होठो पर अटकी है. अब तू अपना असर दिखा दे अगरचे मैं अब उस से कुछ कहने के काबिल नहीं हू, लेकिन वह मेरा हाल ही पूछने को आए.

> है साअिक.[1]-ओ-शो'ल -ओ-सीमाब[2] का 'आलम,
> आना ही समझ में मिरे आता नही, गो आए

बिजली सी कूध गई या शोला सा लपक गया या कोई पारा था जो एक पल भी ठहर न सका. वह मेरे यहा आए तो जरूर लेकिन ऐसा आना मेरी समझ में आता ही नहीं कि आए और चले गए.

> हा अहल-ए-तलब[3], कौन सुने ता'न -ए-नायाफ्त[4],
> देखा, कि वह मिलता नही, अपने ही को खो आए.

सच्ची लगन वाले असफलता पर ताना कैसे सनें? हम ने जब देखा कि वह तो मिलता नहीं, तो हम अपने आप ही को उस की तलाश

---

१ बिजली २ पारा ३ सच्ची लगन के लोग ४ नाकामी

में गुम कर आए?

अपना नही यह शेव, कि आराम से बैठे,
उस दर पे नही वार, तो का बे ही को हो आए

हम उन लोगो में से नहीं है जो आराम से बैठे रहेगे. जब देखा कि हम उस के दरवाजे के अन्दर नहीं जा सकते, तो वहा दरवाजे पर बैठे रहने के बजाय उठे और उठ कर मस्जिद ही को चल दिए यानी जहां ईश्वर की बदना होती है. वह ग़ालिब की नजरो में दूसरे नवर पर है अगर महबूब का द्वार ग़ालिव के लिए बद न होता तो वह वहां हरगिज न जाते.

की हमनफसो ने असर-ए-गिरिय में तकरीर,
अच्छे रहे आप उस से, मगर मुझ को डबो आए

हमारे दोस्तो ने जब उस के ग़म में हमारा यह हाल देखा कि आसू थमते ही नहीं तो उन्होंने वहां जा कर उस से कुछ कहा सुना लेकिन सारी बात का नतीजा यह हुआ कि उस से बुरे हम बने यह तो अच्छे रहे. लेकिन हमें डुबो कर आए. जब तक उन लोगो ने वहा जा कर कुछ कहा, तब तक वह हम पर बरसे तो नहीं थे लेकिन अब तो वह हमारे नाम तक से मुह फेरने लगे

उस अजुमन ए-नाज़ की क्या बात है, 'गालिव',
हम भी गए वा, और तिरी तकदीर को रो आए

ऐ गालिव, आज हम भी उस नाजनीन की महफिल में गए जिस की तारीफ हर व्यक्ति की जबान से सुनी और यह भी सुना कि वहा जा कर कोई नामुराद और नाकाम नहीं लौटता. यह बात तो उस की महफिल की है अब रहा सवाल नाकाम लौटने का तो हम जा कर तेरी तकदीर को रो आए (यानी कुछ नहीं बना)

फिर कुछ इक दिल की बकरारी है,
सीन जोया-ए-ज़ख्म-ए-कारी है

हमारा दिल फिर बेकरार है शायद इसे कोई गहरा जखम खाने की तमन्ना है.

फिर उसी बेवफा पे मरते हैं,
फिर वही जिदगी हमारी है

हम ने कुछ देर के लिए उस बेवफा को भुला रखा था तो चैन से जी रहे थे. लेकिन फिर उस की याद आई और हम फिर उस पर मरने लगे. फिर वही पहले की सी जिदगी गुजरने लगी है यानी न दिन को चैन है न रात को नींद

बेखुदी बेसबव नही, 'गालिब'
कुछ तो है, जिस की परद.दारी है

ऐ 'ग़ालिब' तू जो इस तरह हर वक्त एक नशे में रहता है और मस्त नजर आता है, उस का कोई न कोई तो सबब है कुछ तो है जिसे तू छिपा रहा है इस के पीछे छिपा हुआ मतलब यह है कि किसी से तू आज अपने दिल की बात जरूर कर आया है. यह शेर हर आदमी के ऊपर लागू होता है. अगर हमें किसी से मुहब्बत हो और हम अपने दिल की बात उस से कह दें और उधर से ऐसा जवाब मिले जिस में उस की हा हो, तो हम अजीबोगरीब तरीको से अपनी खुशी को छिपाने की कोशिश करते है और वैसे भी हम पर एक अजीब नशा सा छा जाता है.

कशाकशहा-ए-हस्ती मे करे क्या स'अि-ए-आज़ादी,
हुई जजीर, मौज-ए-आव को फुरसत रवानी की

जिदगी की मुसीबतो से आजाद होने की कोशिश कोई क्या करे? उस की आजादी ही उस के रास्ते मे एक जजीर बन जाती है इस का सुबूत पेश करने के लिए ग़ालिब ने दूसरे मिसरे में नदी की मिसाल दी है कि जब पानी मौज में आ कर जोर से बहने लगता है तो उस में चक्कर और भवर से पड जाते है यह चक्कर जजीर ही की तरह होते है और इस शेर में उन्ही को जजीर कहा गया है

बे ए'तिदालियो[1] से, सुबुक[2] सब में हम हुए,
जितने ज़ियादः हो गए, उतने ही कम हुए

हमने जिदगी में कोई काम सभल कर न किया. परिणाम यह हुआ कि हम सब की नजरो में गिर गए और जितनी ज्यादा लापरवाही दिखाई उतनी ही हमारी इज्जत कम हो गई

पिन्हा[1] था दाम-ए-सख्त, करीब आशियान के,
उडने न पाए थे, कि गिरिफ्तार हम हुए

हमारे आशियाने के बिलकुल पास हमारे लिए जाल बिछा दिया गया था और वह जाल हमारी नजरो से छिपा हुआ था हम ने उडने के लिए पर ही तोले थे कि उस जाल में पकडे गए, यानी जिदगी में आजाद हो कर कुछ कर गुजरने से पहले ही हमारी जिदगी ने हमें अपनी बदिशो में जकड़ लिया और हम मजबूरन उस की चक्की में पिसते चले गए

हस्ती हमारी, अपनी फना पर दलील है
या तक मिटे, कि आप हम अपनी कसम हुए

हमारी जिदगी इस तरह मिट्टी है, कि अपने मिटने की दलील खुद हो गई है. हम ने कभी मिटने की कसम खाई थी और अब सिर से पैर

---

१ कोई काम सभल कर न करना २ नजरो मे गिरना ३ छिपा हुआ

तक उस बरबादी की कसम बने हुए हैं.

सख्ती कशान-ए-अिश्क की, पूछे है क्या ख़बर,
वह लोग रफ्त रफ्त. सरापा अलम हुए

सख्ती काशाने इश्क से मतलब है वह लोग जिन्होंने मुहब्बत में हर तरह की सख्ती उठाई है. गालिब कहते हैं कि ऐ दोस्त तू ऐसे लोगों को अब क्या खबर पूछ रहा है जो ग़म सहतेसहते और ग़म को सहन करतेकरते सर से पैर तक ग़म बन चुके हैं. और उन का इस तरह गम की एक जीती जागती तस्वीर बन जाना कोई दो एक रोज का काम नहीं सारी जिंदगी यह लोग गम बरदाश्त करते रहे, और आहिस्ता-आहिस्ता आखिर एक दिन ग़म ही बन गए. अब उन की ख़बर न पूछ क्योंकि अब यह लोग गम सहन नहीं कर सकते जो तुझ से कह दें कि फलां गम है. अब तो यह लोग खुद ही गम है. अब तो सिर्फ तू ही इन्हें देख और इन्हें जानने की कोशिश कर.

तेरी वफा से क्या हो तलाफी, कि दहर में,
तेरे सिवा भी, हम पे बहुत से सितम हुए

ऐ मेरे महबूब, अब तू हम से वफा इसलिए कर रहा है कि शायद तू ने जो हम पर ज़ुल्म किए थे, उन की तलाफी हो सके, लेकिन तू यहा यह क्यो भूल रहा है कि अब तेरी वफा भी हमारे साथ इसाफ नहीं कर सकती क्योंकि तेरी वफा तो सिर्फ उन्हीं जियादतियो को दिल से निभाएगी जो तू ने हमारे साथ की थी लेकिन उस अन्याय और उस निर्मम अत्याचार का क्या हो, जो तेरे अलावा हम पे दुनिया ने किए.

छोडी, 'असद' न हम ने गदाई[1] में दिल्लगी,
साइल[2] हुए, तो 'आशिक-ए-अह्ल-ए-करम[3]' हुए

---

१ फकीरी २ फकीर ३ मेहरबानी करने वाले

ऐ असद, हम ने फकीरी में भी दिल्लगी न छोड़ी. फकीर भी हुए तो उन लोगो के हो रहे जो कुछ न कुछ बख्शीश देते रहते हैं. इस शेर में उन लोगो पर भी एक बड़ा व्यग्य है जो सिर्फ अमीर होने की वजह से यह समझ लेते हैं कि वह किसी को कुछ दे सकते हैं. गालिब कहते हैं कि हम ने फकीर हो कर उन्हीं लोगो के दरवाजे खटखटाए जो अमीर हैं. ताकि देखें कि उन के दावे कहा तक सच्चे हैं.

यू ही दुख किसी को देना नही खूब, वरन. कहता,
कि मिरे 'अदू को, यारब, मिले मेरी जिंदगानी.

किसी को यू ही बैठे बिठाए दुख देना अच्छा नहीं होता, वरना मैं खुदा से दुआ करता कि यारब मेरी जिदगी मेरे दुश्मन को मिले ताकि उसे पता चले कि मैं ने जिदगी किस तरह रो पीट कर गुजारी है. लेकिन दुश्मन को भी दुख देना अच्छा नही इसी लिए मुझ पे जो कुछ गुजरता है, मैं सबर कर लेता हू

जुल्मत कदे मे मेरे, शब-ए-गम का जोश है,
इक शम'आ है दलील-ए-सहर, सो खमोश है

मेरे घर में जुदाई की रात अपने खैमे गाडे बैठी है. इतनी तारीक रात है जैसे सारी सियाही मेरे ही घर उमड़ आई है. सुबह होने की खबर अगर कोई देता है तो शमा ही बुझ कर देती है. लेकिन यहा तो शमा भी जलजल कर बुझ गई. यानी सुबह हो गई. लेकिन नजर उठा के देखता हू तो घटाटोप अधेरा है मैं सिर्फ शमा ही से पूछ सकता था कि सुबह कब तक होगी, लेकिन वह भी तो खामोश है

ने मुशद.[1]-ए-विसाल, न नज्जार. ए जमाल,
मुद्दत हुई, कि आश्ति[2]-ए-चश्म-ओ-गोश[3] है.

---

१ खुशी. २ सुलह ३ आख और कान

पहले तो मेरी आंखो और मेरे कानो में एक जबरदस्त झगडा रहता था क्योंकि आखें कहती थीं कि हम ने उस के हुस्न का नज्जारा कर लिया है कान कहते थे कि लेकिन हम ने उस के मिलाप की कोई ख़ुशख़बरी नहीं सुनी, इस लिएतुम झूठ कह रही हो और कभी कान कहते थे कि हम ने उस की आवाज़ सुनी है, वह मिलने के लिए बुला रहा है तो आखें कह देती थीं कि हमें तो कहीं कोई नज़र नहीं आ रहा. तुम ज़रूर झूठ बोल रहे हो लेकिन अब एक मुद्दत से यह झगडा ख़त्म हो चुका है, क्योंकि अरसा गुज़रा कि आखो ने उसे देखा हो या कानो से कोई उस का पैग़ाम सुना हो

मै ने किया है, हुस्न-ए-खुदआरा को, बेहिजाब,
ऐ शौक, या इजाजत-ए-तसलीम-ए-होश है.

शराब के नशे में उस ने अपने चेहरे से परदा हटा दिया है. इस मुहब्बत के जोश में अब तो तू भी सब होश व हवास उस के हुस्न के सिपुर्द कर दे.

गौहर को अिक्द-ए-गरदन-ए-खूबा में देखना,
क्या, औज पर सितार-ए-गौहर फरोश है

हीरे बेचने वालो ने हीरों की जो मालाए बनाई है, उन मालाओ को हसीन अपनी गरदनो में डाले फिर रहे है हीरे बेचने वालो का सितारा चमक उठा है, क्योंकि उन की बनाई हुई चीज़ को हसीनो ने अपने गले की ज़ीनत बना लिया है वास्तव में तो हमारी बाहें उन के गले की हार होना चाहिए थीं

दीदार बाद', हौसला, साकी, निगाह मस्त,
बज्म-ए-खयाल, मै कद-ए-बेखरोश है

हम जब ख़याल में उन का दीदार करते है तो हम पर शराब का सा

नशा छा जाता है और उन्हें देखने का हौसला हमारा साकी बन जाता है और उन को देखने वाली निगाह उस नशे में मस्त हो जाती है. मतलब यह कि हमारी ख़याली महफिल एक ऐसा शराबख़ाना है जिस में किसी क़िस्म का न जोश है, न शोर है.

अब इस के बाद तीनों शेर क़तआबद हैं और फिर उन के बाद चार शेर कतआबद है. इसलिए हम तीनो शेरो को इकट्ठा दे कर फिर उन का अर्थ करेंगे.

अय ताज़ वारिदान-ए-बिसात-ए-हवा-ए-दिल,
ज़िन्हार, अगर तुम्हें हवस-ए-नाय-ओ-नोश है
देखो मुझे, जो दीद-ए-'अिब्रत निगाह हो,
मेरी सुनो, जो गोश-ए-नसीहत नियोश है
साकी, ब-जलवः दुश्मन-ए-ईमान-ओ-आगही,
मुतरिब, ब नग़म., रहज़न-ए-तमकीन-ओ-होश है

ऐ कूचाए मुहब्बत में नएनए आने वालो, अगर तुम्हें अब तक मुहब्बत की शराब चखने की हवस है तो बाज़ आओ. अगर तुम्हारे पास ऐसी आख है जो दूसरों की तबाही से सबक हासिल कर सकती है तो मुझे देखो. अगर तुम्हारे कान किसी की नसीहत सुन सकते है तो मेरी सुनो. साकी अपना जलवा दिखा कर तुम्हारा ईमान लूट लेगा. तुम्हारे होशोहवास पर जादू कर देगा. साकी ईमान और होश का दुश्मन है. और गीत सुनाने वाला सब्र और बरदाश्त की ताकत तबाह कर के रख देगा. वह तुम्हें पारे की तरह बेचैन और बेकरार बना देगा.

या शब को देखते थे, कि हर गोश-ए-बिसात,
दामान-ए-बागबान-ओ-कफ-ए-गुलफरोश है.

लुत्फ-ए-खिराम-ए-साकी-ओ-ज़ौक-ए-सदा-ए-चग,
यह जन्नत-ए-निगाह, वह फिरदौस-ए-गोश है

यहा कभी जो रात को आ कर महफिल का हाल देखते थे तो यूं नजर आता था कि महफिल का कोना माली के दामन की तरह और फूल वेचने वाले के हाथो की तरह हजारहा रगबिरगे फूलो से भरा हुआ है. साक़ी की चाल देख कर यू नजर आता था जैसे जमीन पर जन्नत उतर आई हो और उस के दिल मोह लेने वाले नगमे कानों के लिए जन्नत बन जाते थे.

या सुव्ह दम जो देखिए आ कर, तो बज्म में,
नै वह सरूर-ओ-सोज, न जोश-ओ-खरोश है

दाग-ए-फिराक-ए-मोहबत-ए-शब की जली हुई,
इक शम'आ रह गई है, सो वह भी खमोश है

कहा तो वह दशा होती थी और कहा जो सुबह के समय आ कर उस महफिल का हाल देखा तो न वह पिछली रात का सुरूर था न वह मस्तिया थीं, न वह जोश व ख़रोश था. महफ़िल उजड़ गई थी. सब जा चुके थे और उस रात की ऐशोइशरत की जगह अब वहा गर्द उड़ रही थी. उस मस्ती भरी रात के साथ जो शमा जली थी, अब वह उस रात की जुदाई का जख़्म खाए हुए थी, महफ़िल के उजडने के दाग़ ने शमा को जला कर राख कर दिया था. यही एक शमा अब उस महफिल की निशानी रह गई थी लेकिन वह भी ख़ामोश निशानी. शमा अब बुझ चुकी थी. वह जलजल कर लोगो को बता रही थी कि अब यह महफिल खत्म होने वाली है. अब यह रंगरलिया जियादा देर चलने की नहीं. अब जुदाई का वक्त बहुत करीब आ चुका है मुझे देखो, मै उसी का दाग़ लिए जल रही हू. लेकिन अफ़सोस कुछ न हुआ महफिल उजड़ गई उस महफिल की आखिरी निशानी

शमा जुदाई का दाग़ लिए जल कर ख़त्म हो गई.

आते है गैब[1] से, यह मजामी खयाल में,
'गालिब', सरीर-ए-ख़ामः नवा-ए-सरोश[2] है

ऐ ग़ालिब, यह दुख भरे, नसीहतभरे और आने वाली कल की ख़बर देने वाले मजमून मेरे दमाग़ में ऊपर से उतरते है. मेरे शेरो को फरिशतो की आवाज़ समझो.

आ, कि मेरी जान को करार नही है,
ताकत-ए-बेदाद-ए-इतिज़ार नही है

अब देर न लगा. आ भी जा कि तेरे बग़ैर मेरे जान को पल भर का भी चैन नहीं है. अब जियादा इतजार न करा. यह इतजार अव मेरे लिए एक जुल्म है मुझ में अब और अधिक इंतज़ार का जुल्म सहने की ताक़त नहीं है. कहीं ऐसा न हो कि तेरे आने तक मैं चल बसू. इसलिए पलक झपकते में चला आ, आ.

देते है जन्नत, हयात-ए-दह्र के बदले,
नश्श ब-अदाज़-ए-खुमार नही है

इस दुनिया में जिदगी गुजारने के बदले हमें जन्नत दी जा रही है. जैसे हम ने यहा मुसीबतो के जो पहाड उठाए है, जन्नत उस का सही मुआवज़ा ही तो हो. यह जन्नत का नशा हमारे खुमार के अनुमान के 'अनुसार नहीं है

गिरिय निकाले है तेरी बज़्म से, मुझ को,
हाय, कि रोने पे इख़्तियार नही है

---

१ वह आलम जो नज़र न आए २ फरिशता

तेरी महफिल में आ कर मुझ से जियादा बरदाश्त न हो सकी और मैं विवश रो दिया. इस रोने के कारण मुझें महफिल से निकाला जा रहा है. लेकिन तू यह भी समझ ले कि मुझे अपने आसुओं पे कोई काबू नहीं है.

कत्ल का मेरे किया है 'अह्द तो बारे,
वाय, अगर 'अह्द उस्तुवार नही है

तू ने मेरे साथ और कोई वादा तो नहीं किया, अब यह मुझे कत्ल करने का वादा किया है, यही अगर पक्का न हुआ तो बडे अफसोस की बात होगी अब जो भी वादा किया है, उसे पूरा करना.

तू ने कसम मैकशी की खाई है 'गालिब',
तेरी कसम का कुछ ए'तिबार नही है.

ऐ ग़ालिब तू ने शराब पीने की क़सम कई बार खाई है, मगर तू हर बार अपनी कसम को तोड देता है बता अब तेरा यक़ीन कैसे करें.

हुजूम-ए-गम से या तक सरनिगूनी मुझ को हासिल है,
कि तार-ए-दामन-ओ-तार-ए-नजर में फर्क मुश्किल है

मुझ पर ग़मो का पहाड़ टूट पडा और गमो का बोझ बरदाश्त करते करते मेरा सर झुक कर मेरे दामन से आ लगा है. अब भला दामन के तार और नजर के तार में कैसे फर्क़ रह सकता है. क्योकि सर झुक कर दामन से आ लगा है उधर गमों का पहाड टूट पड़ा है

रफू-ए-जख्म से मतलब है लज्जत जख्म-ए-सोजन की,
समझियो मत, कि पास-ए-दर्द से, दीवान गाफिल है.

अगर मै अपने दिल के जख्म सिलवाना चाहता हू तो यह मत समझ लो कि तुम्हारे दीवाने को अब तुम्हारा दर्द प्यारा नहीं, क्योंकि जख्म सिलने में भी तो सुई बारबार जख्म के मुह में चुभेगी

हू सरापा साज-ए-आहग-ए-शिकायत, कुछ न पूछ,
है यही बेह्तर, कि लोगो में न छेडे तू मुझे

मै सर से पाओ तक शिकायत की आवाज का एक साज बन चुका हू इसलिए अब यही बेहतर है कि तू लोगो में मुझे न छेड़, क्योकि मै एकएक शिकायत सब के सामने कर डालूंगा और तुझे ख्वाहमख्वाह भरी महफिल में शर्मिंदा होना पडेगा. इस शेर में एक तरफ अपने आप को शिकायत का साज कहा तो दूसरी तरफ छेडने का शब्द मुहावरेदार है क्योंकि साज भी छेड़ा जाता है और उधर तू मुझे न छेड़ आम अर्थों में प्रयुक्त हुआ है.

जिस बज्म में तू नाज से, गुफ्तार मे आवे.
जा, काल्बुद-ए-सूरत-ए-दीवार में आवे

तू जिस महफिल में अपने नाजभरे अदाज में बात करता है, वहा की दीवारो तक की तस्वीरो में जान पड़ जाती है और वह भी बोलने लगती है और जो कुछ कहती है, वह तेरी बातों ही को दुहराती है.

दे मुझ को शिकायत की इजाजत, कि सितमगर,
कुछ तुझ को मजा भी मेरे आजार मे आवे.

तू हर बात में मेरा दिल दुखाता है लेकिन ऐ जालिम मुझे शिकायत करने की भी इजाजत दे ताकि मुझें भी कुछ पता चले कि तेरी किस बात से मेरा दिल दुखता है और तुझें मजा आए कि तेरी फला चोट खाली नहीं गई अगर मै चुप रहू तो भला तुझे

क्या मजा आता होगा, क्योंकि तुझे मालूम ही नहीं होता कि तेरी कौन सी बात मेरे दिल पे जख़्म लगा गई है.

काटो की जबा सूख गई प्यास से, यारब,
इक आबलः पा वादि-ए-पुरख़ार में आवे

यारब, जगल में काटो की जबान प्यास के मारे सूख गई है. क्योंकि एक अरसे से यहां से कोई ऐसा मनुष्य नहीं गुजरा जिस के पाओ में छाले पडे हुए हो और उन छालो में चुभ कर उन काटो ने अपनी प्यास बुझाई हो.

आतशकद है सीन मेरा, राज़-ए-निहा से,
ऐ वाय, अगर मा'रिज-ए-इज़हार में आवे

मेरा सीना हजारो राज़ छिपाए हुए है और उन्हे छिपाने की वजह से एक दहकती हुई भट्ठी बना हुआ है. लेकिन मैं ने इस आग को भी सीने में छिपा रखा है अगर कभी यह आग मेरे शेरो में उभर आई तो न जाने क्या होगा

गजीन[१]-ए-मा'नी का तिलिस्म[२] उस को समझिए,
जो लफ्ज़ कि 'गालिब', मेरे अश'आर मे आवे

ऐ गालिब, मेरे शेरो में जो शब्द भी आ रहा है, उसे शब्दार्थ के खजाने का जादू समझो इन शब्दो की तह तक पहुच कर असली मतलब निकालना कुछ आसान काम नहीं है. मेरे हर शब्द में हजारो मतलब छिपे हुए होते है

बोस देते नही, और दिल प है हर लहज़ निगाह,
जी में कहते है, कि मुफ्त आए, तो माल अच्छा है

---

१ खजाना २ जादू

उन्हे यह तो ख्वाहिश है कि हमारा दिल उन के हाथ लग जाए लेकिन जब हम दिल देने की जरा सी क़ीमत सिर्फ एक चुबन मागते है तो चुबन देने से इनकार कर देते हैं. और वैसे हर पल उन की नजर हमारे दिल पर लगी हुई है कि इतना अच्छा और वफादार दिल अगर मुफ्त में हाथ आ जाए तो क्या कहिए.

और बाज़ार से ले आए, अगर टूट गया,
जाम-ए-जम[1] से यह मेरा जाम-ए-सिफाल[2] अच्छा है.

जाम-ए-जम से यह मेरा मिट्टी का प्याला हजार दर्जे अच्छा है, क्योंकि अगर यह टूट गया तो हम बाजार से जा कर और ख़रीद लाएगें. हमें तो शराब पीने से मतलब है. जामेजम में अपना मुंह नहीं देखना. और फिर ऐसे प्याले का क्या करेगें जो अगर टूट जाए तो फिर दोबारा ख़रीदा ही न जा सके. यानी इनसान को अपने हाल में मस्त रहना चाहिए. जो कुछ मिलता है, उसी पर शुक्र करना चाहिए और ऐसी दौलत पर नजर ही नहीं रखनी चाहिए जिसे सभाल सकना भी अपने बस की बात न हो

बेतलब दें तो मजा उस में सिवा मिलता है,
वह गदा[3], जिस को न हो ख़ू[4]-ए-सवाल अच्छा है

हम इसलिए अपने मुह से कुछ नहीं मागते कि फकीर वही नेक और अच्छा होता है जिस में मागने की आदत न हो. आप भी हमें बिन

---

१ जिसे जामे जमशेद भी कहते है. यह एक रियायती जाम है जो ईरान के शहनशाहो के पास होता था और जिस में सारी दुनिया में जो कुछ हो रहा है नजर आ सकता था यही से उस की कीमत का अदाज़ा लगाया जा सकता है २ मिट्टी का प्याला ३ फक़ीर. ४ आदत.

मागे भीख दें तो उसी में मजा है. हम ने मागी और आप ने भीख दी तो फिर इस में वह बात ही नहीं रहती कि हम सही मतलब में सवाली हैं और आप सही मानी में दाता.

उन के देखे से, जो आ जाती है मुह पर रौनक,
वह समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है

महबूब की जुदाई में आशिक को जान के लाले पड़ें होते हैं वह अपनी जबान से अपना हाल नहीं कहता. उस का माशूक़ कभीकभार जो उसे देखने के लिए आ जाता है तो महबूब को देखते ही आशिक के चेहरे पर एक रौनक़ सी आ जाती है उस रौनक को देख कर माशूक़ यह समझ लेता है कि रोगी का हाल अच्छा है ऐसी कोई फिक्र की बात नहीं है. लेकिन यह तो आशिक़ ही जानता है कि यह रौनक तो उसे अपने माशूक़ को देखने पर आई है. उस के जाते ही जो हाल होगा, उस को उसे क्या खबर, या मुझ पे इस की जुदाई में जो कुछ बीत रहा है, वह यह क्या जाने.

देखिए, पाते है 'अुश्शाक, बुतो से क्या फैज,
इक ब्रह्मन ने कहा है, कि यह साल अच्छा है

देखिए, इस साल आशिको को हुस्न वालो से क्या फायदा पहुंचता है क्योकि एक ब्राह्मण ने इस वर्ष की भविष्यवाणी करते हुए बताया है कि यह साल प्रेमियो के लिए बहुत अच्छा है.

हम सुख़न तेशे ने फरहाद को, शीरी से किया,
जिस तरह का कि किसी मे हो कमाल, अच्छा है

कुदाल जैसी चीज ने फरहाद का नाम शीरीं तक पहुचाया और इस कुदाल के कारण शीरीं और फरहाद एक दूसरे पर फिदा हुए थे. सो यह साबित होता है कि जिस किसी में जिस तरह का भी कमाल

हो अच्छा है.

कतरः दरिया में जो मिल जाए, तो दरिया हो जाए,
काम अच्छा है वह, जिस का कि मआल अच्छा है.

पानी का क़तरा दरिया में मिल कर दरिया बन जाता है, इसलिए वह काम अच्छा है, जिस का अंजाम अच्छा है यानी इनसान अपने आप को ख़ुदा की जात में लीन कर दे. इसी में जिंदगी का अच्छा अंजाम है.

हम को मालूम है, जन्नत की हकीकत, लेकिन,
दिल के खुश रखने को 'ग़ालिब', यह खयाल अच्छा है

गालिब हम अच्छी तरह जानते हैं कि यह जन्नत वग़ैरा की असलीअत क्या है. यानी कुछ भी नहीं है. फिर भी दिल के ख़ुश रखने के लिए जन्नत का यह ख़याल अच्छा है कि वहां जा कर हूरें मिलेंगी और शराब मिलेगी, इस से कम से कम इनसान को एक झूठी तसल्ली तो हो ही जाती है.

न हुई गर मेरे मरने से तसल्ली, न सही
इम्तिहा और भी बाकी हो, तो यह भी न सही

क्या मेरे मरने से भी आप की तसल्ली नहीं हुई न सही. अगर मेरी वफ़ा का आप को कोई और इम्तहान लेना है तो मेरी मौत न सही, मेरा मृत शरीर तो बाकी है अपने सब अरमान पूरे कर लीजिए.

मैं परस्ता, खुम-ए-मै, मुह से लगाए ही बने,
एक दिन गर न हुआ बज्म में साकी, न सही

शराब पीने वालों से साक़ी का जियादा इंतजार न हो सका और उन्होंने यह कह कर शराब का प्याला मुंह से लगा लिया कि एक दिन

अगर महफिल में साकी नहीं है तो न सही. आज अपने आप ही पी लेते हैं.

एक हगामे प मौकूफ, है घर की रौनक,
नौहः-ए-गम ही सही, नग़म-ए-शादी न सही

घर की रौनक़ तो शोरोग़ुल और हगामे से है अगर शादी के नग़मे नहीं है, बाजे नहीं बज रहे है तो न सही गम में रोना पीटना ही सही इस में शोर भी तो होता है उस से भी घर में रौनक रहती है.

न सताइश की तमन्ना, न सिले की परवा,
गर नही है मेरे अश'आर में मा'नी न सही

मिर्जा ग़ालिब को लोग यह कह कर ताने दिया करते थे कि आप के शेर बे-मानी होते हैं. यही नहीं, बल्कि कुछ लोगो ने तो बिलकुल बे सर पैर के शेर ख़ुद कह कह कर ग़ालिब के नाम से ग़ालिब को ही सुना दिए. यह शेर गालिब ने उन्हीं लोगो के बारे में कहा है कि मुझे न तो दाद की तमन्ना है, न अपनी शायरी का सिला पाने की ख़्वाहिश. मेरे शेरो में अगर कोई मतलब नहीं है तो न सही, आप को मुझे जो इनाम देना था वह अपने पास ही रखिए मैं उस के बग़ैर ही भला.

अजब नशात से, जल्लाद के, चले है हम, आगे,
कि अपने साए से सर, पाव से है दो कदम आगे

आशिक को एक जमाने से यह तमन्ना थी कि उस का कत्ल उस के माशूक़ ही के हाथो हो. आज माशूक इस बात के लिए तैयार हो गया है तो आशिक इतना ख़ुशख़ुश चल रहा है कि जमीन पर पाव ही नहीं पडते और क़त्ल होने का जज्बा इतना जोरो पर है

कि आशिक़ के सर का साया पाव से भी दो कदम आगे चल रहा है.

कज़ा ने था मुझे चाहा, ख़राब-ए-बाद-ए-उल्फत,
फकत ख़राब लिखा, बस न चल सका कलम आगे.

मेरी तकदीर में तो यह लिखा जाना था कि मैं उम्र भर शराब पिऊं और बरबाद रहूं. लेकिन लिखने वाले ने अभी बरबाद ही लिखा था कि आगे कलम ही न चला. बस, मैं ज़िंदगी में तो बरबाद हो गया, लेकिन मेरी तकदीर में शराब न लिखी गई, न यहां मिली.

ग़म-ए-ज़मान. ने झाड़ी, नशात-ए-अिश्क की मस्ती,
वगरन हम भी उठाते थे, लज़्ज़त-ए-अलम, आगे

ज़िंदगी के ग़मों ने इश्क़ की सारी मस्ती समाप्त कर के रख दी. वरना पहले हम भी इश्क़ के ग़म सहते थे और उन से मज़ा हासिल करते थे, यानी ज़िंदगी के ग़म उठाने में न कोई ख़ुशी है, न मज़ा

ख़ुदा के वास्ते, दाद इस जनून-ए-शौक की देना,
कि उस के दर पे पहुचते है नाम:बर से हम, आगे

ख़ुदा के वास्ते हमारे शौक़ के इस जुनून की दाद देना कि नामावर के हाथ में अपना ख़त भी थमा दिया कि वहा तक ले जाए लेकिन इस में यह भी तसल्ली न हुई और इस से पहले कि नामावर हमारा ख़त वहा पहुचाता हम उस से पहले ख़ुद ही वहा पहुच गए.

दिल-ओ-जिगर में परअफशा, जो एक मौज -ए-ख़ूं है,
हम अपने जा'म में समझे हुए थे इस को, दम आगे.

हमारे दिल-ओ-जिगर जो लहू की एक मौज रह रह कर तडप सी उठती है, हम उसे पहले अपने ही ख़याल में अपना दम समझते थे

इस शेर में तडप को जिंदगी कहा गया है

कसम जनाज़े पे आने की मेरे खाते हैं, 'गालिब',
हमेश· खाते थे जो, मेरी जान की कसम, आगे

जो प्रेमी पहले मुझे बहुत अज़ीज़ समझता था और बारबार मेरी जान की कसम खाता था आज उसे मुझ से इतनी नफरत हो गई है कि वह अब मेरे जनाज़े के साथ जाने से भी कतराता है.

शिकवे के नाम से, बेमेह्र खफा होता है,
यह भी मत कह, कि जो कहिए, तो गिला होता है

वह बेवफा शिकायत के नाम से ही ख़फा होता है, क्योंकि अगर ज़रा सी भी कोई बात कहेगा तो वह उसे शिकायत समझेगा

पुर हू मैं शिकवे से यू, राग से जैसे बाजा,
इक ज़रा छेडिए, फिर देखिए क्या होता है

मैं इस तरह शिकायतो से भरा हुआ ह जैसे बाजे में राग भरे होते हैं. तुम ज़रा हमें छेड के तो देखो कि हमारे अदर क्याक्या निकलता है

गो समझता नही, पर हुस्न-ए-तलाफी देखो,
शिकव -ए-ज़ौर से सरगर्म-ए-जफा होता है

जब मैं उस से ज़ुल्म की शिकायत करता हू तो वह कुछ समझता तो है नहीं, अपने उन ज़ुल्मो की तलाफी करने के लिए और भी जियादा ज़ुल्म कर बैठता है.

क्यो न ठहरे हदफ-ए-नावक-ए बेदाद, कि हम,
आप उठा लाते हैं, गर तीर खता होता है

हम क्यो न उस के ज़ुल्म के तीर का निशाना ठहरें, क्योंकि अगर भूले से उस का निशाना चूक जाता है और तीर कहीं और जा गिरता है तो हम लपक कर वह तीर खुद ही उठा कर उसे दे देते हैं कि वह फिर हम पे निशाना बांधे.

खूब था, पहले से होते जो हम अपने बदख़्वाह,
कि भला चाहते हैं और बुरा होता है.

हमें यह मालूम ही न था कि हमारी हर बात उलटी क़ुबूल होती है, अगर यह इल्म होता तो हम पहले से ही अपने दुश्मन ख़ुद आप होते. अपनी तबाही की दुआ करते, वह उल्टी क़बूल होती और हम फलतेफूलते. लेकिन हम ने हमेशा अपना भला चाहा और बुरा होता रहा.

रखियो, 'ग़ालिब', मुझे इस तल्ख़नवाई से मु'आफ,
आज कुछ दर्द मेरे दिल में सिवा होता है

ग़ालिब आज मैं कुछ जलीकटी सुना रहा हूं. इस के लिए मुझे मुआफ करना. क्योंकि आज मेरे दिल में पहले से कहीं अधिक दर्द हो रहा है.

हर एक बात पे कहते हो तुम, कि तू क्या है,
तुम्हीं कहो कि यह अंदाज-ए-गुफ्तगू क्या है

तुम हर एक बात पर जो मुझ से कह रहे हो कि तू क्या है? तू अपनेआप को समझता क्या है? तो अब मैं उस का क्या जवाब दूं? बस इतना ही पूछना चाहता हूं कि यह बात करने का कौन सा तरीका है!

न 'शो'ले में यह करिश्मा न बर्क़ मे यह अदा
कोई बताओ, कि वह शोख़-ए-तुंद ख़ू क्या है.

न तो शोले में यह करामात है, न बिजली में यह अदा है. कोई हमें बताए कि इस क़दर गुस्से वाले शोख़ महबूब को हम क्या कहे? क्योंकि इस का मिज़ाज शोले से ज़ियादा तेज़ है और उस की अदा बिजली से कहीं बढ़चढ कर है.

जला है जिस्म जहा, दिल भी जल गया होगा,
कुरेदते हो जो अब राख, जुस्तजू क्या है.

तुम्हारे ग़मो की आग में जहा हमारा जिस्म जल के राख हो गया है, तो वहा क्या दिल बच रहा होगा? वह भी तो जल गया होगा. अब जो तुम राख कुरेद रहे हो तो इरादा क्या है. क्या ढूंढ़ रहे हो?

रगो मे दौडने फिरने के, हम नही काइल,
जब आख ही से न टपका, तो फिर लहू क्या है.

हम ख़ून के रगो में दौड़नेफिरने के कायल नहीं है. अगर हमारे जिस्म में कहीं ख़ून है तो वह उस की जुदाई के ग़म में हमारी आख से टपके. वरना यह सब बातें बेकार हैं

पियू शराब, अगर खुम भी देख लू दो चार,
यह शीश-ओ-कदह-ओ-कूज़.-ओ-सुबू क्या है.

अगर सामने शराब के दोचार भरे हुए मटके रखे हो तो मैं शराब पिऊ भी अब भला इन एकदो प्याली या जाम से क्या बनता है?

रही न ताकत-ए-गुफ्तार, और अगर हो भी,
तो किस उम्मीद पे कहिए कि आरज़ू क्या है

अव्वल तो हम में कुछ कहने की ताकत ही नहीं रही दूसरे गमो ने इतना बेहाल कर दिया है कि जबान तक नहीं हिल सकती. लेकिन अगर मान लें कि अभी कुछ ताकत बाकी भी है तो किस उम्मीद पे

उन से कहें कि हम चाहते क्यो है? क्योंकि अभी तक उन से क्या कुछ नहीं कह चुके और फिर उन पर कौन सा असर हो गया है. यह जो हम अब इतने बेहाल हो गए है कि कुछ कहने ही के काबिल नहीं रहे तो इसी कारण से हुए है कि हम अपना हाल कहतेकहते थक गए और उन्होने खबर तक न ली.

हुआ है शाह[1] का मुसाहिब[2], फिरे है इतराता,
वगरन[3] शह्र में गालिब की आबरू क्या है.

दिल्ली के आखिरी मुग़ल बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र ने मिर्ज़ा ग़ालिब को अपने दरबार में जगह दी थी. यह शेर उसी के बारे में है. ग़ालिब अपने आप ही से कह रहे है कि बादशाह ने तुम्हे अपने दरबारियो में शामिल कर लिया है जभी इतना इतराते फिर रहे है. वरना इस से पहले तुम्हारी इज्जत ही क्या थी?

केह्र हो, या बला हो, जो कुछ हो,
काश के, तुम मेरे लिए होते

तुम कहर हो, या एक मुसीबत हो, जो कुछ भी हो काश, कि तुम मेरे लिए होते मैं सब बरदाश्त कर लेता.

मेरी किस्मत में गम गर इतना था,
दिल भी, यारब, कई दिए होते.

यारब, अगर मेरी किस्मत में इतना गम लिख दिया था तो फिर मुझे दिल भी दोचार दिए होते ताकि मैं उन गमो को बरदाश्त कर लेता. अब एक दिल है और लाखों ग़म

---

१ बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र. २ दरबारी ३ वरना

आ ही जाता वह राह पर, 'गालिब',
कोई दिन और भी जिए होते

ऐ गालिब, अगर हम कुछ दिन और जिंदा रहते तो शायद हमारा महबूब हम से प्यार करने पे राजी हो जाता.

गैर लें महफिल में, बोसे जाम के,
हम रहें यो तश्नः लब, पैगाम के.

गैर तो महफिल में जाम के बोसे लें (यानी जाम पर जाम चढाए) और हम बुलावे तक के लिए तरस जाएं. कभी हमें भी बुलाओ. हम भी वहा आ कर महफिल में शामिल हो.

खत लिखेंगे, गरचे मतलब कुछ न हो,
हम तो 'आशिक है, तुम्हारे नाम के

हम अपने महबूब को खत जरूर लिखेंगे चाहे उस का मतलब कुछ भी न हो! क्योकि हमें तो उस के नाम से प्यार है.

रात पी ज़मज़म पे मैं और सुब्ह्-दम,
धोए धब्बे जाम-ए-अहराम के

गालिब एक बार फिर हाजियो पे अपना नाम ले कर भरपूर चोट कर गए है. जामाए अहराम उस लिबास को कहते है जिसे पहन कर लोग हज करने जाते है जमजम एक कूआ है जो काबा के करीब है. उस का पानी पीने से सब गुनाह माफ हो जाते है. गालिब कहते है कि हज करने गए थे लेकिन रात बग़ैर शराब पिए कैसे गुज़रती? बहुत बरदाश्त किया, लेकिन जब सब्र न हुआ तो आखिर पी ही ली, लेकिन हज करने की जगह पर शराब पीना तो गुनाह है इसलिए सुबह सवेरे उठे और हज करने के लिबास पे रात शराब पीते वक्त जो शराब के

धब्बे पड़ गए थे, उन्हें जमजम के पानी से धो लिया. गोया गुनाह धुल गया शराब भी पी ली और गुनाह भी मुआफ़ करा लिया.

अिश्क ने 'ग़ालिब' निकम्मा कर दिया,
वरना हम भी आदमी थे काम के.

ऐ ग़ालिब हमें इश्क ने बेकार कर दिया है. वरना आदमी तो हम काम के थे. हम सारे काम बड़ी आसानी से कर लेते थे. परन्तु अब जब से हम प्रेम के चक्कर में पड़े हैं कोई भी काम नहीं कर सकते.

है हवा में शराब की तासीर,
बाद नोशी है बाद पैमाई

बहार का मौसम है. हवा ऐसी चल रही है जैसे उस में शराब का सा असर हो इसलिए अब तो हवाखोरी करने ही से शराब पीने का काम हल हो सकता है. इस शेर में एक तरफ तो हवा ही को शराब कह दिया गया है, दूसरी ओर इतना अच्छा मौसम इशारो ही इशारों में बताया है कि शराब जरूर पी जाएगी.

रहा आबाद 'आलम, अहल-ए-हिम्मत के न होने से,
भरे हैं जिस कदर जाम-ओ-सुबू, मैखाना खाली है

यह दुनिया इसी लिए आबाद रह गई कि इस में हिम्मत वाले लोग नहीं थे. अगर कुछ हिम्मत वाले लोग होते तो इस दुनिया में कुछ न कुछ तोड़फोड़ जरूर करते. भला मुहब्बत करने वाले लोग और नीचे बैठे रहें, इस बात के लिए यह दलील पेश करते हैं कि महफ़िल में इसलिए सभी जाम और प्याले शराब से भरे पड़े हैं कि वहा पीने वाला ही कोई नहीं है. अगर कुछ हिम्मत वाले महफिल में होते तो क्या यह प्याले यूं ही भरे पडे रहते या सही सलामत रहते? कुछ प्याले खाली होते, कुछ टूटे होते. महफिल में कुछ न कुछ रंग तो जमता. इस शेर का एक बहुत

गहरा मतलब यह है कि हमारी दुनिया में वह पुराने रीतरिवाज जिन्हें टूट जाना चहिए था, और टूट नहीं सके बल्कि सदियो से चले आ रहे है, वह इसी लिए बाक़ी है कि उन्हें तोडने वाले लोग ही यहा नहीं रहे. अगर कुछ हिम्मत वाले इस दुनिया में मौजूद होते तो कुछ न कुछ जरूर कर बैठते.

कब वह सुनता है कहानी मेरी,
और फिर वह भी ज़बानी मेरी

वह मेरी कहानी सुन ले? असभव और फिर मेरे मुह से? तोबातोबा!

क्या बया कर के मिरा, रोएगे यार,
मगर आशुफ्त· बयानी मेरी

मेरे मरने के बाद लोग मेरी कौन सी बात याद कर के रोएगे? यही न कि मै दीवानो जैसी बातें करता था.

तू वह बद ख़ू, कि तहय्युर[1] को तमाशा जाने,
गम वह अफसान, कि आशुफ्ता बयानी मागे

तुझे यह बुरी आदत पड़ी हुई है कि मै सर से ले कर पाव तक हैरानी की तसवीर बना बैठा रहूगा और तू मेरा तमाशा करता रहे गम वह अफ़साना है कि पागलो का सा अदाजे ब्यान मागता है. गम कहता है कि तुझे जो कुछ कहना है पागलों की तरह कह दे. अब मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि मै तेरी बात मानूं या अपने गम की, क्योंकि तू मुझे हैरान देखना चाहता है और गम दीवाना

जिस जख़्म की हो सकती हो तदबीर, रफू की,
लिख दीजियो, यारब, उसे किस्मत मे 'अदू की.

---

१ हैरत मे डूब जाना

यारब, जिस जख़्म को सिया जा सकता हो और जिस का इलाज किया जा सकता हो, उस जख़्म को मेरे दुश्मन की किस्मत में लिख देना. मेरी किस्मत में वही जख़्म लिखना जिस का कोई इलाज न हो.

अच्छा है सर अगुशत-ए-हिनाई का तसव्वुर,
दिल में नजर आती तो है, इक बूंद लहू की.

गम में लहू रोतेरोते आख़िर आखें ख़ुश्क हो गई तो ख़याल आया कि शायद अब दिल में इतना लहू भी नहीं रह गया कि आसू बन के आखों में आ सके. लेकिन जब दिल में झांक कर देखा तो वहा अपने महबूब की मेहदी रंगी उगली का एक पोर नज़र आया. ग़ालिब उसी को लहू की बूंद कह रहे है और कहते हैं कि मेरे लिए उस दों का ख़याल ही बहुत काफी है. चूकि उस से यह तो तसल्ली हो रही है कि अभी रोने के लिए दिल में लहू की एक बूंद बाक़ी है.

क्यो डरते हो, अुश्शाक[1] की बेहौसलगी[2] से,
या तो कोई सुनता नही फरियाद कसू[3] की.

तुम अपने आशिकों की बेसबरी से क्यों डरते हो. यहा तो कोई किसी की सुनता ही नहीं. इसलिए यह फ़रियाद किस से करेंगे और अगर करेंगे भी तो सुनेगा कौन?

उस लब से मिल ही जाएगा बोसः कभी तो, हा,
शौक-ए-फजूल-ओ-जुरअत-ए-रिंदानः[4] चाहिए.

जरा सी मस्ती और वह हिम्मत चाहिए जो शराबियों में अकसर होती है. फिर उन होंठों से बोसा मिलना कोई बड़ी बात नहीं है. यानी किसी दिन हिम्मत कर के मस्तो की तरह उन के होठों को चूम लो.

---

१ आशिका. २ बेसबरी. ३ किसी ४ शराबियो की सी हिम्मत.

जुरअत-ए-रिन्दाना आवाज इसलिए कहा गया है क्योंकि शराबी शराब के नशे में कुछ करते वक्त अजाम की नहीं सोचता. वह उस वक्त जो करता है कर देता है. बाद में क्या होगा, इस की फिक्र नहीं करता.

चाहिए अच्छो को जितना चाहिए,
वह अगर चाहे, तो फिर क्या चाहिए.

अच्छे लोगो से प्यार करो और अगर किसी दिन वह भी प्यार के बदले प्यार करने लगें तो फिर और क्या चाहिए.

चाहने को तेरे क्या समझा था दिल,
बारे, अब इस से भी समझा चाहिए

हमारा दिल तेरी मुहब्बत को न जाने क्या समझा था. ख्वाहमख्वाह हमें बैठेबिठाए मुसीबत में डाल दिया. अब जरा इस से भी समझ लू कि आखिर इस को सूझी क्या थी दूसरे मिसरे का यह मतलब भी निकलता है कि अब जरा तुम ही इस दिल से पूछो कि इस ने तुम्हारे चाहे जाने को समझ क्या रखा था.

दोस्ती का परद, है बेगानगी,
मुह छुपाना हम से छोडा चाहिए

बेगानगी जो है वह तो दोस्ती का परदा है आप चूकि हम से बेगाना है इसलिए जाहिर है कि आप अदर ही अदर हमारे दोस्त है तो फिर हम से परदा क्यो करते है? हम से मुह क्यो छिपाते है, हम से खुल कर मिलिए.

दुश्मनी ने मेरी खोया गैर को,
किस कदर दुश्मन है, देखा चाहिए.

ग़ैर को मुझ से दुश्मनी थी. मेरी दुश्मनी में उस ने अपने आप

तक को भुला के रख दिया. जरा देखिए तो कि वह मेरा किस कदर दुश्मन है कि अपने आप ही से बेगाना हो गया हूं यानी खुद अपना ही दुश्मन बन बैठा हूं.

अपनी रुस्वाई[1] में क्या चलती है स'अि[2],
यार ही हगाम. आरा[3] चाहिए.

हम अपनी कोशिश से तो क्या ही बदनाम हो सकते हैं. हमारी बदनामी के लिए तो दोस्त ही ऐसा चाहिए जो जगहजगह फ़साद और हंगामे कराता फिरे. जभी हमारी बदनामी हो सकती है. इस शेर में ग़ालिब ने खास पहलू यह निकाला है कि यह तो उस के इश्क में अपने आप को बदनाम करना चाहते हैं. शायद महबूब भी इन्हें बदनाम करना चाहता है. लेकिन अपनी बदनामी के डर से चुप है. ग़ालिब उस से कह रहे हैं कि तू जगहजगह मुझ से झगडा कर तो मैं अपने आप बदनाम हो जाऊंगा. वैसे अगर तेरा ख़याल है कि मैं अपने आप ही बदनाम हो जाऊंगा तो यह ग़लत है.

मुनहसिर मरने प हो, जिस की उम्मीद,
नाउम्मीदी उस की, देखा चाहिए

जिस व्यक्ति को सिर्फ मौत ही की उम्मीद हो, और उसे मौत भी न आए, तो उस की निराशा देखने योग्य है. इस शेर का एक बहुत बड़ा मतलब यह भी है कि जिस व्यक्ति की आशा उस की मौत से ही पूरी होती है, उस की निराशा का क्या ठिकाना. यानी उम्मीद पूरी तो हुई, लेकिन मौत के बाद.

चाहते हैं खूबरूओं को 'असद',
आप की सूरत तो देखा चाहिए

१ बदनामी २ कोशिश ३ शोर मचाने वाला

ग़ालिब अपने आप ही से कहते हैं कि असद को हसीनों से प्यार है. ज़रा इन की सूरत तो मुलाहिज़ा फरमाइए यह मुंह और मसूर की दाल.

हर कदम दूरि-ए-मज़िल है नुमाया मुझ से,
मेरी रफ्तार से भागे है, बयाबा मुझ से

मैं मज़िल की तरफ जो कदम उठाता हू, मज़िल और दूर नजर आती है. क्योंकि मेरा रफ़्तार से बयाबा भी भाग रहा है. न यह ख़त्म हो न कभी मजिल आए

वहशत-ए-आतश-ए-दिल से शब-ए-तनहाई में,
सूरत-ए-दूद[1], रहा साय. गुरेज़ा[2] मुझ से.

जुदाई की रात में मेरे दिल की आग से घबरा कर मेरी साया भी धुए की तरह मुझ से दूर रहा.

निगह-ए-गर्म[3] से इक आग टपकती है, 'असद',
है चरागा[4] ख़स-ओ-ख़ाशाक-ए-[5]गुलिस्ता मुझ से

ऐ असद, मेरी गर्म नज़रो से एक आग सी बरस रही है. जभी तो मेरी नजर के शोलों से बाग़ के घासफूस जल कर चराग़ बने हुए हैं.

नुक्त ची है, गम-ए-दिल उस को सुनाए न बने,
क्या बने बात, जहा बात बनाए न बने.

मेरा महबूब हर बात पर ऐतराज करता है. हर बात में मीनमेख निकालता है मैं अपने दिल का गम उसे क्या सुनाऊ सुनाते बनता ही नहीं, जहा कोई बात बनाए न बने वहा हमारी बात कैसे बन जाए.

मैं बुलाता तो हू उस को, मगर ऐ जज़्ब-ए-दिल,
उस पे बन जाए कुछ ऐसी, कि बिन आए न बने

---

१ धुआ. २ कतराना ३ जलती हुई आख ४ रोशन ५ घास फूस.

ऐ जज्बा-ए-दिल! मैं उसे बुलाता तो हू लेकिन उस पर कुछ ऐसी बात आ पड़े कि मेरे पास आए बग़ैर उसे कोई रास्ता नजर न आए

खेल समझा है, कही छोड न दे, भूल न जाए,
काश, यो भी हो, कि बिन मेरे सताए न बने.

हमारे लिए तो प्यार में जान के लाले पड गए है. लेकिन उस के लिए मुहब्बत एक खेल ही है. कहीं ऐसा न हो कि उसे खेल समझ कर छोड़ दे और भूल जाए, काश! यही हो कि उसे मुझ को सताए बिना चैन न आए. उस से कम से कम इक सबध तो बना ही रहेगा.

गैर फिरता है, लिए यू तिरे खत को, कि अगर,
कोई पूछे, कि यह क्या है, तो छुपाए न बने.

तै ने गैर को खत तो लिख दिया. लेकिन अब वह तेरा खत यू लिएलिए फिरता है कि अगर कोई उस से पूछे कि यह खत किस का है तो उस से छिपाया न जा सकेगा जरा सोच कि इस में तेरी कितनी बड़ी बदनामी है और तू ने एक ऐसे व्यक्ति को खत लिखा जो इस के क़ाबिल न था.

इस नजाकत का बुरा हो, वह भले है तो क्या,
हाथ आए, तो उन्हें हाथ लगाए न बने.

पहले मिसरे में 'इस नजाकत का बुरा हो' कह कर ग़ालिब ने वह कोमलता दिखाई है कि शेर अपने आप दिल में उतर जाता है. उस पर 'वह भले है तो क्या' और 'हाथ आए तो उन्हें हाथ लगाए न बने' कोमलता की ऐसी दलील पेश कर दी है कि बस.

कह सके कौन, कि यह जलवगरी किस की है,
परद छोडा है वह उस ने, कि उठाए न बने

उस ने अपने जलवे और हमारी नजरो के दरमियान वह परदा डाल रखा है कि हम से यह परदा उठाया नहीं जा सकता. इसलिए हम उस के जलवो से फैजयाब हो ही नहीं सकते यह शेर वास्तव में खुदा के बारे में है जिस में ग़ालिब कहते है कि वह तो हमें नजर नहीं आ रहा, लेकिन उस ने हर तरफ अपने जलवे ही जलवे बिखेर दिए है. लेकिन चूकि जलवे पैदा करने वाला नजर नहीं आ रहा, इसलिए अब यह क्या कहें कि यह सब जलवे किस के है?

मौत की राह न देखू, कि बिन आए न रहे,
तुम को चाहू, कि न आओ, तो बुलाए न बने

मै मौत की राह कैसे न देखू? क्योंकि वह तो आए बगैर नहीं रहेगी. बिन बुलाए ही आएगी. लेकिन मै दिलोजान से चाहता हू कि तुम आओ लेकिन तुम्हें बुलाया नहीं जाता. क्योंकि जानता हू कि तुम आओगे ही नहीं.

बोझ वह सर से गिरा है, कि उठाए न उठे,
काम वह आन पडा है, कि बनाए न बने.

वह काम जिसे हम कर न सकें बडा कठिन नजर आता है हालाकि जो काम हम करते है वह होता बडा मामूली है और बोझ सिर से अगर एक बार गिर जाए तो उठता भी मुश्किल से है.

'अिश्क पर ज़ोर नही, है यह वह आतश, 'गालिब',
कि लगाए न लगे और बुझाए न बने

ऐ गालिब, इश्क पर कोई जोर नहीं चलता. यह तो वह आग है कि अगर आदमी लगाना चाहे तो लगती नहीं और अगर लग जाए तो फिर लाख बुझाने पर भी नहीं बुझती.

जल्वे का तेरे वह 'आलम है, कि गर कीजे ख़याल,
दीद-ए-दिल को ज़ियारत-गाह-ए-हैरानी करे

तेरे जलवो की वह हालत है कि अगर उस पर ध्यान करें तो यह जलवे हमारे दिल की आख को एक ऐसी जगह बना देते है, जहा हैरानी खुद आ कर माथा टेक देती है. तेरे जलवे हमारे दिल को हैरानी की जियारतगाह बना देंगे

वह आके ख़्वाब में, तसकीन-ए-इज़्तिराब तो दे,
वले मुझे तपिश-ए-दिल मजाल-ए-ख़्वाब तो दे

पहले मिसरे में 'तो दे' का मतलब यह है कि वह तो यह बात कर देगा.

मैं ने माना कि मेरा महबूब ख़्वाब में आ कर मेरी बेक़रारी की तसल्ली कर देगा पर मेरी मुसीबत तो यह दिल है. यह तो इतना बेचैन रहता है कि नींद ही नहीं आती जो एक पल आराम कर सकूं.

करे है कत्ल, लगावट में तेरा रो देना,
तिरी तरह कोई तेग-ए-निगह को आब तो दे

मेरे सामने तेरा यूं मुहब्बत में रो देना भी मुझे कत्ल कर रहा है, क्योकि तू ने आखो में आसू भर के अपनी नजरो की तलवार को और चमकदार बना लिया है.

दिखा के जुंबिश-ए-लब ही, तमाम कर हम को,
न दे जो बोसा, तो मुह से कही जवाब तो दे

तू हमें बोसा नहीं देता तो न दे. कम से कम होंठ हिला कर जवाब तो दे दे. यहा तो तेरे होठो के हिलते ही किस्सा तमाम हो जायगा, क्योंकि जब तू इनकार करेगा तो हम उस इनकार के सदमे को सहन नहीं

कर सकेंगे और चल बसेंगे.

पिला दे ओक से, साकी, जो हम से नफरत है,
पियाल. गर नही देता, न दे, शराब तो दे

ऐ साकी, तुझे हम से इतनी ही नफरत है कि तू हमें प्याला नहीं दे सकता तो न दे, शराब तो दे. हम ओक ही से पी लेंगे.

'असद', खुशी से मिरे हाथ पाव फूल गए,
कहा जो उस ने, ज़रा मेरे पाव दाब तो दे

जब महबूब ने अपने आशिक से यह कहा कि मै आज थक गया हूं मेरे पाव तो जरा दबा दो. यह सुनते ही गालिब के मारे खुशी के हाथ पांव फूल गए कि आज महबूब ने कुछ सेवा का अवसर तो दिया.

फरियाद की कोई लै नही है,
नाल. पाबद-ए-नै नही है

फरियाद करने के लिए कोई खास लै या सुर नहीं बने हुए है जैसा जी में आएगा, रोएगें, क्योकि रोने पर कोई बासुरी की पाबदी नहीं है. फला सुर से और फला राग में रोया जाए.

हर चद हर एक शै मे तू है,
पर तुझ सी तो कोई शै नही है

यह शेर भी खुदा से सबंध रखता है. गालिब कहते है कि माना कि तू हर चीज में मौजूद है लेकिन तुझ जैसी तो कोई चीज़ नहीं है. फिर हम इन चीजों से मुह फेर कर क्यो तुझे चाहे और ढूढ़े.

हा, खाइयो मत फरेब-ए-हस्ती,
हर चद कहें, कि है, नही है

ज़िंदगी के धोखे में हरगिज़ न आना. लोग लाख कहें कि जिंदगी एक हकीकत है, लेकिन यह हक़ीकत नहीं है. एक धोखा है.

बहुत दिनो में तगाफुल ने तेरे पैदा की,
वह इक निगह, कि बज़ाहिर निगाह से कम है.

तेरी बरुखी ने बहुत दिनो बाद वह एक उचटती सी नजर पैदा की, जो है तो नजर ही, लेकिन नजर से बहुत कम है. यानी तू ने हम से एक मुद्दत कटेकटे रहने के बाद एक उचटती सी नज़र हम पर डाल दी अब तो तुझे हम पर पूरी नज़र करनी चाहिए थी. तेरे इस तरह कनखियों से देखने पर तो हमारी तस्कीन नहीं होती. अब तू हम पर पूरी नज़र डाल और हर तरह से हमारी तस्कीन कर.

हम रश्क को अपने भी, गवारा नही करते,
मरते है, वले उन की तमन्ना नही करते

वह इतना नाज़ुक और खूबसूरत है कि उसे पाने के खयाल से हमें खुद अपने आप ही से ईर्ष्या हो रही है. जभी हम उस की मुहब्बत में मर रहे है, लेकिन उस की तमन्ना नहीं करते.

दर पर्द[1] उन्हें गैर से, है रब्त-ए-निहानी[2],
ज़ाहिर का यह पर्दा है, कि पर्दा नही करते.

अस्ल में उन्हें गैर से अदर ही अदर बहुत गहरी मुहब्बत है और यह जो उन का दावा है कि हम तो उस से प्यार नहीं करते जभी उस से परदा नहीं करते यह सब दिखावे की बातें है, क्योंकि अगर उन्हें गैर से सचमुच मुहब्बत न हो तो क्या उस से परदा न करें?

यह वा'अिस-ए-नौमीदि-ए-अर्बाब-ए-हवस है,
'ग़ालिब' को बुरा कहते हो, अच्छा नही करते

---

१ अंदर ही अदर २ गहरा प्यार.

मेरे महबूब, तुम गालिब को जो बुरा कहते हो तो यह अच्छा नहीं कर रहे हो. क्योंकि इस से उन लोगो के दिल टूट जाएगे जिन्हें सिर्फ तुम्हारे हुस्न से मतलब है और तुम से कोई सच्चा प्यार नहीं है. यानी उन लोगो का दिल इसलिए टूट जायगा और वह तुम से इसलिए निराश हो जाएगे क्योंकि वह सोचेंगे कि जब तुम गालिब जैसे वफादार कि बुराई करते हो तो फिर उन की बात क्या बनेगी जिन्हें वफा से कोई मतलब है ही नहीं. महबूब को गैरो की रिहाई दे कर अपने आप को बुरा कहलवाने से रोकना, बिलकुल नई बात है.

कभी तो इस दिल ए-शोरीद की भी दाद मिले,
कि एक 'उम्र से हस्रत परस्त-ए-वाली है

ऐ दोस्त, कभी तो मेरे इस दीवाने सर की दाद दे जो एक मुद्दत से तकिए पे नहीं लेटा

'असद' है नज्'अ[1] मे, चल बेवफा, बराए खुदा,
मक'ाम-ए-तर्क[2]-ए-हिजाब[3]-ओ-विदा-'ए-तम्की[4] है

ऐ बेवफा, अब तो खुदा के लिए चल और असद को देख. क्योंकि अब वह आखिरी दमो पे है अब यह वह वक्त आ गया है जब इन्सान को अपनी शर्म और घमड छोड कर दसरे की खबर लेनी चाहिए.

दिया है दिल अगर उस को, बशर[5] है, क्या कहिए,
हुआ रकीब[6], तो हो, नाम.बर[7] है, कया कहिए

गालिब ने अपने महबूब के नाम एक खत लिख कर नामावर को दिया कि वहां यह खत पहुचा दो नामावर जब खत ले कर गालिब के

---

१ आखिरी वक्त २ छोडना ३ शर्म ४ घमड, नाज़
५ इनसान ६ दुश्मन चिट्ठी लाने वाला

न मिल सकने की वजह से मेरी रूह नगी थी उस वक्त भी मैं अपनी कोई ठोस शक्ल अख़्तियार करने के लिए बुरी तरह तड़प रहा था मेरी इस तड़प को देख कर मेरी रूह के नगेपन ने मुझे शरीर दिया और मै अपनी तमाम तड़प ले कर एक जिदा हकीकत बन गया

क्यो न हो बेइल्तिफाती[1] उस की ख़ातिर जम्'अ[2] है
जानता है मह्व-ए-पुरसिश[3]हा-ए-पिन्हानी मुझे

वह मुझ से क्यो न बेरुखी रखे क्योकि वह जानता है कि मै इसी बात पे मिटा हुआ हू कि वह अपने दिल ही दिल में मेरा हाल पूछता रहता है. और मेरे इसी खयाल से उस को तसल्ली है.

मेरे ग़मखाने की किस्मत जब रकम होने लगी,
लिख दिया मिजुमल.-ए-अस्बाव-ए-वीरानी मुझे.

जब मेरे उजड़े हुए, ग़म के मारे हुए घर की तक़दीर लिखी जाने लगी तो मुझे भी इस घर की तबाही का एक सबब करार दिया गया और मेरा नाम भी उन दूसरी चीजो के साथ लिख दिया गया जिन के कारण मेरा घर बरबाद हुआ था.

वा'द: आने का वफा कीजे, यह क्या अदाज़ है,
तुम ने क्यो सौंपी है, मेरे घर की दरबानी, मुझे.

महबूब ने आशिक से वादा किया था कि वह उस से मिलने के लिए उस के घर आएगा. बस वह दिन और यह दिन आशिक़ अपने घर की दहलीज पर खड़ा अपने महबूब की राह देख रहा है. लेकिन महबूब ने तो झूठा वादा किया था, उसे न आना था और न आया. जभी गालिब फरमाते है कि अपना वादा पूरा कीजिए, यह क्या अंदाज है कि मुझे मेरे घर का

---

१ बेरुखी २ तसल्ली. ३ हाल पूछना. ४ छिपा हुआ.

चौकीदार बना के दहलीज पर खड़ा कर रखा है.

> यारब, इस आशुफ्तगी[1] की दाद किस से चाहिए,
> रश्क, आसाइश[2] प है ज़िंदानियो[3] की, अब मुझे

शायर जब आजाद नहीं था और कैद में था तो वह कैद से बाहर आजाद लोगो से ईर्ष्या करता था कि वह लोग किस आज़ादी के साथ ज़िदगी बसर कर रहे है. एक मै हू कि दूसरो का गुलाम हूं. लेकिन जब शायर आजाद कर दिया गया और उसे जिदा रहने के लिए दो वक्त की रोटी हासिल करने में भी असफलता होने लगी तो वह खुदा से कहने लगा कि मेरे इस पागलपन की दाद दे कि पहले मुझे आजाद लोगो से ईर्ष्या होती थी, अब मुझे उन लोगो से ईर्ष्या हो रही है जो कैद में है और जिन्हें आज़ाद जिदगी गुजारने की कीमत अदा नहीं करनी पड़ रही है.

> तब अ' है मुश्ताक[4]-ए-लज्ज़तहा ए-हस्रत, क्या करू,
> आरज़ू से, है शिकस्त-ए-आरज़ू मतलव मुझे

मेरी तबीयत तो हसरत और तमन्ना की लज्जत उठाने का शौक रखती है. जभी मै, अगर कोई आरज़ू करता हू तो उस से मेरा मतलब होता है कि उस आरज़ू की शिकस्त हो, मुझे हर आरज़ू में नाकामी हो, ताकि फिर मै एक नई आरज़ू, एक नई तमन्ना करू और उस की हसरत में जीने का मजा हासिल कर सकूं. गालिब आरज़ू के पूरे हो जाने को आरज़ू की मौत करार देते है.

> दिल लगा कर आप भी 'ग़ालिव' मुझी से हो गए,
> 'अिश्क से आते थे माने'अ, मीरज़ा साहव मुझे.

---

१ जुनून. २ आराम ३ कैदियो. ४ तबीयत ५ शौक़ रखने वाला.

दूसरे मिसरे में मिर्जा साहब से भी मतलब गालिब ही है. जैसे हम कभीकभी असीम दुख से हस के अपने दिल से कहते हैं तुझे लाख समझाया था, मगर तू ने हमारी एक न सुनीं. इसी तरह गालिब अपने आप ही से कह रहे हैं कि मिर्जा साहब मुझे इश्क से मना करते थे, लेकिन मैं ने उन की एक न सुनी. आखिर दिल लगा कर ही गालिब की तरह उदास रहने लगे है.

हुजूर-ए-शाह में, अह्ल-ए-सुखन की आजमाइश है,
चमन में, खुश नवायान-ए-चमन की आज़माइश है

गालिब ने यह गजल मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर के दरबार में पढ़ी थी और खास उसी मौके के लिए कही थी, जभी कहते हैं कि आज बादशाह के हुजूर में शायरो का इम्तहान है. आज बाग में अच्छी आवाज वाले परिंदों की आवाज की परख है कि किस की आवाज में जियादा सोज और दर्द है.

वह आया बज़्म में देखो न कहिए फिर कि ग़ाफिल थे,
शिकेब-ओ-सब्र अह्ल-ए-अंजुमन की आज़माइश है.

सब लोग महफिल में बैठे उस का इंतजार कर रहे है जिस को एक नजर देखते ही होशोहवास और सब्रओ करार सब लुट जाता है. गालिब अचानक महफिल में बैठे हुए लोगो को खबर देने के अंदाज में कहते हैं कि लो, वह आया, देखो, फिर न कहना कि हम बेखबर थे. यह वह क्षण है जब हम सब के होश व हवाश और सब्र करने की ताकत का इम्तहान होगा. मतलब यह कि उसे देख कर तो अपने आप से बेखबर होना ही है, लेकिन गालिब महफिल वालो को ललकार रहे हैं कि संभल जाओ, कम से कम उसे एक नजर तो देख लो

इतनी लंबी कि जिस आदमी को मेरा सदेश उन तक पहुंचाना है, वह भी मेरी कहानी सुनते सुनते घबरा जाता है. सदेश ले जाने वाले की घबराहट ही को गालिब अपने सदेश का खुलासा बता रहे हैं कि दो शब्दो में बात यह है कि मेरा संदेशवाहक भी घबरा रहा है. (यानी मेरा महबूब तो मेरी कहानी क्या ही सुनेगा)?

उधर वह बदगुमानी है, इधर यह नातवानी है,
न पूछा जाए है उस से, न बोला जाए है मुझ से.

उधर उसे मुझ पे यकीन नहीं है. इधर मैं बेहाल हूं. चूंकि उसे मुझ पे यकीन नहीं है इसलिए वह मेरा हाल पूछता नहीं और चूंकि मैं गम के मारे बेहाल हू, इसलिए मुझ से कुछ कहा नहीं जाता

सभलने दे मुझे, ऐ नाउमीदी, क्या क़यामत है,
कि दामान-ए-खयाले यार, छूटा जाए है मुझ से.

ऐ नाउम्मीदी, मुझे सभलने दे. आखिर तुझे ऐसी क्या मुसीबत है कि मेरी जान पे आ बनी है. क्या देख नहीं रही कि तेरी वजह से उस के खयाल का दामन भी मेरे हाथों से छूटता जा रहा है यानी निराशा इतनी बढ गई है कि महबूब का अगर दिल में खयाल भी आता है तो उस के साथ यह खयाल आ जाता है कि वह हम से कभी प्यार नहीं करेगा. इसी खयाल के हाथों महबूब की याद भी दिल से मिटती जा रही है. 'गालिब' इस शेर में अभी निराशा से कह रहे हैं कि मुझे सभलने दे, आखिर ऐसी भी क्या कयामत है?

तकल्लुफ बरतरफ, नज्जारगी में भी सही, लेकिन,
वह देखा जाए, कब यह जुल्म देखा जाए है मुझ से

तकल्लुफ एक तरफ रहा. साफ बात तो यह है कि मैं जुल्म होते देख ही नहीं सकता कि मेरे महबूब का लोग नजारा करते फिरें. चाहे

उन नजारा करने वालो में खुद मै भी क्यो न शामिल होऊं.

हुए है पाव ही पहले, नबर्द[1]-ए-'अिश्क में जख्मी,
न भागा जाए है मुझ से, न ठहरा जाए है मुझ से

मुहब्बत की जंग में सब से पहले मेरे पाव ही घायल हो गए हैं. अब न मुझ से भागा जा रहा है, न ठहरा जा रहा है.

कयामत है, कि होवे मुद्दई का हमसफर, 'गालिब',
वह काफिर, जो खुदा को भी न सौपा जाए है मुझ से.

गालिब कहते हैं कि क्या गजब है कि विदा होते समय मुझे अपने महबूब को गैर के साथ भेजना पड़ रहा है, जब कि मैं इस काफिर को खुदा के हाथ भी नहीं सौंप सकता. काफिर उस को कहते हैं जो खुदा पर यकीन न रखता हो खुदा को भी न सौंपा जाए से मतलब है कि मैं उस से जुदा होते वक्त उस से खुदा हाफिज ही नहीं कह सकता. लेकिन अब वह मुझ से जुदा हो रहा है तो मेरा ही रकीब उसे घर तक छोडने के लिए जा रहा है.

लागर[2] इतना हू, कि गर तू बज़्म में जा दे मुझे,
मेरा ज़िम्म', देख कर गर कोई बतलादे मुझे.

मैं तो इतना बेजान और कमजोर हू कि अगर तू मुझे अपनी महफिल में बैठने की जगह दे तो मैं किसी को नजर नहीं आ सकता और यह मेरा जिम्मा रहा कि अगर कोई मुझे देख के पहचान ले तो मुझे वहां जगह न दे.

क्या त 'अज्जुब है, कि उस को देख कर आ जाए रह्म,
वा तलक कोई किसी हीले से पहुचा दे मुझे

---

१ प्रेम युद्ध २ कमजोर.

मुझे उस की महफिल तक कोई भी किसी बहाने से पहुचा तो दो. मतलब यह कि मै इस कदर मरने के करीब हू कि चल कर वहा तक जा भी नहीं सकता. क्या अजब है कि मेरा यह हाल देख कर उस को मुझ पर रहम ही आ जाए.

मुह न दिखलावे, न दिखला, पर ब अदाज़-ए'अिताब[1],
खोल कर परद., ज़रा आखें ही दिखला दे मुझे

ऐ मेरे महबूब, तू मुझे मुह नहीं दिखाना चाहता अच्छा न दिखा. लेकिन गुस्से के अदाज में जरा परदा खोल कर मुझे आखें ही दिखा दे. अब इस में एक खास लुत्फ यह है कि आंखें दिखाना भी मुहावरा है जिस का मतलब होता है किसी को डराना धमकाना. इसलिए यहा 'आखें ही दिखला दे मुझे' दोनो अर्थों में इस्तेमाल हुआ है. यानी आखें ही दिखा दे (आखो में गुस्सा भर के जरा धमका ही दे) और आंखें ही दिखा दे यानी अपनी आखें तो देख लेने दे

बाज़ीच'-ए-अत्फाल है दुनिया, मेरे आगे,
होता है शब-ओ-रोज़ तमाशा, मेरे आगे

यह सारी दुनिया मेरे आगे महज बच्चो का खेल है और रात दिन यहां जो कुछ हो रहा है यह मेरे लिए इसी तरह है जैसे बच्चे अपने खेल कूद में मुझे अपना तमाशा दिखा रहे हो. दूसरा मतलब यह है कि इस दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, वह मेरे लिए एक तमाशे से जियादा हैसियत नहीं रखता, क्यों कि इस दुनिया का हर काम मेरे लिए बच्चो का खेल है (यानी कोई बडी बात नहीं).

इक खेल है औरग-ए-सुलेमा, मेरे नज़दीक,
इक बात है, ए 'जाज़-ए-मसीहा, मेरे आगे

---

१ गुस्सा

बादशाहो के तख्त मेरी नजरो में एक खेल है और मसीहा का यह कमाल कि वह मुरदो में जिदगी की रूह फूक सक्ता है इक बात है यानी यह सब कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे मै अपनी जिदगी का मकसद बना बैठू. इस शेर के दूसरे मिसरे में एक और भी मतलब है और वह यह कि दूसरा मिसरा पहले मिसरे को काट रहा है. बादशाह का तख्त तो मेरे लिए सिर्फ एक खेल है हा अगर कोई मुरदो को जिदा कर दे तो कोई बात भी है

जुज़[1] नाम, नही सूरत-ए-आलम मुझे मजूर,
जुज़ वहम, नही हस्ति-ए-अशिया मेरे आगे

इस दुनिया की जो भी सूरत है वह मुझे सिर्फ एक नाम की हैसीयत में मजूर है. यानी मै शब्द "दुनिया" को सिर्फ एक नाम समझता हू और इस दुनिया की हर चीज की औकात मेरी नजरो में एक वहम से जियादा कुछ नहीं.

होता है निहा गर्द में सहरा मेरे होते,
घिसता है जबी खाक पे दरिया, मेरे आगे

मेरे होते हुए सहरा भी गर्द में छिप जाता है, यानी मै इस कदर खाक उडाता हू कि सहरा के सहरा को सिर्फ एक गर्द बना देता हू और मेरे आगे नदियां जमीन पर माथा रगड़ती है यानी मेरी चाल को देख कर कि मै सहराओं को भी एक बगूला सा बना के रख देता हूं, दरिया भी मेरे सामने सर रगड़ता है.

मत पूछ, कि क्या हाल है मेरा तेरे पीछे,
तू देख, कि क्या रग है तेरा, मेरे आगे

---

१ सिवा

यह मत पूछ कि तेरे बगैर मेरा क्या हाल है. बल्कि तू यह देख कि मेरे होते हुए तेरे चेहरे का रंग क्या हो जाता है. यानी आशिक को बेहद उदास और गमगीन देख कर महबूब का रंग फक हो जाता है.

सच कहते हो, खुदबीन[1]-ओ-खुदआरा[2] हू, न क्यो हू,
बैठा है बुत-ए-आइन सीमा[3] मेरे आगे

तुम सच कहते हो कि मै बैठा अपने आप को देख रहा हू और बन सवार रहा हू आखिर मै ऐसा क्यों न करूं? जब कि मेरे सामने आईने जैसी पेशानी वाला बुत बैठा हुआ है. यहा शब्द बुत भी अजब खूबसूरती पैदा कर रहा है. एक तो यह कि बुत हिल डुल तो सकता नहीं और दूसरे शब्द बुत उर्दू शायरी में बेहद खूबसूरत महबूब के लिए आता है तेरे बुत से मतलब होता है वह खूबसूरत चेहरा जो किसी पर रहम खाना जानता ही न हो.

फिर देखिए अदाज़ ए-गुल अलशानि[4]-ए-गुफ्तार[5].
रख दे कोई, पैमान-ओ-सहबा मेरे आगे

अगर मेरी जबान से फूल झड़ते हुए देखना चाहते हो तो फिर मेरे सामने शराब और प्याला रख दो.

'आशिक हू, प मा'शूक फरेबी है मेरा काम,
मजनू को बुरा कहती है लैला, मेरे आगे

आम तौर पर आशिक लोग खुद माशूक के धोखे में आ जाते हैं लेकिन गालिब कहते है कि मै यद्यपि आशिक हूं, लेकिन माशूक को धोखा देने में अपना जवाब नहीं रखता जभी लैला मेरे सामने मजनूं

---

१ अपने आप को देखने वाला २ अपने को सवारना ३ आईने सी जैपेशानी ४ फूल झडना ५ गुफ्तगू

को बुरा कह रही है   यानी मुझे यकीन दिला रही है कि मैं मजनू से बड़ा और बेहतरीन आशिक हू.

हैं मौजज़न इक कुल्ज़ुम-ए-ख़ूं, काश, यही हो,
आता है, अभी देखिए, क्या क्या, मेरे आगे.

उस की जुदाई में मेरे दिल के अदर खून का समुद्र जोश में आ गया है और अब मैं आंखो से लहू रोऊगा. काश! खून रोने पर ही मेरा दुख कम हो जाए. लेकिन कौन कहे कि उस की जुदाई में खून रोने के अलावा मुझे और क्या क्या अजाब सहना पडेगा

गो हाथ को जुंबिश नही, आखो में तो दम है,
रहने दो अभी साग़र-ओ-मीना मेरे आगे

यद्यपि अब मुझ में नशे की वजह से इतनी भी ताकत नहीं रही कि मैं हाथ बढा कर प्याला भी उठा सकू, लेकिन इस से शराब पीने की तमन्ना खतम नहीं हो गई. अभी मेरी आंखों में दम बाकी है, अभी मैं प्याले को देख तो सकता हूं. इसलिए मेरे सामने शराब से भरा हुआ प्याला और सुराही रहने दो   मैं इन्हे देखदेख कर हो अपनी पीने की हसरत पूरी कर लूगा   अगर उन्हें उठा नहीं सकता तो न सही.

हम पेशः-ओ-हम मश्रब-ओ-हम राज़ है मेरा,
गालिब को बुरा क्यो कहो, अच्छा, मेरे आगे

गालिब की बुराई करने वाला गालिब को चेहरे से नहीं पहचानता और वह गालिब ही के सामने बैठा गालिब को बुरा कहे जा रहा है. अब मिर्जा गालिब भी उसे यह बताना नहीं चाहते कि वह जिस की बुराई कर रहा है वह गालिब तो उसी के सामने बैठा है   इसलिए एक और अदाज में बुराई करने वाले से कह रहे हैं—भई, गालिब अपना यार है, हमारे साथ उठने बैठने, खाने पीने वाला दोस्त है   हम सब बातें

इकट्ठी ही करते हैं, इस नाते से वह हमारा राजदां भी है. तुम मेरे सामने उसे बुरा क्यो कह रहे हो? अगर तुम उसे बुरा कहते हो और वह भी मेरे ही सामने तो फिर मैं भी वही कुछ करता हूं जो वह करता है इस लिहाज से तो तुम मुझे भी बुरा कहे जा रहे हो, हालांकि तुम मुझे एक अच्छा व्यक्ति समझ कर उस की बुराइयां मेरे सामने कर रहे हो और अगर तुम मुझे अच्छा आदमी समझते हो तो फिर उसे भी बुरा क्यो कहते हो? उसे भी अच्छा कहो, क्योंकि मैं और वह एक ही हैं.

कहू जो हाल, तो कहते हो, मुद्द'आ कहिए,
तुम्ही कहो, कि जो तुम यू कहो, तो क्या कहिए

मैं जब तुम्हे अपना हाल सुनाता हू तो तुम हाल सुन कर आखिर में यह टका सा जवाव सुना देते हो कि अच्छा तुम दो शब्दो में अपना मतलब बताओ कि क्या कहना चाहते हो? अब तुम्हीं कहो कि जब तुम यह जवाब दो तो हम तुम से क्या कहे?

न कहियो ता'न से फिर तुम, कि हम सितमगर हैं,
मुझे तो खू है, कि जो कुछ कहो, बजा कहिए.

गालिब ने बातोबातो में अपने महबूब को जालिम कह दिया महबूब ने ताने के तौर पर कहा 'जी हां' मैं तो जालिम हू. अब गालिब कहते हैं कि यूं ताना दे कर न कहो कि मैं जालिम हू. क्योंकि मुझे तुम्हारी हर बात को सच मानने की आदत है अब की तुम ने अगर कहा कि मैं जालिम हू तो मैं कह दूगा कि 'जी हां', बिल्कुल ठीक है.

वह नेश्तर सही, पर दिल में जब उतर जावे,
निगाह-ए-नाज को फिर क्यो न आशना कहिए

उस की नजर खजर ही सही, लेकिन जब वह दिल में उतर ही गई है तो फिर अब उस को हम अपना दोस्त क्यो न कहें? क्योंकि दोस्ती

की असल जगह तो दिल ही में होती है मजा यह है कि महबूब ने गालिब को चुभती नजरो से देखा है जिस से गालिव का दिल धक्क से रह गया है उसी पर गालिब कह रहे हैं कि जब यह नजर हमारे दिल में उतर ही गई है तो फिर अब हम उसे अपना दोस्त क्यो न समझें. वैसे भी महबूब की नजर का तीर दिल में उतर जाना तो आम बात ही है.

नही निगार[1] को अुल्फत, न हो, निगार तो है,
रवानि -ए- रविश[2]-ओ-मस्ति -ए- अदा कहिए

हमारे हसीन महबूब को हम से अगर मुहब्बत नहीं है तो न सही, लेकिन वह महबूब तो है. हम उस की हर बात को उस का अंदाज और अदा की मस्ती कहते है (यानी वह अगर मुहब्बत नहीं करता तो अदाएं तो दिखाता है.)

सफीन[3] जब कि कनारे पे आ लगा, 'गालिब',
खुदा से क्या सितम-ओ-जौर-ए-नाखुदा[4] कहिए.

गालिब अब जब कि हमारी कश्ती किनारे पर आ ही लगी है तो खुदा से हम अपने मल्लाह के उन जुल्मो की शिकायत क्या करें जो उस ने कश्ती में हम पे ढाए थे लाख जुल्म लिए सही लेकिन मंझधार में तो नहीं डुबोया, किनारे तो लगा दिया. इस का असल मतलब यह है कि जब हम अपनी जिदगी को आखिरी समस्याओ पर आ ही गए है, और पूरी उम्र गुजर ही गई है तो अब खुदा से इस दुनिया की क्या शिकायत करें! अच्छी बुरी जैसी गुजरी, गुजर तो गई, जिदा तो रहे ही है.

रोने से और अिश्क में वेवाक हो गए,
धोए गए हम ऐसे, कि वस पाक हो गए

---

१ हसीन महबूब २ चाल, अदाज ३ कश्ती. ४ मल्लाह

हम इश्क में इतने रोए कि अब बिलकुल बेवाक हो गए हैं. यानी अब किसी बात के बंधन में नहीं हैं. अगर उस के इश्क में हम रोए तो कहीं वह बुरा न मान जाए, कहीं बदनामी न हो जाए. अब हमें इन बातो की कोई परवा नहीं है, क्योंकि हम अपने आंसुओ में इतना घुल गए हैं कि हमारे सब गुनाह धुल गए हैं.

सर्फ़-ए-बहा.ए-मै हुए, आलात-ए-मैकशी[1],
थे यह ही दो हिसाब, सो यो पाक[2] हो गए

शराब पीने के लिए पहले पैसो की जरूरत थी हमारे पास शराबनोशी का जो सामान था हम ने उसे बेच दिया और उस की शराब खरीद कर पी ली हमारी जिंदगी में यही दो हिसाब थे, एक तो शराब की कीमत, दूसरे वह सामान, सो दोनो पी गए. अब हिसाब पाक है.

रुस्वा-ए-दहर गो हुए, आवारगी से तुम,
बारे तबी'अतो के तो चालाक हो गए

यद्यपि तुम अपनी आवारा तबीयत की बदौलत दुनियां में बदनाम तो हो गए हो, लेकिन तुम ने आवारा फिर फिर कर लोगो के दिल लेनें सीख लिए हैं और चालाक हो गए हो. पहले तुम सीधे सादे थे. प्यार के बदले में प्यार कर लेते थे. लेकिन अब तुम्हें दुनियां की हवा लग गई है. अब तुम किसी को खातिर ही में नहीं लाते क्योंकि तुम्हें इस बात का अहसास हो गया है कि तुम बेहद खूबसूरत हो और तुम पर मरने वाले हजारों हैं. सो तुम अब क्यो किसी की परवाह करने लगे.

कहता है कौन नाल-ए-बुलबुल को, बे असर,
परदे में गुल के लाख जिगर चाक हो गए

---

१ हिसाब साफ हो जाना २ शराब पीने का सामान

बुलबुल की दर्दभरी आवाज को बेअसर कौन कह सकता है? क्या देखने वाले यह नहीं देख सकते कि फूल जब तक खिला नहीं था तब तक उस की एक एक पत्ती नहीं बनी थी. अब जो खिला है तो उस की कई पत्तियां है. यह बुलबुल के रोने का असर नहीं तो और क्या है?

पूछे है क्या वजूद[1]-ओ-'अदम[2] अह्ल-ए-शौक का,
आप अपनी आग के ख़स-ओ-ख़ाशाक[3] हो गए.

अब तुम अपने चाहने वालो की जिंदगी और मौत के बारे में क्या पूछ रहे हो वह लोग तो अपनी मुहब्बत की आग के खुद ही तिनके बन कर जल गए. यानी उन्होने अपनी मुहब्बत की आग में खुद को ही जला लिया और अब राख का ढेर है. यही राख उन की जिंदगी है और यही मौत

करने गए थे उस से, तगाफुल का हम गिला,
की एक ही निगाह, कि बस ख़ाक हो गए

हमें जिस से प्यार था उसे कभी भूले से भी हमारा ध्यान न आता था. हम ने बहुत सब्र किया आखिर एक दिन उस से शिकायत करने गए कि तुम हमारी खबर क्यो नहीं लेते? बस वहा पहुचे ही थे कि उस ने जो आंख उठा कर एक नजर हमें देखा तो हम वहीं ढेर हो के रह गए इस शेर का इतना सा ही मतलब नहीं है. ऐसा हमारी जिदगी में अकसर होता है कि हम किसी से शिकायत करने के लिए उस के पास जाते है. और इस से पहले कि हम उस से कुछ कहें, उस की एक ही गुस्सेभरी नजर हमारी जबान बद कर देती है. इस शेर के कई पहलू है एक तो यह कि गालिब को महबूब की बेरुखी की शिकायत थी और जब वह शिकायत करने गए तो महबूब ने ऐसी कडी नजर से देखा

---

१ जिंदगी २ मौत. ३ घासफूस

जिस में यह बात साफ जाहिर थी कि तू हम से शिकायत करने की जुर्रत करेगा? दूसरा पहलू यह है कि महबूब ने जो आख उठा के देखा तो गालिब को यू लगा जैसे वह गालिब से भी जियादा दुखी है. गालिब को यह गुमान भी न था कि महबूब भी इतना दुखी हो सकता है और उस की नजर में जो दुख देखा तो दिल खून के आंसू रो दिया कि हायहाय मैं ने उसे इतना दुख दिया है?

शेर में तीसरा पहलू यह है कि गालिब को महबूब से यही शिकायत थी कि वह इन पर नजर नहीं करता. और उस ने एक ही नजर में चुप लगा के रख दी. यानी उस की बेरुखी उस की एक नजर से कहीं जियादा अच्छी थी कम से कम पहले यह चुप तो न लगी थी मतलब यह कि हर आदमी इस शेर को अपनी जिदगी की किसी न किसी घटना की रोशनी में उस का अपनाअपना मतलब निकालेगा

जब तक दहान-ए-ज़ख्म[1] न पैदा करे कोई,
मुश्किल, कि तुझ से राह्-ए-सुखन वा करे[2] कोई.

जब तक कोई अपने दिल में जख्म न पैदा करे तब तक उस के लिए यह बेहद मुश्किल बात है कि तुझ से किसी किस्म की बात कर सके, यानी तेरी एक ही बात दिल में जख्म लगा देती है. जब दिल में यह जख्म लगता है तो आदमी अपने आप तुझ से कहता है कि तू ने यह क्या किया?

रोने से, ऐ नदीम, मलामत न कर मुझे,
आखिर कभी तो, अुकद-ए-दिल वा करे कोई

ऐ मेरे साथी, मुझे रोने पे बुरा भला न कह. आखिर कभी तो हमें अपने दिल को हलका करना ही है. दूसरे मिसरे के आखिर में

---

१ जखम खाना २ शुरू करना (खोलना).

'कोई' शब्द को अगर महबूब समझा जाए तो शेर का मतलब यह हो जाएगा कि ऐ मेरे साथी, मुझे रोने पे बुरा भला न कह, आखिर मैं कब तक सहन करू? उसे तो अपनेआप मेरा खयाल आएगा नहीं. मेरा रोना सुन कर शायद उसे कुछ खयाल आए और शायद वह मेरी मुश्किल आसान कर दे. (यानी मैं क्यो न रोऊ, आखिर कभी तो कोई मेरी मुश्किल हल करेगा

नाकामि-ए-निगाह है वर्क़-ए-नज्ज़ार. सोज़,
तू वह नही, कि तुझ को तमाश करे कोई

अगर मेरी नजर तेरा नजारा नहीं कर सकी तो उस की नाकामी अब एक ऐसी बिजली है जो हर नजारे को जला के रख देगी. तू कोई तमाशा नहीं है कि जिसे हर कोई आ के देखता फिरे.

सरबर[1] हुई न वा'द.-ए-सब्र आज़मा से उम्र,
फुरसत कहा, कि तेरी तमन्ना करे कोई.

तू ने जो मिलने का वादा किया था उस वादे को आजमाने के लिए यह उम्र काफी न हुई. मुझे एक और उम्र चाहिए. फिर शायद तू अपना वादा पूरा करे लेकिन दुआ तो मिल नहीं सकती. इसलिए अब हमें इतनी फुरसत कहां कि तेरी तमन्ना कर सके. अब तो हम जाने वाले हैं.

बेकारि-ए-जुनू को है सर पीटने का शग़्ल,
जब हाथ टूट जाए तो फिर क्या करे कोई

दीवानगी, बेकारी को और कोई धंधा न मिले तो वह सिर ही

---

१ काफी

क्या किया खिज्र न सिकदर से,
अब किसे रहनुमा करे कोई

खिज्र को खुदा ने दुनिया में इसी लिए भेजा था कि वह लोगो की रहनुमाई करे. खिज्र की जब सिकंदर से मुलाकात हुई तो वह उसे आब-ए-हयात (अमृत) के चशमे पर ले गया था जहा का पानी पीने के बाद इनसान कभी नहीं मर सकता. लेकिन वहा पहुंच कर खिज्र ने सिकदर को उन आदमियो से मिला दिया जिन्होने उस चशमे का पानी पी लिया था, इसलिए अब वह मर तो सकते नहीं थे, लेकिन हजारो बरस के बूढे हो चुके थे और अब बस इस काबिल रह गए थे कि पड़ेपड़े सास ले सके. यह देख कर सिकंदर ने अमृत नहीं पिया था. गालिब इसी घटना के सदर्भ में कहते है कि आखिर खिज्र ने सिकदर से क्या किया? हालांकि खिज्र का काम ही यही था कि वह लोगो को सही राह दिखाए. जब खिज्र ही ने ऐसा किया तो फिर अब दुनिया में किस पे भरोसा किया जाए और किसे अपना रहनुमा माना जाए मतलब यह कि अपनी हिम्मत और अपनी ही सूझबूझ से हर काम करना चाहिए.

जब तवक्को 'अ ही उठ गई, 'ग़ालिब',
क्यो किसी का गिला करे कोई

गालिब, जब किसी से कोई उम्मीद ही बाकी नहीं रही तो फिर किसी की भी शिकायत क्यो जबान पर आए?

बाग पा कर खफक़ानी[1], यह डराता है मुझे,
साय-ए-शाख़-ए-गुल, अफ'ओ[2] नज़र आता है मुझे

१ पागल २ साप

मैं जब गुलशन में जा निकलता हू तो गुलशन मुझे पागल जान कर डराता है. और वह इस तरह कि मुझे फूलो के पास बैठने का पागलपन है. इसलिए हर फूल की टहनी मुझे एक साप की तरह नजर आती है क्योकि गुलशन का एक भी फूल यह नहीं चाहता कि मै वहा मौजूद रहू. मतलब यह कि मैं दुनिया के सब लोगो को अच्छा समझ कर उन का दोस्त बनना चाहता हू. लेकिन दुनिया वाले मेरी दोस्ती के जज्बे को मेरा पागलपन समझ कर मुझे अपने से दूर कर देते हैं.

मुद्दआ[1] महव-ए-तमाशा-ए-शिकस्त-ए-दिल है,
आईन खाने मे कोई लिए जाता है मुझे

जिस तरह मेरा मुद्दआ मेरे दिल के टुकडो को देखने में मग्न है, उस से मुझे ऐसा लगता है जैसे कोई मुझे ऐसी जगह लिए जाता है जहा चारो तरफ शीशे ही शीशे लगे हुए हैं, जिन में मै हर तरफ से अपने आप को देख सकता हू. गालिब को यह उम्मीद हरगिज नहीं थी, कि वही दोस्त उन का दिल तोड़, के रख देगा जिस पर उन्हे इतना नाज था, अब वह नाज टूट गया तो हैरानी का यह आलम जैसे दिल का हर टुकड़ा एक शीशा है और वह मस्ती का टूटा हुआ नाज उस में अपने आप को देख रहा है कि क्या इसी दोस्त पर मुझे इतना नाज था.

जिंदगी मे तो वह महफिल से उठा देते थे,
देखू, अब मर गए पर, कौन उठाता है मुझे

जब तक मै जिंदा था वह मुझे महफिल से उठा देते थे. अब मर गया हूं तो देखता हू मुझे कौन उठाता है? दूसरा मतलब यह कि अब देखना यह है कि मरने के बाद मुझे पराए लोग उठा कर मरघट तक

---

१ मकसद, तमन्ना

ले जाते हैं या वह भी मेरे जनाजे को कंधा देंगे.

> भूके नहीं हैं सैर-ए-गुलिस्तां के हम, वले,
> क्योंकर न खाइए, कि हवा है बहार की

हम गुलिस्तां की सैर के भूखे नहीं हैं, लेकिन अब मौसमे बहार है, फिर हम क्यों न बाग की हवा खाएं. मतलब यह कि जब दुनिया अपने हुस्न को देखने के लिए नजरों को दावत देती ही है फिर क्यों न उस के हुस्न से नजरें भरी जाएं.

> हजारों ख्वाहिशें ऐसी, कि हर ख्वाहिश पे दम निकले,
> बहुत निकले मेरे अरमान, लेकिन फिर भी कम निकले

जिंदगी में हजारों ख्वाहिशें ऐसी हैं कि हर ख्वाहिश पे दम निकलता है. और मैं ने अभी तक जीते जी हजारों ख्वाहिशें पूरी की हैं मेरे हजारों अरमान पूरे हुए हैं. लेकिन अब भी ऐसा लगता है गोया अभी जी नहीं भरा.

> निकलना खुल्द[1] से आदम का सुनते आए थे, लेकिन,
> बहुत बे आबरू हो कर तिरे कूचे से हम निकले

खुदा ने आदम को जन्नत से गेहूं खाने के जुर्म में निकाल दिया था. गालिब कहते हैं कि हम जन्नत से आदम को निकाले जाने की बात सुनते आए थे लेकिन वह भी वहां से इतना बे आबरू हो कर क्या निकले होंगे जिस कदर अपमानित हो कर हम तेरी गली से निकाले गए हैं. इस शेर में महबूब की गली को जन्नत भी कहा गया है और जन्नत से आदम के निकाले जाने की बात भी ऐसे अंदाज में दुहरा दी गई है जिस से यह पता चले कि हजरते इन्सान को वहां से खास बेआबरू

---

१ जन्नत

हो कर नहीं निकाला गया.

भरम खुल जाए, ज़ालिम, तेरे कामत[1] की दराज़ी[2] का,
अगर इस तुर्र-ए-पुर पेच-ओ-ख़म[3] का पेच-ओ-ख़म निकले.

ऐ जालिम, अगर तेरी घुघराली बल खाती हुई जुल्फों के सब बल खुल जाएं तो तेरे इस कद की लंबाई का सारा भरम खुल जाए जिस ने इतनी कयामत मचा रखी है.

मगर लिखवाए कोई उस को ख़त, तो हम से लिखवाए,
हुई सुब्ह, और घर से कान पर रख कर कलम निकले.

किसी को खत लिखवाना हो तो हम से लिखवाए. मतलब यह कि हमें मालूम तो हो जाए कि उन पे कौन कौन मरता है कि वह हम पर मेहरबान ही नहीं होने में आता. दूसरे यह कि जब हम उसे खत लिखेंगे तो बीच में कहीं न कहीं अपना हाल भी लिख दिया करेंगे.

हुई जिन से तवक्को'अ, ख़स्तगी की दाद पाने की,
वह हम से भी ज़ियाद ख़स्त-ए-तेग-ए-सितम निकले.

हमें जिन लोगो से यह उम्मीद थी कि वह हमारा हाल देख कर हमारे साथ हमदर्दी जताएगे, जब हम उन के पास पहुचे तो देखा कि वह हम से भी जियादा दुखी थे

मुहब्बत मे नही है फर्क जीने और मरने का,
उसी को देख कर जीते हैं, जिस काफिर पे दम निकले

जिस महबूब को देख कर जी रहे हैं उसी को देख कर दम निकलता है यानी उस की एक एक अदा पे जान जाती है उसी पर मर रहे हैं इसलिए मुहब्बत में जीने और मरने का फर्क ही मिट गया है.

---

१ कद २ लवाई ३ घुघराली ज़ुल्फें

कहा मैखाने का दरवाज़, 'गालिब', और कहा वा'अिज़,
पर इतना जानते हैं, कल वह जाता था, कि हम निकले

गालिब शराबखाने से शराब पी के जो निकले तो दरवाजे पर मुल्ला जी से टकराए. मुल्लाजी भी लपक कर अदर चले गए और गालिब ने भी अपनी राह ली. लेकिन दिल से शक मिटा नहीं, यही सोचते रहे कि हो न हो, यह तो मुल्ला जी थे. जभी शेर में व्यग्य है. कह रहे हैं कि ऐ गालिब, यह तू क्या सोच रहा है, कहा शराबखाना और कहा वह परहेज करने वाले और खुदा को पूजने वाले मुल्ला साहिब. लेकिन इतना जरूर है कि कल वह अदर जा रहा था कि हम वहा से निकल रहे थे और टकरा गए.

जोश-ए-जुनू से कुछ नजर आता नही, 'असद',
सहरा हमारी आख मे यक मुश्त-ए-खाक है

ऐ असद, हमें अपने पागलपन के जोश में कुछ भी नजर नहीं आ रहा है. हम एक तूफान की तरह बढ़ते चले जा रहे हैं कि सहरा भी हमारी नजर में एक मुट्ठी भर खाक है.

हू मैं भी तमाशाइ-ए-नैरग-ए-तमन्ना,
मतलब नही कुछ इस से, कि मतलब ही बर आवे

मेरी तमन्ना मुझे अपने सौ सौ रंग दिखा रही है और मैं हैरत से उस के वह तमाशे देख रहा हू मुझे इस से कोई मतलब नहीं है कि मेरा मतलब ही पूरा हो. मुझे अपना मतलब पूरा करने की कोई गरज नहीं है. यही बहुत है कि मैं अपनी तमन्ना के हर पहलू को देख रहा हूं और जान रहा हू.

सियाही जैसे गिर जावे दम-ए-तहरीर कागज पर,
मिरी किस्मत मे यू तसवीर है शबहा-ए-हिज्रा की

मेरे मुकद्दर में जुदाई की रातें इस तरह है जैसे लिखते लिखते कागज पर सियाही गिर जाए. इसी तरह उन जुदाई की रातो के सियाह धब्बो से मेरी सारी जिंदगी खराब हो गई है.

दिल-ओ-दी नक्द ला, साकी से गर सौदा किया चाहे,
कि इस बाजार मे, सागर मता'-ए-दस्त गरदा[1] है

अगर तू कोई साकी से कुछ सौदा करना ही चाहता है कि वह तुझ शराब पिलाए तो फिर वह सौदा करने के लिए अपने दिल और अपने दीन को नक्द पेश कर. क्योकि यह बाजार वह है जहा का प्याला ही वह एक ऐसी दौलत है जो हाथो हाथ निकल जाती है. मतलब यह कि अगर तू ने जरा सी भी देर की तो मुमकिन है कि कोई और ले उड़े और तू हाथ मलता रह जाए.

फिशार-ए-[2]तंगि-ए-ख़ल्वत[3] से बनती है शबनम,
सबा जो गुंचे के परदे मे जा निकलती है

हवा जब गुंचे के परदे में जा समाती है तो गुंचा उसे अपनी छोटी सी जगह में अकेला पा कर भींच लेता है. यहीं से वह हवा शबनम बन जाती है.

पच[4], आ पडी है वा'द-ए-दिलदार की मुझे,
वह आए या न आए पे[5] या इंतज़ार है

मुझे भी अब जिद हो गई है कि उस का वादा आजमाऊंगा इस लिए अब वह आए या न आए, मुझे उस का इनजार है. उस को अगर आता नहीं था तो उस ने वादा क्यो किया था? बस, अब मैं भी अपनी

---

१ वह दौलत जो हाथो हाथ निकल जाए २ भीच लेना.
३ तनहाई ४ जिद ५ लेकिन

जिव पर अड़ गया हूं और उस के आने न आने से बेपरवा हो कर उस का इंतजार कर रहा हू

> बेपर्द सू-ए-वादि-ए-मजनू गुज़र न कर,
> हर ज़र्रे के निकाव मे दिल वेकरार है

ऐ मेरे महबूब, तू बेपरदा हो कर मजनू की वादी से न गुजर-देख कि हर जर्रा चमक रहा है, और यह चमक जर्रे के दिल की तडप है जो उस के दिल में मौजूद है. मजनू की खाक इस सहरा के कण-कण में वसी हुई है, इसलिए हर कण तेरे लिए बेकरार है. तू परदा कर ले ताकि कहीं ऐसा न हो कि सहरा का हर कण तेरे दामन से लिपट जाए.

> गफलत कफील-ए-'उम्र-ओ-'असद' ज़ामिन-ए-निशात,
> ऐ मर्ग-ए-नागहा, तुझे क्या इतज़ार है

गफलत ने सारी उम्र हमें कुछ देखने सोचने न दिया और हम (यानी असद खुशियो के रखवाले वने वैठे है जैसे यह खुशिया कभी समाप्त ही न होगी) ऐ अचानक आने वाली मौत, अव तुझे क्या इंतजार है. तू क्यो नहीं आती. देखती नहीं कि हम ने अपनी उम्र गफलत में गंवा दी है. अव तो आ और हमें अपनी गफलत से भी बिल्कुल वेखवर कर दे. अगर हम समल नहीं सके, तो कम से कम तू हमें गाफिल तो न रहने दे.

> आईन. क्यो न दू, कि तमाशा कहे जिसे,
> ऐसा कहा से लाऊ, कि तुझ सा कहे जिसे

महबूब ने आशिक से पूछा कि इस दुनिया में मुझ जैसा कोई है? आशिक ने शीशा उठा कर उस के सामने रख दिया और कहा कि मैं ऐसा कहा से लाऊ जिसे तुझ जैसा कहू हा, यह शीशा देख और इस

दुनियां में अपना अक्स देख कर हैरान हो कि तेरे सामने भी कोई है तू जब आईने में अपना हुस्न देखेगा तो हैरान हो जाएगा और मैं तेरे हुस्न से नजरें भर लूगा.

फूका है किस ने गोश-ए-मुहब्बत मे, ऐ खुदा,
अफ्सून-ए-इतजार, तमन्ना कहे जिसे

ऐ खुदा, मुहब्बत के कान में यह आवाज किस ने फूक दी है कि इस पर एक जादू सा हो गया है और यह सोचे समझे बगैर कि उस के मिलने की तमन्ना कभी पूरी नहीं हुई होगी, बैठी उस का इतजार कर रही होगी. 'मुहब्बत' से मतलब खुद शायर की अपनी जात से है.

सर पर हुजूम-ए-दर्द-ए-गरीबी से, डालिए,
वह एक मुश्त-ए-खाक कि सहरा कहे जिसे.

गरीबी ने इतना खराब कर रखा है कि जी में आता है कि सारी दुनिया की मिट्टी अपनी एक ही मुट्ठी में भर कर अपने सर पर डाल लें, ताकि लोगो को हमारे सर पर जो खाक डालनी है कम से कम उस जिल्लत से बच जाए.

'गालिब', बुरा न मान, जो वा'अिज़ बुरा कहे,
ऐसा भी कोई है, कि सब अच्छा कहे जिसे

ऐ गालिब, अगर उपदेशक तुझे बुरा कहते है तो तू इन के कहे का बुरा न मान. आखिर दुनिया में ऐसा कौन इनसान है जिसे सब अच्छा कहते है

शो'ले से न होती, हवस-ए-शो'ल ने जो की,
जी किस क़दर अफ्सुर्दगि-ए-दिल पे जला है

अगर मैं इश्क की आग में जल मरता तो मुझे कोई गम न होता.

लेकिन मैं तो इश्क की तमन्ना की आग म जल बुझा. अब अपने इस बुझे हुए दिल को देख कर मेरा जी जलता है.

ऐ परतव-ए-खुरशीद-ए-जहा ताव, इधर भी,
साए की तरह हम पे 'अजब वक्त पडा है

पर तो कहते हैं प्रतिबिंब को, खुरशीदे जहां ताब उस सूरज को जो सारी दुनियां को प्रकाशित करता है, ऐ सारी दुनियां को प्रकाशित करने वाली सूरज की रोशनी, हमारी तरफ भी अपनी एक किरण भेज दे. साए की तरह हम पर यह अजब वक्त पडा है. हम जब किसी से बहुत तंग आ जाते हैं तो यही कहते हैं कि क्या साए की तरह मेरा पीछा किए जा रहे हो. दूसरी बात यह है कि साया कभी इनसान से जुदा नहीं होता. गालिब ने वक्त को साया कह कर कोसा है कि मुझ पे अजब वक्त आ पडा है जो साए की तरह मेरे साथ चिपटा हुआ है, ऐ दुनियां को रोशनी देने वाले, इस साए से मेरी जान छुड़ा दे.

नाकरद गुनाहो की भी हसरत की मिले दाद,
यारब, अगर इन करद गुनाहो की सज़ा है.

प्रलय के दिन सब लोगों को खुदा के सामने पेश किया गया है. और उन्हें उन के गुनाहों की सजा मिल रही है. जब गालिब की बारी आई तो क्या निडर हो कर खुदा से कह रहे हैं कि यारब, अगर मुझे उन गुनाहों की सजा मिल रही है जो पाप मैं ने इस दुनिया में किए हैं तो सजा देने से पहले वह गुनाह जो मैं नहीं कर सका, और जिन्हें करने की मेरे दिल में हसरत रह गई है पहले मुझे उन की दाद दे दे. अगर मुझे और जिंदगी मिल जाती तो फिर मैं वह गुनाह करने की हरसत ले कर न मरता, बल्कि वह गुनाह भी कर गुजरता तू मुझे मेरे किए गए गुनाहों की जरूर सजा दे लेकिन

वह गुनाह जो मैं नहीं कर सका और जिन्हें करने की मेरे दिल में हसरत रह गई, उन की भी दाद दे.

वेगानगि-ए-खल्क से वेदिल न हो 'गालिब',
कोई नही तेरा, तो मेरी जान खुदा हैं

ऐ गालिव, तू दुनिया की बेगानगी से बेदिल न हो. अगर तेरा कोई नहीं तो खुदा तो है.

मजूर थी यह शक्ल, तजल्ली[१] को नूर की,
किस्मत खुली तेरे कद-ओ-रुख[२] से जुहूर[३] की

जलवो के नूर को यही शक्ल मजूर थी जो तेरी है. इसलिए जब तेरा कद और चेहरा उन्हें नजर आया तो उन की किस्मत खुल गई और यह तेरे कद और तेरे चेहरे से जाहिर हो गया, यानी तेरा कद तो जलवा बन गया है और तेरा चेहरा नूर.

वा'अिज़[४] न तुम पियो, न किसी को पिला सको,
क्या वात है तुम्हारी शराव-ए-तुहूर[५] की

उपदेशक हर वक्त दूसरो को यह कहते रहते है कि इस दुनियां में अगर तुम शराब न पियोगे तो वहा तुम्हें जन्नत मिलेगी और जन्नत की शराब मिलेगी. गालिब व्यंग्य से यह कह रहे हैं कि ऐ वाइज, तुम्हारी उस शराब के क्या कहने? जिसे न तुम खुद पी सको न किसी और को पिला सको. हमें यही अगूर की शराब अच्छी है, जिसे हम हासिल भी कर सकते हैं और पी भी सकते हैं दूसरा मतलब यह कि इस दुनिया को कौन जाने, जब वहां जाएगे तो देखा जाएगा.

---

१ जलवा. २ कद और चेहरा ३ जाहिर होना ४ उपदेशक.
५ जन्नत की शराव

गो वा नही, प वा के निकाले हुए तो है,
का'वे से इन वुतो की भी निस्वत है दूर की

कावे से पत्थरो के बुत निकाल दिए गए थे जभी इस्लाम धर्म का आरंभ हुआ था. गालिब कहते है कि यह बुत अगर अव वहा नहीं हैं तो क्या हुआ, वहा के निकाले हुए तो हैं; यानी कभी किसी जमाने में तो वहा हुआ ही करते थे. इस नाते कावे की भी इन बुतो से दूर की निस्वत है. फिर क्यो न हम उन्हें पूजें. यहा शब्द 'बुतों' इस खूवी से लाया गया है कि इस से मतलब हसीनों का भी निकलता है और पत्थर की मूर्तियो का भी.

क्या फर्ज़ है, कि सव क़ो मिले एक सा जवाव,
आओ न, हम भी सैर करें कोह-ए-तूर की.

हजरत-ए- मूसा ने जब तूर के पहाड पर चढ कर खुदा से दुआ की थी कि अब तू मुझे नजर आ, तो उन्हें जवाव मिला था कि तू मुझे नहीं देख सकता गालिब ने इस वात में वह वात पैदा कर दी है कि वह मूसा से भी वाजी ले जाना चाहते हैं. फरमाते हैं कि भई, कोई जरूरी तो नहीं है कि खुदा सव को एक सा ही जवाव दे. अगर मूसा को यह जवाव मिला था कि तू मुझे नहीं देख सकता तो कोई वडी वात नहीं कि हमें जवाव मिले, "लो भाई तुम मुझे देख लो" तो फिर हम तूर के पहाड की सैर क्यो न करें. दूसरे मिसरे में 'आओ भी' में जो दावत है, उस का मतलव यह भी निकलता है कि आओ हम भी वहां चलें जियादा से जियादा खुदा नजर में नहीं आएगा और क्या हो जाएगा

गर्मी सही कलाम मे, लेकिन न इस क़दर,
की जिस ने वात, उस ने शिकायत जरूर की

माना कि हम जरा तेज मिजाज हैं, लेकिन यह भी क्या हुआ कि जिस से भी हम ने बात की उस ने यह शिकायत जरूर की कि भई बहुत ही गरम मिजाज हो. जरा नरमी से बात कर लिया करो. गालिब महबूब से यह कह रहे हैं कि माना आप बहुत तेज मिजाज हैं, लेकिन वह भी क्या बात हुई कि आप जिस से बात करते हैं, वही शिकायत करता हुआ नजर आता है कि आप ने उसे बुरा भला कह दिया है. कभी किसी से प्यार मुहब्बत से भी बोल लिया कीजिए.

'गालिव', गर इस सफर मे मुझे साथ ले चलें,
हज का सवाब नज़्र करूगा हुजूर की

हुजूर से यहां मतलब है मुगल बादशाह जफर. इस शेर में सब से बड़ी बात यह है कि गालिब एक बार बात घुमा कर हज पर चोट कर गए हैं. कहते है कि अगर जहांपनाह मुझे अपने साथ हज के सफर पर ले चलें तो हज करने का जितना सवाब मुझे मिलेगा वह मैं सब बादशाह को तोहफे में दे दूगा. एक तरफ तो बादशाह को कितना सुदर उपहार देने की बात कर गए और उधर यह मतलब निकाल गए कि मुझे हज के सवाब का क्या करना है ऐसा सवाब अब मेरे किस काम का

कहते हुए साकी से हया, आती है, वर्ना,
है यू, कि मुझे दुर्द-ए-तह-ए-जाम वहुत है

मुझे यह बात साकी से कहते हुए शर्म आती है, वरना, सच बात तो यह है कि मुझे शराब अगर साकी नहीं देता तो न दे मुझे तो तलछट ही बहुत है

ने तीर कमा मे है, न सय्याद कमी मे,
गोशे मे कफस के, मुझे आराम वहुत है

उस की मुहब्बत का जो शौक हमारे दिल में है, वह आज फिर अक्ल, दिल और जान की दौलत को बेचने पर तुल गया है. यानी फिर शौक सर में समा गया है कि अक्ल व दिल और जान सब कुछ ले कर अगर वह हमें मिल जाए तो हमें यह सौदा महंगा नहीं.

फिर चाहता हू नाम-ए-दिलदार खोलना,
जा नज़्र-ए-दिल फरेबि-ए-'अुन्वा किए हुए.

मै फिर चाहता हू कि उस का खत मिले और मै अपनी जान को उस के हाथ लिखे हुए खत पर कुरबान कर दू और खत खोल दू.

मागे है फिर, किसी को लब-ए-बाम पर हवस,
जुल्फ-ए-सियाह, रुख पे परीशा किए हुए

फिर दिल में तमन्ना है कि मेरा महबूब उसी तरह अपनी सियाह जुल्फो को अपने चेहरे पर बिखेर कर अपने मकान की छत पर आ खड़ा हो और मै उसे देखता रहू.

चाहे है फिर किसी को मुकाबिल मे आरज़ू,
सुरमे से तेज़ दश्न-ए-मिज़गा किए हुए

फिर ख्वाहिश है कि कोई मेरे सामने अपनी पलको के खजर को सुरमे से तेज कर के आ बैठे. मुझे नजर भर कर देखे और मेरे दिल और जिगर के टुकडेटुकड़े कर दे.

फिर, जी मे है कि दर पे किसी के पडे रहे,
सर ज़ेर-ए-बार-ए-मिन्नत-ए-दरबा किए हुए

फिर हमारे जी में समाई है कि उस के दरवाजे के चौकीदार के सामने अपना सिर झुकाए वहीं पडे रहे.

जो ढूढता है फिर वही फुरसत, कि रात दिन,
बैठे रहे तसव्वुर-ए-जाना किए हुए.

जिंदगी की परेशानियो से उकता कर हमारा जी फिर वही फुरसत के रात दिन ढूढता है कि जिस तरह हम पहले बडी बेफिकरी से अपने महबूब के खयाल में मगन बैठे रहते थे, अब भी एक बार फिर उसी तरह उस के खायल में गुम हो जाए और हमें दुनियां के इन दुखो से कोई मतलब न हो.

'ग़ालिब', हमे न छेड कि फिर जोश-ए-अश्क से,
बैठे हैं हम तहय्य-[1]ए-तूफा किए हुए

गालिब हमें न छेड़ो क्योकि आज फिर हमारी आखो में आंसुओं का सैलाब भरा हुआ है और हम एक तूफान उठा देने का इरादा किए हुए हैं.

नवेद-ए-अम्न है बेदाद-ए-दोस्त, जा के लिए,
रही न तर्ज़-ए-सितम कोई आस्मा के लिए.

मेरी, जान, हमारे दोस्त ने वह जुलम तोडे है कि अब वही हमारे लिए सुख का संदेश बन गए है, क्योकि हमारे दोस्त ने ऐसे ऐसे जुल्म हम पर ढाए कि अब आकाश के पास कोई ऐसी नई बात ही नहीं रह गई जिस से वह हमारी जान पे बन आए.

बला से गर मिज़-ए-यार तश्न-ए-ख़ू है,
रखू कुछ अपनी भी मिज़गान-ए-ख़ू फिशा के लिए.

अगर मेरे यार की पलकें खून की प्यासी है तो मेरी बला से. मैं करीबकरीब अपना सारा लहू तो उन्हें दे ही चुका हूं. आखिर मुझे

---

१ इरादा

भी तो रोने के लिए खून की जरूरत है. इसलिए अब मेरे दिल में जितना खून बचा है वह मैं अपनी आखो के लिए बचा के रखूगा.

वह ज़िंद हम हैं, कि हैं रूशनास-ए-ख़ल्क, ऐ ख़िज्र,
न तुम, कि चोर बने 'अ़ुम्र-ए-जाविदां के लिए

ऐ खिज्र, हमीं वह जिंदा लोग है जो इस दुनिया के वासियो से परिचित हैं. तुम्हें कौन जिंदा कहेगा जो हमेशा के लिए जिंदा रह कर भी चोर बने फिरते हो कि किसी के सामने आते ही नहीं जब तुम किसी के सामने नहीं आते तो फिर तुम्हें दुनिया की क्या खबर?

रहा बला मे भी मैं मुब्तिला-ए-आफत-ए-रश्क,
बलाए जा है अदा तेरी इक जहा के लिए

मुझ पे तेरी अदा ने जो सितम ढाए, मैं उन्हें तो शायद बरदाश्त कर लेता लेकिन मैं तो इस ईर्ष्या में मारा गया कि तेरी अदा ने तो सारी दुनियां को मुसीबत में डाल रखा है. और न जाने कौन तेरे लिए तड़पता रहा है. और यह बात मुझे कैसे मजूर हो सकती थी कि तेरा चाहने वाला मेरे अलावा कोई और भी हो.

फलक न दूर रख उस से मुझे, कि मैं ही नहीं,
दराज दस्ति-ए-कातिल के इम्तिहा के लिए

मिर्जा गालिब का महबूब मिर्जा पर जुल्म करता है लेकिन दूर ही रह कर. गालिब आसमान से फरियाद कर रहे हैं कि मुझे उस के करीब कर दे ताकि उसे मुझ पे जो वार करना है, उस में उसे आसानी रहे. आखिर उस से दूर रह कर उस के जुल्म सहने के लिए और भी तो लोग हैं. मुझी को क्यों उस से दूर रखा